CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12·2

जेहल कऽ सनदि

(भोजपुरी कहानी-संग्रह)

कहानीकार

दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

(पूर्वाश्रम : अवधविहारी 'सुमन')

सम्पादक

प्रमोद कुमार 'दीक्षित'

एम.ए.द्वय (समाजशास्त्र-हिन्दी), बी.एड.
व्यवस्थापक : भोजपुरी साहित्य-मंदिर
बी० ३/१७५ शिवालाघाट, वाराणसी २२१००१
दूरभाष : (०५४२) ३१५०१९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेहल कऽ सनदि

श्री अवधविहारी 'सुमन' की भोजपुरी कहानियों का संग्रह 'जेहल कऽ सनदि' देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। भाषा और भाव दोनों ही दृष्टियों से यह मनोहर है।

इन कहानियों में अपने जनपद की आत्मा भली-भाँति अभिव्यक्त हुई है। आज का पाठक अपने साहित्यकारों से आसमान नहीं, धरती की वस्तु माँग रहा है। कल्पना और वक्रोक्ति उसे अप्रिय हो ऐसी बात नहीं, परन्तु यथार्थ के लिए उसका आग्रह दिनोदिन बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में 'सुमन' के भोजपुरी गल्पों का यह संकलन निःसन्देह आपको रुचिकर प्रतीत होगा। भोजपुरी जनता की ठसक, रोबदाब, राग-द्वेष आदि को यह पहली बार अपनी वाणी का उचित परिधान मिला है।

आशा है हमारा भोजपुरी साहित्यकार अपनी जनता को दिनानुदिन नई वस्तुएँ देगा।

डॉ० उदयनारायण तिवारी
एम. ए. (डि. लिट) प्रयाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेहल कऽ सनदि

(भोजपुरी कहानी-संग्रह)

कहानीकार

दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

(पूर्वाश्रम : अवधविहारी 'सुमन')

सम्पादक

प्रमोद कुमार 'दीक्षित'

एम. ए. द्वय (समाजशास्त्र-हिन्दी), बी. एड.

व्यवस्थापक : भोजपुरी साहित्य-मंदिर

बी० ३/१७५ शिवालाघाट, वाराणसी २२१००१

दूरभाष : (०५४२) ३१५०१९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

❑ जेहल कऽ सनदि (भोजपुरी कहानी-संग्रह)
दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

❑ प्रकासक
प्रमोद कुमार 'दीक्षित'
निदेसक,
भोजपुरी साहित्य-मंदिर
बी ३/१७५ शिवालाघाट
वाराणसी– २२१००१

© सब अधिकार प्रकासक का आधीन

❑ मूल्य
पचास रुपया

❑ संस्करण
पहिला बेरि जेठ सुदी २००५
दूसरा बेरि सावन सुदी पुरनवासी २०५५

❑ मिले क पता
बी ३/१७५ राजगुरुमठ
शिवालाघाट, वाराणसी – २२१००१
दूरभाष : (०५४२) ३१५०१९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखक के साथ भोजपुरी साहित्य मंदिर के
अधिष्ठाता प्रकाशक प्रमोद कुमार दीक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकासक कऽ कथ

भासा भीतर का भावन कऽ सुघर मूरति हऽ। ई मानुस हिरदय का सहज मनोरथ, मांग-चाह-इच्छा के परगट करे आ बतावे ले। इहे मानुस के मानुस से सहज सुभाविक नेह नाता में जोरि-बान्हि के सुघर समाज बनावे ले। मानुस सिरजनहार परानी हऽ, ऊ बे समाज कऽ कहवाँ, कइसे रही? एही से सहज सुभावन अपना रुचि का अनुसार समाज गढ़ि के सुख-चैन से धरती पर रहल चाहेला।

सभ देसन में, मानुस का समाज में, हर जातीय-दलन कऽ किसिम-किसिम कऽ अलगा रहन-सहन आ अलगा आचार-विचार रहल बा। एकरा करते फरका-फरका बोली, भासा आ रीति-रेवाज बा।

भोजपुरी, भोजपुरिया बीरन कऽ तेज-जोतिमय भासा बानी हऽ, जे ठेंगा-गोंजी, तीर-धनुस आ तलवारन का बीच ठनकलि-गरजलि बा। भोजपुरिये भाइन का त्याग-लगन, सेवा-पुरुसारथ आ सुभ आचार-विचार से भारत देस कऽ हर युग में मोका-मोका पर माँथा ऊँच रहल बा। जब-जब देस पर संकट आइल, एहिजा कऽ बीर सपूत माँथ देइ मरजादा कऽ रइछा कइलन, शान-सीवँ कऽ झंडा कबे झुके ना दिहलन।

'जेहल कऽसनदि' भोजपुरी जनपद क भावन कऽ प्रतिनिधि कथा-संग्रह हऽ, ई भोजपुरी गद्य कऽ पहिली पोथी हऽ। टकसाली भोजपुरी भासा कऽ ई कहानी संग्रह १९४८ ई० में पहिले पहिल प्रकास में आइलि। लेखक का एकरा खातिर भारी संकट आ मानापमान कऽ सामना करे के परल। बहुत दिन का बाद समाज में एके आदरमान मिलल आ भोजपुरी-अकादमी का प्रयास से तामापत्तर आ इनाम वोगयरह भी मिलल।

बीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, बिहार विश्वविद्यालय आ अउरी सिच्छामंदिरन में एह कथा के ऊँच पीढ़ा मिलल। बाकी मूल पोथी का अभाव में पढ़े-लिखे का काम में कठिनाई होति बा। डॉ० उदयनारायण तिवारी जी कऽ लेखक से बराबर सुझाव रहल कि एकर दूसर सोधल-सँवारल नया रूप सामने आवे के चाही। डॉ० विवेकी राय कऽ भी ईहे सुझाव समय-समय पर मिलल।

ईहे कुल सोचि-समझि के रुपया-पइसा का घोर संकट आ मंहगी का समय में जनता कऽ हित समुझि, एके राजगुरु मठ का भोजपुरी साहित्य-मंदिर से प्रकासित कइल जाता। एह कथा-कहानी पर नामी भोजपुरी विदमानन का सूझ-बूझ के, अंत में 'बूझ-विचार' खंड में दिहल जाता। भोजपुरी भासा के प्रेमी-पढ़वइया से आसा बा कि एकर आदरमान करिहन आ हमरा कमी आ लाचारी का अवगुन-दोस के माफ करिहन।

एह किताबि के प्रकासन में भाई प्रकाश उदय जी के सुझावन से बहुत मदद मिललि।

राउर

प्रमोद कुमार 'दीक्षित'

प्रबंधक, भोजपुरी साहित्य-मंदिर

राजगुरु मठ

शिवाला घाट, वाराणसी २२१००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध बिदमान आ कवि साथी
नागारजुन जी का कमल रुपी हाथ में
भोजपुरी भासा का फुलवारी क पहिला फूल।

—सुमन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूइ शबद

श्री अवधविहारी 'सुमन' का भोजपुरी कहनिन क संग्रह 'जेहल कऽ सनदि' देखि के मन बड़ा खुस भइल। भासा अउर भाव दूनो एक से एक बढ़ि के बा। कहनिन में भोजपुरी के आतमा खिलि उठलि बा। आजु कहनी पढ़े वाला लोग आकास-पाताल क बाति सुनल नइखँन चाहत, बलके ऊ धरती का बतुस के आँखि से देखल चाहत बाड़न। एह दृष्टि से सुमन जी क इ कहनी पढ़ेवाला लोगन का नीक आ रुचिगर लागी। ई पहिली कहनी बाड़ी स जवना में भोजपुरी जनता क दुख-सुख, हँसी-खेलि अंकित भइल बा। हम आशा करत बानी जे आगे चलि के सुमन जी का सबल लेखनी क सहारा पाइ के भोजपुरी साहित्य भी बलवान होई।

उदयनारायण तिवारी
एम. ए. (डि. लिट्.)
परयाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी-क्रम

1.	मलिकार	11
2.	आतमघात	18
3.	मँवनी बाबा	27
4.	कतवारू दादा	35
5.	किसान-भगवान	47
6.	चउर कऽ पूजा	67
7.	सनकी	75
8.	दफा ३०२	82
9.	जेहल कऽ सनदि	87
10.	कबि कयलास	93
	छान-बीन आ बूझ-बिचार	99

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तनिक अरज

एंह किताबि क भासा देखि के केतने आदमिन का अचरज होई, बाकी हमरा उमेदि बा कि ऊ लोग खीसि ना करी। ठंडा मन से सोचला पर एह लोग का पता चली कि एह भासा में पोथी लिखल कवनो बेजाँइ नँइखे। एकरा मीठापन आ मोलायमी का आगा सबकरा आपन माथ नवावे के परी। महतारी क दूध पीये का साथे हमन का जवन भासा सिखली जा आजुवो ओकरा में उहे सवाद बा। एकरा के छोड़ि के बनावटी सबद आ भासा सीखे कऽ कोसिस कइल अपना समय के बिगारल बा।

आज जनता कऽ जुग आइ रहल बा। देसी सरकार का करोड़ों—करोड़ लोगन के पढ़ाइ—लिखा के आदिमी बनावे के बा। एह पढ़े वालन में देस—गांवन में रहेवाला बूढ़—जवान आ अधबुढ़ मरद आ मेहरारू दूनो बाड़न। एह जमाति के पढ़ावे क सबसे सहज उपाइ रोज क बोलचाल वाली भासा बा। हर इलाका का आदमिन के ओइजा का भासा में नीमन से नीमन, अकिलि आ सीफति भरलि पोथी पढ़े के दिहल जाय। इहे असली कारन बा कि हमरा एह भासा में कलमि उठावे के परल हऽ।

बहुत लोग उजुर करिहन कि एह भासा में बढ़िया पोथी ना लिखाइ सके, बाकी ओह लोग क समुझ गलती बा। गुजराती, गुजरात में रहेवाला लोग क भासा ठहरलि ओकरा में नीमन से नीमन पोथी लिखलि बा। मराठी मरहठा लोग क दुलरूवी भासा ठहरलि ओकरा में एक से एक नीमन किताबि लिखाति बा। बंगला, बुनेलखंडी, मयथिली, इहो कुछ ओही दरजा में बाड़ी स।

भोजपुरी के बाति सोचला पर त करेजा अउरी पोढ़ होइ जात बा। भोजपुरी भासा मयदान में सबकरा ले आगा बढ़लि बा। बिलायती अंगरेज बिदमान गिरियरसन साहेब तक एकर बड़ाई कइले बाड़न। भोजपुरी भासा क दूसर नांव मल्ली भासा ठहरल। मल्ली, मल्ल से बनल बा, एकर मतलब कि पहलवानन क भासा। बातियो ठीके बा। भोजपुरी बहादुर अदिमिन क बोली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठहरलि। इहे बाति गिरियरसन कहलहूँ बाड़न — *Bhojpuri is a language of energetic race ...*

कहे क मतलब कि एकरा में नीमन से नीमन पोथी तइयार हो सके ले। देस का हर इलाका में रहेवाला लोग क आपन रीति –रेवाज आ रहन–सहन बा। अगर हर जाति का बोली में हजारों बरिस ले चलि आवे वाला कविता, कहानी, खीसा आ कहाउति के बटोरि के धियान से पढ़ल जाय त केतना अनमोल बाति मालुम होइँहन स। बिरहा, लोरकी कुँवर विजयमल आ नयकवा के भोजपुर का सोनहुला जमाना क सबूत समझल जा सकेला।

भोजपुरी भासा , आरे, छपरा, बलिया, गाजीपुर, आधा मिरजापुर, गोरखपुर, चंपारन एतना इलाका में फइललि बा। देस में कवनो सरकार होखे करोड़ों जनता का भासा के दबाइ के ना राखल जा सके।

भोजपुर क इलाका हिन्दुस्तान का इतिहास में अपना गुन, विद्या आ बहादुरी खातिर सभकरा ले आगा समझल जाला। बगसर भोजपुर क मसहूर सहरि ह। पुराना जमाना में ई विद्या क अखाड़ा रहल ह, एही से एकरा के वेदगरभापुरी कहल जात रहल ह। बलिया में भिरगू आ दरदर मुनी रहत रहलन। एकरा अलावे राजा भोज क राजधानी आ बिदमान लोग क दरबार एइजे रहल। इतिहास का पोथिन में लिखल बा कि मालवा से भागि के परमार राजपूत लोग एइजे बसल। आल्हा आ ऊदल नियर शेर जवानन क जनम एही भोजपुर में भइल। भाई लोग शेरशाह के ना भुलाइल होइहँन। शेरशाह एइजे सहसराँव इलाका क मामूली सिपाही रहलन। अपना बहादुरी आ अकिलि का सीफति से हिन्दुस्तान क बादसाह बनि के दिल्ली का गद्‌दी पर बइठलन। हो सके ला कि शेरशाह क नांव ढेर आदमिन का भुलाइ गइल होखे, बाकी बाबू कुँवर सिंह क नांव त सभका जबानि पर होई। ऊहो एही भोजपुर क सरदार रहलन, कहे क मतलब कि एह भोजपुरी खानि से केतने अनमोल हीरा निकललन आ अबे ना जाने केतना निकलिहन। एह से कुछ बकुला नियर साफ बाबू लोग क खियाल कइके करोड़ों लोग क दुलरूवी भासा के ना छोड़ल जा सके।

भोजपुरी भासा में बड़–बड़ विदमान क कलमि चललि बा। कबीरदास, दरियादास नियर महातमा क भजन, गदर का जमाना में जम्मुल आ सुलेमान नियर अगिया बयताल कबिन क गीत, कवन चीज नँइखे। भारतेन्दु हरिश्चंद्र आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाबीर प्रसाद नियर लोग बहुत बेर भोजपुरी में कलमि चलवले बाड़न।

इहे कुल बाति सोचि के हमहूँ एह भासा में कलमि चलावे सुरू कइलीं। एकरा कहे ले पहिले हम एक बाति अउरी कहि दिहल बड़ा जरूरी समझत बानीं। १९४१ में हम सुराज का लड़ाई में जेहल गइलीं। ओइजा बउध बिदमान नागारजुन जी से साथ भइल। भोजपुरी भासा में कलमि चलावे क पहिला उपदेस उनहीं से मीलल। एह से, आज कहनी क जवन किताबि रउवा लोग का आगा बा, ओकरा के तइयार करावे क असली एहसान नागारजुन जी पर बाटे।

एह किताब में दस गो कहनी बाड़ी स। दसों में समाज क दस किसिम क तसबीरि बा। हम तसबीरि बनावे वाला ना हईं। इ त बरियाई हिरिस भर कइल बा। भोजपुरी भाई लोग अगर तसबीरि के पसंद कइल त हम आपन भागि समुझब। आखिर में इहो कहि दिहल बड़ा जरूरी बा कि एह किताबि के छपवावे में सुरुज राय (कोड़रवाँ) आ चउधरी रामनरेश राय सरमा (खोचरिहां) से जवन मदति मीललि हम ओके जिनिगी भर ना भुलाइ सकीं।

जेठ सुदी तेरस, संवत २००५
मोरथ (खीरी)
बगसर

अवधबिहारी 'सुमन'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मलिकार

'सेवक दादा तोहरा नियर धीर पुरुस का घबड़ाये के ना चाही। दुख में धबड़इला से कवनो फायदा ना होखे। दुख का समय के हँसी–खुसी से कटले क मोल ह। बिपति का जालि में बाझि के जे अकुताइल ऊ अउरी बाझते जाई। फिकिरि का साँपिनि से सजग होइ के ना रहला पर जिनिगी से हाथ धोवे के परे ला। दुनियां में सभ रोग क दवाई बा, बाकिर एकर कवनो दवाई नँइखे।'

अपना लँगोटिया इयार धरमदेव का मुँह से धीरज देबेवाली अइसन बाति सुनलो पर दादा क दुख क लहरि कम ना भइलि। बिपति क बरसाति उनकरा जिनिगी के नरको ले बेहज बनाइ देले रहे। बुढ़वती का भादों में दुख का करिया बदरि्न से आँखि का आगा अन्हार छवले रहे, कुछ ना लउके। दादा फिकिरि से घाही होइके खटिया पर गिरल भगवान से मउवति माँगत रहसु।

दादा क जिनिगी क नाइ चकोह मे परल देखि के गाँव भा जवार क जान–पहचानी साथी, हीत आ भयवद सभ उनकरा से भेंट करे खातिर कले–कले पहुँचत रहे। फरका ले त सभ आपन करेजा पोढ़ कइके इहे सोचत दादा किहें पहुंचे कि उनकरा के धीरज आ सबुर देईं बाकी फूस का पलानी में पहुँचि के टुटहा बसहट पर दादा क सूखल ठठरी आ लेवा–गुदरा देखते इसपातो क बनल करेजा मोंमि होइ के पघिलि जाय आ आँखि पड़े बहि के बहरा चलि आवे।

धरमदेव, दादा का लँगोटिया इयारन में ले रहलनि। दादा क जवानी का सोनहुला जमाना क तसबीरि आजुवो उनका आँखि का सामने नाचति रहे। कहाँ नेवार क पलँगरी, तोसक–तकिया, अंगूर–अनार, म़हनभोग आ बीसों नोकरन क दरबार, कहाँ टूटल बँसहट आ लेवा–गुदरा आ दावा–बीरो भा पथ तक मोहाल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

जिला–जवार में दादा का रोब का सामने केहू आँखि उठाइ के तिकवे वाला ना रहे। दरोगा, निसपेटर भा मजिहटर सभ उनकर आदर आ अदब करे। उनका मेंहीनी क सोर कई जिला आ राजदरबारन तक रहे। हाथीनसीन जिमिदार उनका किहें आपन बेटी बियहले रहलन।

ओह दिन का आ आजु का हालति में आकास–पाताल क फरक रहे। ई दादा का जिनगी क चउथा पहर रहल। अब त न ऊ गँजेड़ी इयार रहलन न भाँगि–बादाम घोंटेवाला मुँहलगुवा मँसखरा। एहतरे त दुनिया में जवले जाँगर चलत रहे ला, दउलति पास में रहे ले, कवनों न कवनों मतलब लेइ के हजारों साथी घेरले रहेलन। आँखि–ठेहुन थकला पर के पँजरा आवे ला? दादा के दुखी देखि के धरमदेव का आखिरी दुख बीतत रहे, बाकी आपन करेजा पोढ़ राखि के दादा के दुख का एह दलदल में ले बहरा निकालल उनकर काम रहल। ई त ठीके बा कि दुख केहू बाँटि ना सके बाकी संगी–साथी क एतने काम ठहरल कि दुख परला पर लोर पोंछे, बोध आ धीरज देइ।

धरमदेव क बाति सूनि के दादा का कुछ घरी खातिर आराम जरूर मिले बाकी फेर ऊहे तसबीरि आगा खड़ा हो जाय। रहि–रहि के घर क गरीबी, लइकन क नलायकी आ मलिकार क बेवहार इयाद परे त फिकिर में गोताइ के गिरि परसु। ई उनकर आखिरी बाति रहे:–

"धरमदेव भाई तू कहत बाड़ऽ कि संतोख आ सबुर राखि के भजन करी, कवनों बाति क मलाल मति राखी,बाकी अइसन भइल कठिन बा। बिपति क झोंक अइला पर भजन–भाव कुल्हि भुलाइ जाला। एइजा त फिकिर आ कुफुति का लहरि से करेजा जरि रहल बा; गरीबी जहर भरलि सुई बनि के देहि में गड़ि रहलि बा। तोहरा समुझे के चाही जे आदिमी पर जब दुख परे ला त, ऊ मीठ आ मोलायम बाति से ना कम होइ सके।"

"दादा तोहार कहल त ठीक बा, बाकी का करे के होई, इहे दुनियां क बेवहार ठहरल कि सुख का बाद दुख आ अंजोरिया का बाद अन्हरिया आवे ले। एकरा में केहू क कवन अखतियार बा?"

"धरमदेव भाई, दूसरा बाति क तकलीफ नँइखे। लइकन क बउराही जगहि–जमीनि क झंझट आ देवकी बाबू क बेइमानी इयाद परला पर करेजा काँपि जात बा। माया क फाँस बड़ा बरियार ठहरल। अबे रधिकवा क बियाह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाकिये बा। जानत बाड़ऽ कि तिलक–दहेज क कवन हालि बा? जेकरा दुवार पर दूइगो नाटा बा ऊहो हजार से कम क बाति नंइखे बतियावत। नीमन घर आ बर खोजे जा त पांच हजार से कम पर पटरी ना बइठी। जब पांच बिगहा कबाला करीं तब न बेटी क बियाह होई? देवकी बाबू से कहली जे हमार आंसन त दस–पांच दिन में उठले बोलत बा, खेत क मामिला फरियाइ के लइकन क नांव चढ़ाइ देईं त आजु–काल्हि कहि के टरले जात बाड़न।'

"दादा देवकी बाबू क बाति मति कहऽ। ऊ भारी जमामार ठहरलन एह बाति के सभ जानत बा। जवार क कवन अइसन गांव बा जे इनकरा चोंच क सिकार ना भइल होखे? दूइ आदिमी में झगरा लगाइ के एगो क पछ–पयरबी कइल, मोकदमा लड़ाइ के मेहनताना कमाइल इनकर रोजिगार ठहरल। जिनिगी भर क जमुराज आजु महातमा थोरे हो जइहन। बाकी घबरा मति, एकर उपाइ होई न।"

"धरमदेव भाई, तोहरा से त कवनों बाति क परदा नँइखे न। देखबे कइलऽ ह जिनिगी भर जांगर ठेठवली आ ओकर ई नतीजा? देवकी बाबू के पढ़ल आ होसियार जानि के खनदान क पगरी दियाइलि कि खनदान क लाज रखिहंन, दूध के दूध आ पानी के पानी करिहन बाकी उलटे भइल। बाँट–बखरा का बेर जवन मीलल ऊ केहू से छीपल नँइखे। नगदमाल त मारि के बइठिये गइलन, रेहनो–सोहावन गपचत देरी ना लागल। जगहि–जमीन के खेंवट–खतियान उनहीं का नावें बा। देसु भा अंगूठा देखावसु उनहीं क न अखतियार बा। हम थोर जरले फरका ना भइलीं। बहरा देवकी बाबू आ भीतर उनकरा मलकिनी क खोभसने सहत बीते। हमार लइका भँइस चरावे, कुदारी चलावे, बनिहार नियर सानी–पानी करे आ ओकरा के पाव भर मांठा मोहाल रहे। उलटे मलकिनी खोम नियर गारी देसु। देवकी बाबू क बेटा बनारस पढ़त रहे त मेंटा क मेंटा घीव पहुँचवले हईं। ऊहो आपन आँखि बदलि दिहलसि।"

दादा क रोवल–कलपल सूनि के बन क चिरई तक रोवे लागे।, बाकी केहू का करो? सोझिया आदिमी बउराह गिनाला, ओकरा खातिर एह दुनियां में जगहि कहां बा? कहले बा खीसा जे बरियारा क लउरि माँह कपार। चीलमि, जवना पर अंगारी चढ़ति बा, उहे बताइ सके ले कि आगि कइसन होले।

दादा क चार बेटा रहलन। एक जाना त सुराज का पहिली लड़ाई में (१९३०) जेइल गइलन। गया में बरक साहेब सुबरडेन्ट क पूरा तनदेही भइलि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

नतीजा होखल कि बहुत सुराजी त ओइजे मरि गइलन। जे बांचि के बहरा आइल ओहू का किसिम–किसिम क बेमारी भइलि आ सरग क राह धरे के परल। दादा क बड़ बेटा सामनारायण का बहरा अइला पर तपेदिक भइल आ चलता भइलन। तीनि जाना में, दूइ जाना त गिरहस्ती में रहसु, एक जाना पढ़त रहलन। दादा जब छोट जाना का पढ़ाई छोड़ि के सुराज में जेहल गइला क खबरि सुनलन त उनका करेजा में अइसन घाव लागल कि मरे का बेर ले ना नीमन भइल। दादा दुखी होइ के खटिया धइलन से मरही का बेरी छूटलि।

●●●

जेठ क दुपहरिया, लूह जोर बहत रहे। एक ब एक दादा क बेमारी बिगड़लि। दादा बिपति का मिरिगडाह में तपि के दूसरा लोक क तइयारी करे लगलन। दस–पनरह दिन ले उनका ढक धराइल रहे–

"दस हजार रुपया लेइ के जिमींदारी फेरि ल जा। मकानि बनवावऽ जा। सीतामढ़ी ले दस गो बयल खरीद के खेती सोझ करऽ जा।

मंगर दिन सांझि का बेरा दादा क बोली बंद होत जानि के बाछी छुवावलि गइलि। चारि पसेरी चाउर, एक पसेरी गूर आ एगो धोती–मुरेठा छुवाइ के उपरोहित के दियाइल। सीवगोबिन अहिर दादा का बोलाहट क सनेस लेइ के बेचनपुरवा गइलन।

अंजोरी नउमी मंगर दिन भिनसहरा होत रहल। दादा क पतोहि सिलगनी, खिजमतिया आ फेंकू कमकर खटिया का पजरा बइठल राम–राम कहत रहलन। दादा फेंकू का हाथ से खइनी लेइके जइसहीं ओठंघत बाड़न तबले आंखि उलटि गइली स। झटपट भुंइया उतारल गइल।

धरमदेव राय दादा क खबरि पावते हांकल–पियासल चलि आवत रहलन। जइसंही गांव का गोंयड़ा, खोभारी का बगइचा किहें पहुंचत बाड़न तबले दादा का लासि से भेट भइल। धरमदेव राय देखते भोंकास पारि के रोवे लगलन।

"आहि ए दादा! इहो कइलऽ; साथ छोड़िके चलि दिहलऽ।

बेचूपुर से धरमदेव क नाता टूटल। अब दूसर का कहीं, आजु दहिंनी बांहि टूटि गइलि। दादा! तोहरा नेकी क बदला धरमदेव से ना दियाइ सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही तरे रोवत–गावत दादा क रंथी आगे बढ़लि। राह में जेही सूने कि सेवक दादा त ई दुनियां छोड़ि के चलि दिहलन ओकरा आंखि से लोर बहि चले। सभ का मुंह से इहे निकले 'आजु एह जिला क खानदानी रईस आ देहाति–जवार क हीरा निकलि गइल! खनदान क सितारा डूबि गइल।'

●●●

भाई –भयवद , हीत–गन सभकरा किहें दादा का सराधि क नेवता घूमि गइल कि बइसाख बदी नउमी अतवार दिन के बराभन भोजन होई। दिन निगिचाइ चलल, किछु चीज-बतुस क जोगाड़ ना भइल। लइकन क हाथ सकेत रहे। आखिर में हीनलोट बनवला पर पांच सव रुपया मीलल। ओने त काम मजे में होखे क कवनो ठेकान ना देखि के देवकी बाबू मने मन खुस होत रहलन। उनकर खेयाल रहे कि देयाद आ दालि के गलवले क मोल हउवे। दादा साधु रहलन उनकर काम मजे में पूरा हो गइल।

आसाढ़ माथ पर आ गइल। बदरी किंचराति देखि के सभ अपना–अपना खेत में खादि–मांटी फेंके लागल। दादा क लइका बंसरोपन आ रामअधार दूनो जाना देवकी बाबू किहें पहुंचलन कि खेत हिगराइ देईं, खादि–मांटी डालल जाय। देवकी बाबू त मोकदमाबाज कनूनची रहलन। उनकरा कइसहूं झगरा बेसाहि के हक–हीसा हड़पे के रहे।

'देखऽ खेत हिगराइ देंई त हमार जमां डूबि जाई, हिसाब साफ कइ द जा एकरा बाद खेत हिगरले–हिगरल बा।' मलिकार क बाति सूनि के बंसरोपन का पूरा दुख लागल।' ऊहो मलिकार के वाजिब जबाब दिहलन।

'हमरा जाने में त राउर हर–हिसाब बेबाक हो चुकल बा। बाबू जी धरमदेव राय का आगा हमसे त इहे कहलन। एतनो पर हम त इहे कहब जे बाकी बा तवना क कागज–पत्तर पांच आदिमी का सामने राखीं हिसाब हो जाय। हम भागि ना सकी। एह तरे त राउर अखतियार। खेंवट–खतियान, रसीदि-फरखत्ती सभ रउरे नांवे बा, हक हीसा देईं भा राखि घालीं।'

आखिर में जब मामिला फरियाये क कवनो रंग ना लउकल त बंसरोपन राय पंचाइति बटोरलन। जेठ का पुरनवांसी के पंच लोग बटुराइल। सामरथी पांडे, धरमदेव राय, जगन उपधिया, बलेसर तिवारी, सिवगोबिन मिसिर आ देवसरन राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant 2

इहे पांच आदिमी पंच रहलन। मामिला बड़ा अझुराह रहे। तीनि दिन–तीनि रात पंचाइत होते रहि गइलि। आखिर में उहे भइल जवन सोचल रहे। बरियारा क पंचाइति गजरा क संख होले। मन में आई त मानी नाहीं त अंगूठा देखाइ देई। मलिकार देवकी राय आ पंचलोग में मोट हो गइल। पंचलोग खिसिआइ के अपना घरे चलि गइल। पंचलोग के महनभोग क इंकटी बनत देखि के देवकी बाबू आपन पंयतरा बदलि दिहलन। उनका त दही का ऊपर क साढ़ी सहोथे के रहे।

●●●

देहि में जबले दम रहे ला केहू आपन हक–हीसा ना छोड़ल चाहे। देवकी बाबू से मोकदमा लड़त–लड़त दादा का लइकन का नांव में जवन दस–पांच बिगहा बाचल रहे उहो बेंचाइ गइल। नाधा–पयना टूटि गइल। अब दूसरा का सिरवाहि क आस रहि गइल।

रामअधार आ बंसरोपन दूनो भाई सोचलन कि 'देस चोरी परदेस भीखि' नीमन बा। कतहीं परदेस में चलि के जांगर चलाइब जा त अपनो काम चली आ दस रुपया घरहूं आई।

गाँव ले पनरह कोस दक्खिन पहाड़ का तरियानी में पहुंचि के दूनो भाई दूइ गाँव में नौकरी करे लगलन। एक जाना, रामअधार, देहि–हाथ क मजबूत रहलन। ऊ त एगो बनियाँ किहें दरवानी करे लगलन। उनके तीस रुपया तनखाह मिले लागल। बड़ जाना बंसरोपन–एगो छतिरी क सिरवाहि सानी–पानी, आ गिरहस्ती क काम करे लगलन। उनका सात गो बैल, तीनि गो गाइ आ एगो भंइसि के घासि ले आवे के परे। छांटी काटल, मोका परला पर कुदारी चलावल आ गोबर पाथल, कुल्हि करे के परे। एतनो पर सालि में एक बिगहा क पयदा भर मिले। घरे गइला पर मेहरारू कबे खुद्दी क भात परोसि दं स, कबे बासी! दालि में मांड़ डालल त रोज क सखुनतकिया रहल।

समय का बंवडर आ समाज का जुलुम क सिकार होइ के जवन न करे के परे! जेकरा पांच–पांच गो नोकर आ लंउड़ी लागल रहे, आबरांवा आ मखमल ना पसंद परे, मालपूवा, आलू क पूड़ी, गजरा क हलुवा, अंवरा, हर्रे आ सिरफल क मोरब्बा खात–खात मन उबियाइ जाय, आजु ओकर ई दुरदसा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामअधार क काम आराम क रहल। दिनभर गोला पर बइठल पहरा देबे के परे, हांथ मइल न गोड़ मइल, सरदारी क नोकरी रहे। मोका पाइ के दस–बीस उपरवारो मिलि जाय। बंसरोपन काम का कड़ाई आ खाये–पीये का कोतराही से तीनिये महीना में दुबराइ के अंठई हो गइलन। अमीरी क सुकुमार देंहि कांट हो गइलि। हाथ में ठेला, गोड़ में बेवाइ देखला पर आंखि में लोर भरि आवे। मधि भादों में, रोपनी खतम होत–होत, हर–फार आ कुदारी का मेहनति से बंसरोपन बेमार परलन।

बाबू साहेब का बंसरोपन का बेमारी क कवन फिकिर रहे? दवा–बीरो क कवनो उपाइ ना हो सकलि। बेमारी बिगरति गइलि। पहिले त बोखार आ देंहि में दरद रहे। बोखार छूटल त, दूसरा दिने खाये में गड़बड़ भइला से फसिली हो गइलि। पुदीना आ लाची पीसि के दियाइल। पिपरमींट अनाये गइल।

बंसरोपन बेमारी क रोख बिगरल देखि के बाबू साहेब से रामअधार के बोलवावे क बाति कहलन। एकरा पहिले बाबू साहेब का बंसरोपन का भाई क पंजरे रहला क बाति ना मालुम रहे। रामअधार बड़का भइया का बेमारी क खबरि पावते चलि दिहलन। बाबू सकलदीप सिंह क छावनी, जहां बंसरोपन रहत रहलन, पांच कोस फरका रहलि। दुपहरिया में खबरि पाइ के चलला पर बरसाति क समय किरिनि झुकझुकाये लागलि।

आधा घरी दिन रहल त रामअधार छावनी पर पहुँचलन। एइजा बंसरोपन का टेड्डुवी लागति रहे। रामअधार के देखते उनकरा आंखि में से लोर क धार बहि चलल। ऊ आखिरी बात कहे लगलन –" रामअधार, एतने दिन क साथ लिखल रहल ह। देखिहऽ पलिवार का नाइ क पतवार तूं ही बाड़ऽ। घर में बेवा पतोहि, आ भतीजा बा। कइसहूं असो रधिकवा क बियाह ... मलिकार हमनीं के ... " एतना बाति कहत–कहत बंसरोपन क कंठ बंद हो गइल। उनकरा के दुनिया का दुख से छुट्टी मीललिं। रामअधार का आंखि का आगा अन्हार हो गइल कि अब का क...।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आतमघात

जमुना घाट पर फूस का पलानी में बइठल बलिराम आपन दुरदसा आ दुनियां क हालि देखि के झंखत रहलन। रहि–रहि के उनका मन में ई भाव उठे कि गरीब भइला ले बढ़ि के दूसर कवनो भारी पाप नइखे। गरीब मेहनति कइके दुनिया के गोहूँ–बासमती खियावत बा, रेसम आ साल–दुसाला ओढ़ाइ के रेल, मोटर, उड़नी जहाजि पर चढ़ावत बा। ओकरा के भर पेट अनाज आ लेवा–गुदरा तक दुलम भइल बा। मालदार लोग नेवार का पलंगरी पर अपने त सूतते बाड़न उनकर कुक्कुर तक दूध–बदाम नंइखे पूछत। किसान–मजूर भूखे–लंगटे रहि के, घाम–सीत बरदास कइ के अपना करम आ तकदीर के झंखत बाड़न। दूसरा ओर मालदार आ जमींदार एतना मतलबी बाड़न कि दुनियां का एह कलपबिरिछ क डाढ़ि आ जरि में गरम पानी देत बाड़न।

बलिराम, समाज का एह पाप क फल खुद भोगत रहलन। आगा नाथ न पाछा पगहा वाली दसा भइलि चाहति रहे। चचेरा भाई गरीब जानि के उनके फरका कइ दिहले रहलन। घर में उनकर मंहतारी, मेहरारू आ ऊ–तीन बेकति क पूंजी रहे। डेढ़ बिगहा खेत हिसा मीलल उहो दूइ बरिस का खाइल–पीयल आ पढ़े का खेवा–खरच में रेहन धराइ गइल। तीसरा बरिस बलिराम जब इनटरेस में पहुंचलन तबले उनकर महतारी मरि गइलि। उनकर होसिला रहल कि बी० ए०, एम० ए० पास करितीं, बाकी बुझाइलि कि एकरा पर पानी फीरल। आज का दुनियां में गरीब क होसिला कब पूरा भइल ह?

महतारी क काम–किरिया कइला का बाद ऊ अपना मेहरारू के नइहर भेजि दिहलन। सोचलन जे एक बरिस क त अउरी पढ़ाई बा, पास कइ के तीस–चालिस क नोकरी धइ लेबि, बस पढ़हू क काम चली आ दस रुपया मेहरारू का लूगा–कपड़ा खातिर भेजब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२

महेश ठाकुर धरमपूरा हाईइसकूल क हेडमास्टर रहलन। उनकर दया आ छोह पाइके बलिराम क फीसि आधा माफ रहे। किताबि इसकूल का ओर से मिले। खाये के हेडमँहटर अपना पास ले देसु। बलिराम बदला में उनका छोट लड़िका के पढ़ाइ देसु।

अब्बर पर ओनचास बयारि। बिपति क झोंक एक ओर ले ना आवे। इनटरेस का आखिरी साल क पहिला महीना बीतत–बीतत महेश ठाकुर इसकूल क निसपेटर होइके भागलपुर चलि गइलन। बलिराम क बरियार अड़ार टूटि गइल। जेनिये आँखि जाय अन्हार लउके। केहू मदति आ चन्दा देबेवाला ना रहे। कबे दूइ चारि रुपया मीलि जाय त ओकरा से काम चलल मुसकिल रहे।

आखिर में जब कवनो राह ना लउकल त बलिराम तीनि गो पढ़निहार साथिन क, जवन एकही डेरा में रहत रहलन स, रसोई बनावें लगलन, बरतनों उनहीं का मले के परे! सभ काम कइला पर कइसहूं दूइ घंटा समय मीले त पढ़सु। इसकूल का लइकन का टेढ़ आ चंचल सुभाव, किसिम–किसिम क बिरही बानी बोलि के खिझावं स। बलिराम झँख मारि के उन्हन के सूनसु। बेल तर क मारल बबूर तर–कतहीं त सरन ना रहे।

आजकल सुधाकर सासतिरी इसकूल क हेडमँहटर रहलन। बिदारथिन क सभा–कमेटी कइल, सुराज क बाति चलावल भा कवनो किसिम के नया काम देखि के जरसु। महेश ठाकुर क जमाना रहे तबे ले ऊ एह फेर में रहलन कि बिदारथी–सभा तोड़ि दिहल जाय। एह खातिर ऊ हेडमँहटर साहेब क कान भरसु, बाकी महेश ठाकुर जमाना का मोताबिक चले वाला नयी दुनियां क चतुर जीव रहलन। उनका आपन गोड़ फूंकि–फूंकि के धरे के रहे। आपन जमाना आवते सासतिरी जी किसिम–किसिम क रोड़ा अंटकावे लगलन। इसकूल का हाता में सभा कइल मना हो गइल। बेंचू उपधिया इसकूल में भासा पढ़ावे वाला मँहटर रहलन। एक दिन इनटरेस का कुछ लइकन से उनका रक–झक हो गइल बस ऊ तीन गो लइकन पर बेंत चलवलन आ तीनि गो पर जुरबाना कइलन। नतीजा भइल कि इसकूल में दूइ दिन तक हड़ताल रहल। हड़ताल क अगुवा बलिराम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ नगीना मिसिर रहलन।

हड़ताल से बिदारथिन क जीति त जरूर भइल बाकी बलिराम पर बड़ा आफति आइलि। सासतिरी जी फीसि तोड़ि दिहलन। इसकूल क किताब जमा कराइ लिहलन आ लइकन के धमकी दिहलन कि केहू बलिराम के कवनो किसिम क मदति देई त इसकूल से निकालि दिहल जाई।

३

भादो क अन्हरिया राति, बलिराम का जिनिगी क नाइ उमड़ल दरियाव का चकोह में परि के डूबे–डूबे भइलि रहे। तीन दिन–तीनि राति बीति गइलि कुछऊ खाये के ना मीलल। दूसरा ओर पढ़ाई छुटला क फिकिर उनका के गलावे लागलि। चउथा दिन सांझि का बेरा दु:ख में डूबत–उतिरात बलिराम सहरि ले बहरा 'लेनिन मयदान क ओर टहरे चललन।

मयदान क सोभा का पूछे के रहे! सेठ–साहूकार, वोकिल–मुनसिफ सभ, किसिम–किसिम क कपड़ा पहिरि के अतर–गुलाब में सराबोर भइल हाथ में बकुली लिहले एक कोना ले दूसरा कोना टहरत, पानखात आ हंसत–बोलत रहलन। बलिराम अपना संगिन–साथिन आ मँहटर लोग का आंखि से बचे खातिर चुपचाप एगो कोना में बइठि गइलन।

बरसाति क दिन बदरी–बूनी का डर से टहरे वाला लोग कले–कले अपना–अपना घर–दुवार का ओर चललन। बलिराम बेचारू कहंवा जइतन? नव बजे राति ले त ओइजे बइठल रहलन। जब एक–एक गो बूनी परे लागलि त उठि के चललन। भादो क अन्हरिया डाइन बनि के काटे दउरति रहे। आपन गोड़–हाथ लउकल मुसकिल रहे, बरखा सुरू भइल त कहे कि हमहीं रहबि, अइसना समय में विपति क मारल बलिराम कहां चलि जात रहलन उनकरा खुदे ना बुझाय। देंहि में एगो फटही कमीज, कान्हि पर गमछा आ एकही धोती रहलि। घंटा भर चलला के बाद बरखा में भींजल, पछिवाँ से कोंपत इसटेसन पहुँचलन। आदिमी एतना जुटल रहलन कि कतहीं गोड़ धरे क जगहि ना रहल।

कुछ देर का बाद जब बरखा खूलि गइल त बलिराम गमछी पहिरि के धोती आ कमीजि सुखवलन। लड़ाई क जमाना रहे, बहुत आदिमी हालरोजिगार का खोज में हावड़ा चलि जात रहलन। बलिराम क राइ भइलि कि जब गंवार आदिमिन क काम लागी त हम कइसे बेकार रहबि। एइजा दर–दर क ठोकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खइला आ दांत चियरला से नीमन बा कि हमहूं हबड़ा चलि के कवनो काम खोंजी।

पास में एक कउड़ी क ठेकान ना रहे कि टिकट कटइतन। तीन बजे हबड़ा जाये क इसपरेस आइलि आ हबड़ा जाये वाला मुसाफिरन का संगे बलिराम गाड़ी पकड़ि के हबड़ा खातिर रवाना हो गइलन।

टिकट ना रहला से, बलिराम क करेजा तूफान इसपरेस का चालि ले तेज बेग से धड़कत रहे। कबे बेंच पर बइठसु कबे पेसाब का बहाने पयखाना में जासु, हरदम टिकट वसूल करेवाला क इयाद उनका मन में भूत बनि के समाइल रहे। एने ले त खोंढ़ा बदलत चलि गइलन, आखिर में किउल ले आगा बढ़लन तबले टिकट वसूल करेवाला ऊ जवना खोंढ़ा में बइठल रहलन ओही में पइठल।

बलिराम क दसा अब त भिजला सियार क हो गइल। चारो ओर टिकट जांचि के जइसहीं टिकट जांचेवाला उनकरा ओर बढ़ल तबले बगल का खोंढ़ा में दूइगो मुसाफिर आपुस में मारपीट कइलन आ सिकरी खिचाइलि बस गाड़ी खड़ा हो गइलि। खलक उतरि के देखे लगलन कि का बाति ह, काहें गाड़ी खड़ा भइलि ह? एही भीड़ि में बलिरामों उतरि के जमुराज से आपन जीव बचवलन। कुछ देर में मामिला पटाइल। सभ जहां क तहां चढ़ल। गाड़ी सीटी दिहलसि। टिकट जांचेवाला के दूसरा खोढ़ा में जात देखि के बलिराम फेर ओही में चढ़लन। गाड हरियर झंडी दिहलसि आ गाड़ी नव–दू–एगारह भइलि।

४

धरमपूरा हाई इसकूल से पढ़ाई छोड़ि के बलिराम का गायब भइला क खबरि जब उनकरा ससुरारि कोइरियां पहुंचलि त सभका बाई लिहलसि कि ई कां भइल? रोवन–पिटन आ उपास होखे लागल। बलिराम क ससुर सोझिया किसान रहलन। घरे उनकर मेहरारू कपार खइलसि कि जइसे होखे बलिराम के खोजि के धइ ले आवऽ। हमन क घर बेटी–दमाद के पाइ के उजियार रहल ह। बुढ़वती में इहो बिपति परलि।

बुढ़ऊ कोइरियां ले धरमपूरा पहुंचलन। जब धरमपूरा में बलिराम क पता ना लागल त आरे पहुंचि के खोजलन कि लड़ाई क भरती होति बा ओइजा जनि गइल होखे। आरे हूं पता ना लागल आखिर में एही तरे चारि–पांच दिन हयरान होइ के उनकरा के बलिराम क पता ठेकान ना लागि सकल आ ऊ कोइरियां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लवटि अइलन। तीनि महीना बीतल आ पता ना लागल।

भीखमपुर कोइरियां क डाकघर ह। सात दिन में दूइ दिन कोइरियां क बीट परेला। बीट का दिने डँकपिउन चीठी लेइ के गांव में आवेलन।

बीयफे के सांझि का बेरा मुंसी सदासुखलाल चिट्ठी लिहले कोइरियां पहुंचलन। बलिराम क चिट्ठी उनका ससुर का हाथ में मीललि। उनकर बेटी पढ़लि रहे, ऊहे चिट्ठी बांचि के अपना बाप—महँतारी दूनो जाना के सुनावे लागलि।

''सोसंती सरब उपमा जोग लिखी पतिरी बलिराम का ओर से सासु आ ससुर जी के पावलगी पहुंचे। हम हबड़ा पहुंचि के बड़ा मजे में बानी। पचास रुपया महीना क नोकरी लागलि बा। तोहन लोग क समाचार पावे खातिर मन बेयाकुल रहत बा। हमार राइ बा कि एइजा बनावे-खाये आ नोकरी पर जाये में बड़ा तकलीफ होति बा, एह से तीनि—चारि महीना खातिर घरवाली के भेंजि द जा। हम खरच खातिर बीस गो रुपया भेजि रहल बानी। भीखमपुर क बोधा सिंह आवे वाला बाड़न। उनकर डेरा हमरा पँजरे बा। उनहीं का संगे लगाइ दीहऽ जा, लियवले अइहँन।

नीचे हम आपन पता लीखि देत बानी। चीठी—पतिरी भेजे के होई त एही पता से आई। घरवाली के भेजे में कवनो बाति क सोच आ खटका मति करिहऽ जा।''

पता

नंदी बगान	तोहार
२० नं० कोठी	बलिराम सिंह
हबड़ा	

चिट्टी से बलिराम क पता पाइ के उनका सासु आ मेहरारू सभका खुसी भइलि। आठवां दिने डँकपिउन बीस रुपया क मनिआडर लेइ के अइलन। जब बिसुनधारी सिंह का हाथ में रुपया मीलल त बचिया के हबड़ा भेजे वाली बाति ताजा हो गइलि।

उनका बेटी के दूर देस में भेजल बड़ा अखरत रहल। तवनो पर ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हालति में जब घर में ओकरा छोड़ि के दूसर लइका–फरिका ना रहल। बाकी का करितन, उनकर लाचारी रहे। दमाद क मामिला, बेटी त दूसरा क धरोहर ठहरलि झंख मारि के भेजही के परित! आखिरकार चाउर गुड़ क जोगाड़ कइके ढूंढ़ी–कसार क उपाइ होखे लागलि।

५

लड़ाई क जमाना, मंहगी का करते बजारि में आगि लागल रहे। बंगाल क जिनिगी छोट–मोट नोकरिहन खातिर मउवति रहलि। अउरी सभ क त काम चलियो जाय। बाकी जांगर चलाइ के जीयेवाला मजूर आ टुटपुंजिया किसान भाई आखिरी आफति में रहलन। चटगांव, नोवाखाली, वारीसाल, मालदह जिलन में अकाल परे सुरू हो गइल। एह अकाल से बंगाल का बड़–बड़ सहरन में बड़ा हड़कंप मचल। देहाति में कवनो हालि–रोजिगार ना मिलला से लोग भागि के सहरि में आवे लगलन।

एक ओर त बजार में मंहगी, दूसरा ओर देस के राह देखावे वाला अगुवा गांधी जी, जवाहिर लाल, सामी सहजानंद के सरकार जेहल में बंद रखले रहे। लड़ाई क आगि दुनिया भर में पसरि चुकलि रहे। खुद हिनुसतान का पड़ोसी बरमा में सरकार जपान से लड़ति रहे। जरमनी क बदसाह हिटलर मजूंरन का राज सोवियत रूस पर चढ़ि दउरल रहे। अइसना घरी में सरकार अपना दाढ़ी में लागल आगि बुताइति कि देस का किसान–मंजूर क फिकिर करिति? ओहू में दूसरा देस क सरकार? ओकरा एइजा का लोग खातिर कवन दरद रहे? ओकरा त करोड़पती–मालदारन से आ देस का राजा–जमींदारन से मतलब रहे, कि मदति लेइ के लड़ाई जीतो।

एही हालति में बलिराम, हबड़ा का चटकल में पचास क काम कइके आपन गुजर–सफर करसु। नंदीबगान में दस रुपया महीना पर पांच हाथ क एगो छोट कोठरी लेइके दूनो बेकति ओही में रहसु आ बनावसु–खासु। तीनि महीना त कइसहूं काम चलि गइल। जब बजारि में कवनो समान ठीक दाम पर ना मिले आ एक क चारि लागे लागल त दु:ख बीते लागल।

मँजूर लोग सरकार क रोख आ बजारि क हालि देखि के अब सजग होखे आ हड़ताल करे के चाहसु त सरकार गोली–बनूकि क धमकी देइ के आगि के ठंढा कइ दे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हजारों बरिस ले देस गुलामी का सिक्कर में बान्हल चलि आवत रहे छाती पर जुलुम क जांत धरइला से पंजरी का हाड़ टूटि गइल रहे। अब अधिका बरदास कइल लोग का काबू का बहरा रहल।

कुछ दिन का बाद मँहगी अइसन् बढ़लि कि चारो ओर अकाल पड़ि गइल। चाउर पचहत्तर रुपये मन बिकाये लागल। इहो चाउर सरल आ भड़कल कि खइला पर मलेरिया हो जाय। नीमन अनाज १२५ रुपये मन बिकाय।

अइसना अकाल का समय में बलिरामो नरके क जिनिगी बितावत रहलन। खायेके भकड़ल चाउर क लपसी आ आलू क चोखा रहे। काम बड़ा मेंहनति क रहे। आफिस में रोज दस घंटा बइठि के कलमि चलावे के परे। कहियो–कहियो त तेरह घंटा पर छुट्टी मिले। नतीजा भइल कि अब्बर होत–होत बेमार परि गइलन। दावा–दरपन क कवनो ठेकान ना हो सकला से बेमारी बिगरि के कालाजार हो गइलि। आफिस में दरखास भेंजि के पनरह दिन क छुट्टी लिहले रहलन, छुट्टी बीति गइलि आ बलिराम नीमन ना भइलन।

घर में खटिया पर परल–परल उनकर ठठरी भर बांचि गइलि रहलि। एह घरी घरो खातिर लवटल मुसकिले रहल। ससुरारि में इहे सोचि के चिट्ठी ना लिखलन कि लोग घबड़ाई।

एइजा त बलिराम पर बीतते रहे दूसरो के फेर में डालत ठीक ना समुझलन। बलिराम खटिया पर गिरल अपना जान के झंखत रहलन ओने हबड़ा आ कलकत्ता–सड़कन पर भूखि से छटपटाइ के मरल सयकड़ों आदिमी रोज कुक्कुर नियर घिसियावल जासु। कुछ दिन में अइसन नतीजा भइल कि सहरि बसाइ उठलि। भागीरथी में मुरदा फेंके क जगहि ना–रहि गइल। हजारों आदिमी सड़कि आ गलिन में जियते गिरल रहलन। केहू–केहू क त अइसन दसा हो गइलि रहे कि परान रहते कुक्कुर–सियार नोचि रहल बाड़न; दम नंइखे कि बोलसु।

मरद का रहते ओकर मेहरारू आ बाप–भाई का आगा लड़िकी आ बहिन, दूइं–चारि सेर चाउर पर आपन इज्जति बेचे लगली। एक ओर जनता नरक भोगति रहे दूसरा ओर देस क मालदार अंगरेजी सरकार का दलालन संगे सांठि–गांठि कइके एक सूबा में पचास लाख क जान लेइ के अरबों क सोना–चानी अपना तिजोरी में बटोरि लिहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६

बलिराम के बेमार भइले चालिस दिन हो गइल। कइसहूं तनी–मनी फुरसति भइल त मेहरारू का खोभसला से अपना काम करे वाला आपिस का ओर चललन। ऊ त जाइल ना चाहत रहलन, काहें से जे उनका त मालुम रहल कि काम पर दूसर केहू बहाल हो गइल होई। गइल बेकार बा।

बिपति में साथ देबे वाला विरले जीव होलन। आपन बेटा आ मेहरारू तक संग छोड़े लागेलन। अइसने समय इसपात का करेजा वाला क इमतिहान होला एहतरे त जवले मोंका ना आइल रहे, सभई अपना के बहादुर लगावे ला। बलिराम का जिनिगी क ई आखिरी इमतिहान रहे।

बलिराम ठेघत–ठेघत अपना मनेजर का आपिस में पहुंचलन त देखत बाड़न कि दुवारि पर लिखि के लटकावल बा कि " जगहि खाली नइँखे। भीतर आइल मना बा" एतना पढ़ला का बाद भीतर खिरकी से झांकत बाड़न त देखलन जे उनका जगहि पर दूसर केहू काम करत बा।

गरीब का बिसवास होला कि रोवला–गवला पर दुख में देखि के अइसन के होई जेकर करेजा न पसिजी? उनकरा कहाँ पता बा कि मालदार का दिल आ दया ना होखे? बलिराम मनेजर का आपिस में पहुंचि के आपन दसा देखवलन, चेरउरी–मिनती कइलन बाकी उनकर कहल रेत में गेंहू कऽ खेती कइल रहे, नतीजा भइल कि मनेजर घंटी टुनटुनवलन आ चपरासी आइल, बलिराम का गरदनि में हाथ लगाइ के बहरा कइ दिहलसि।

अब त बलिराम का करेजा पर आखिरी धक्का लागल। उनका आंखि का आगा एकदम अन्हार हो गइल। आखिर में जब पांच बजे आपिस बंद हो गइल त सभ काम करेवाला जहां क तहां जाये लागल ! बलिरामो उठि के चलि दिहलन।

बेटी के चिट्ठी कोइरियां पहुँचलि आ लोग बेमारी क हालि सूनि के बड़ा घबड़ाइल। बलिराम क सासु गाँव का एगो बाबू साहेब के रोइ–गाइ के कलकत्ता भेजली कि जाइ के बेटी–दमाद के लियाइ आवसु। बाबू साहेब बाति मानि के रवाना भइलन।

●●●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलिराम का आंखि का सामने रहि–रहि के मेहरारू क मेहना इयाद परत रहे कि 'इहे दुरदसा करे के रहे त हमके काहें के बोलवलऽ। तोहरा ले अमहक के होई कि हमार गहना–गुरिया रहल ऊहो बेंचवाइ घललऽ। जा काम मिली त अइहऽ ना त ओनिये मुंहे करिखा लगाइ घलिहऽ।'

खीसि में त आदिमी कहे के ना तवन बाति कहि देला, बाकी पाछे पछताये के परेला। तीनि घरी राति बीति गइलि आ बलिराम डेरा पर ना लवटलन त उनका मेहरारू का सुबहा होखे लागल कि बुझात बा हमार खीसि दगा त ना कइलसि?

●●●

बलिराम आपन आखिरी बाति सोचि के नंदी बगान का सामने रेल लाइनि का किनारा पहुंचि के लुकाइल रहलन। आधा राति का बेरा पच्छिम से डाँक गाड़ी आइलि। लड़ाई का खतरा से बचे खातिर आजकल न त रेलि में बती रहे न लइनि पर। बलिराम सोनहुला मोका देखि के लइन पर सूति गइलन। गाड़ी ठीक एक बजे आइलि, उनकर देहि आ मूंड़ी दूइ ओर फेंकाइ गइल। संसार का सभ दुख आ बीपति से उनका के एक छन में हरदम खातिर छुट्टी मीलि गइलि।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मँवनी बाबा

बेचू बो पड़ाइनि गांव क उपरोहितिन रहली। एक दिन टोला–परोसा क मेहरारू बटुराइ के उनका किहें सलाह करे अइली स! पड़ाइनि, तू हमनी क उपरोहितिन आ अगुआ ठहरलू। जब तोहके कुलपूज मानि दीहल बा त कवनो धरम क काम नेवाधे ले पहिले तोहरा से सलाह कइल जरूरी बा। हमन क सलाह रहल ह कि बइसाखी सिवराति आइलि, गुपुता बाबा क दरसन करे चलती जा। एक जानी बूढ़ि पड़ाइनि से ई बाति कहते रहली तबले एगो दूसरे बूढ़ि बीचे में बाति काटि के बोललि–

'पड़ाइनि हमन का पुरनियां भइलीं जा, जिनिगी कऽ कवनो ठेकान नंइखे। बड़ा भागि आ पुरूब जनम का कमाई से त मानुस क तन मीलल बा। एह घरी का भुलइला से नरक में पहुंचि के जमुराज का डंटा से पिटाये के परी। एह ले नीमन बा कि ओ़इजो खातिर कुछ साम्हर बटोरल जाय। मँवनी बाबा क बड़ा सोर सुनत बानी, उनहूं क दरसन होई। एकही बेर माता क पूजा आ बहुरिया क नेवत दूनो काम संपरि जाई। एह ले नीमन का चाही?'

पड़ाइनि त मने–मनु चाहते रहली कि केहू जजमानिन भेंटाइत त सिवराति चलल जाइत! उनकर त इहे रोजिगार रहल कि आजु एह तीरथ पर त काल्हि ओह धाम पर। आगा नाथ न पाछा पगहा–परम सुतंतर रहली। घर ले त एकहू पइसा लागे के ना रहल। अनकर आटा; अनकर घीव साबस–साबस बाबाजी!

आलसी नियर बइठि के दूसरा का जांगर क कमायी खाये वाला का ढेर अकिलि होले। पड़ाइनि क खियाल रहल कि 'चलबो करीं आ चेरउरियो कराई' जे मान–मरजाद बनल रही'। पड़ाइनि मंचिया पर बइठि के हूंका पुड़पुड़ावत रहली आ जजमानिन लोग चारो ओर ले घोरियवले रहे। आखिर में कूट–काटि के इहे तय भइल कि ' चउसा चलि के गंगा नहाइल जाय आ जल भरि के बिहान भइला बाबा का धाम क पयान होखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले त पड़ाइनि नाकुर–नुकुर करत रहली कि 'का कहीं जजमानिन जीव बड़ा अनेसा में परल बा। हमार हालि त सांप छुछुनरि क भइल बा; हं भा नाहीं कुछ नइंखे कहल बनत। जानते बाड़ जा जे मंगले–चहला क असरा ठहरल। एह घरी हाथ एकदम खाली बा। दूसरा ओर भारी फेर एह बाति क बा, जे नाहीं कहि देईं त तोहन लोग जनबू जा कि पड़ाइनि बहाना करत बाड़ी'।

पड़ाइनि क बाति सूनि के भगजोगनी काकी आ जसोदिया फूवा का ना रहि गइल। ओह लोग का पड़ाइनि से कहे के परल कि: – पड़ाइनि हमन के एतना गइल–बीतल समुझत बाड़ू जे संग में एगो उपरोहितिन क गुजर ना होई? सात–पांच क लाठी एक क बोझ। सभ मुट्ठी–खांड़ देबे लागी त तोहरा खरच के–के कहो कई आदमी क खरच जूटि जाई। चले क तइयारी करऽ साइति मति देखऽ।'

●●●

पूछे के का रहे पड़ाइनि त इहे चाहते रहली। कहल खीसा कि रोगिया चाहे तवन बयदा बतावे। उनकर शंख बाजल आ सभ आपन तइयारी करे लागल। कतहीं जाँत धराये लागल त केनियों ठेकुआ–मरदुवा पाके लागल। तेल–घीव का महंकि से टोल–परोस मनसायन होखे लागल। लयिका ठेकुआ आ दूढ़ी खातिर एने–ओने कूदे–छड़के लगलन स।

२

आगा–आगा पड़ाइनि चलली आ पाछे ले गठरी कपार पर धइले, पचीसों मेहरारून क झुंड गीति गावत चलल कि 'सोने क गड़ुवा गंगाजल पानी.....'।

सबकरा पाछा गांव क बूढ़ माउग रामधनी कपार पर मेहरारून क लूगा–फाटा लिहले आ हाथ–मुंह चमकावत चलि जात रहलन।

मेहरारून क जमाति, कोसे भर पर सुहताइल आ तमाखू पीयल जरूरी रहे। रामधनी तमाखू चढ़ाइके पड़ाइनि के भा अउरी मेहरारून के देसु। उन्हन का पी के त आगे बढ़ऽ स। दिन भर में पांच कोस चलल भारी रहे। पहिल दिन पांच कोस चलि के करमनासा का तीर पर बेचनपुरवा गांव में जमाति क डेरा गिरल। बेचनपुरवा में भगजोगनी काकी का एगो ननदि क बियाह भइल रहे।

पड़ाइनि क त पांचो हरदंम घीवे में डूबल रहे। खाये खातिर पकवान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीलि जाय आ थकला पर जजमानिन लोग देंहि दबावे, रामधनी गोड़—हाथ में तेल मालिस करसु।

पयान का आठवां दिने बीयफे के दूइ पहर होत—होत पड़ाइनि आपन जमाति लिहले बाबा का धाम में पहुंचि गइली। मेला पहिलहीं ले जमल रहे। दूर—दूर क बनिया—महाजन आ दोकानदार आइ के आपन दउरी—दोकानि सजवले रहलनि स। कतहीं मिठाई आ खेलवना बेंचात रहे त कतहीं चूरी—बउँखा, टिकुली—सेनुर, चूरी आ चलनी, अंगिया। अमरूत—बइरि आ पहड़ुवा लाठी क दोकानि त अनगिनित रहली स।

मेला में धक्का त आखिरी रहे, एकादसी क महातम समुझि के खलक दूइ दिन पहिलहीं ले पहुँचल रहल। चूरी—खेलवना आ तेलही जिलेबी का दोकानि पर झुन्ड क झुन्ड मेहरारू खड़ा रहली स। केतने त कहंतरी आ घूंचा कीनि के कवनों में चूरी आ लहठी धइले त कवनो में मिठाई, एक ओर ले दूसरा ओर आवत—जात रहली स। केतने सिंउठा—कजरवटा आ तेलहा दरबि क कड़ा आ पछुवा लेबे में बाझल लउकत रहली स।

पहाड़ पर जंहवा मेला लागे ला ओकरा ले तीनि रस्सी पुरुब जनारदन कुन्ड बा। पड़ाइनि सोचली जे आज एकादसी ह कुन्ड में जरूर नहाये के चाही। नहइला का बाद मँवनी बाबा क दरसन कइल जाई। मेला का दिने त उनकर लउकल मुसकिल बा। भीड़ि का डरे खोह में लुकाइल रहेलनि। गुपुता महादेव क दरसन त सिवराति का दिने होई। अन्हार खोह में अकेले गइल सहज नंइखे। मेला का दिने पंडा लोग दीयाबती क उपाइ करी त कुछ अराम मिली। पड़ाइनि, एगो जान—पहचानी मोदी किहें कुल्हि गठरी—मोटरी धरवाइ के सभके कुन्ड में नहाये खातिर लियाइ चलली। कुन्ड में थूक—खंखार, दतुवनि क छिहुला आ काउर भरल रहे। एतनो पर महातम समुझि के आदिमी पर आदिमी गीरत रहलन। पानी हिंढ़ाइ के ढबरी हो गइल रहल। पंडा लोग कुन्ड का चारो ओर मचान धइ के, चंदन, फूल आ रोरी लिहले जजमानन का ताक में गीध नीयर तिकवत रहलन जा।

देबी—देवता आ करत—तकदीर का कबीर—कथनी पर बिसवास करे वाला देहाति क सोझिया लोग एह ढोंग आ धोखा का टाटी क भेद का समुझत रहलन? पड़ाइनि त घूमल—फीरल खेलाड़ रहली, बाकी ऊ आगा बढ़ि गइली।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ाइनि कुन्ड में पहुंचत बाड़ी, एने जशोदिया फुवा के एगो पंडा छेंकलसि, जजमानिन हमरा संगे चलीं। रउवा गांव क पंडा हमहीं हँई। चलीं बही में लिखल बा देखाइ देत बानीं। अइसना तीरथ में अइला पर दान–पूनि करे के चाही। इहे न ओइजा क साम्हर होई। के संग में का लेइ के आइल बा आ कवन दउलत लेई के जाई? सावा रूपया लागी, आज गउदान क महातम ह, चली कराइ देईं।'

जशोदिया फुवा जइसहीं मुंह फेरि के आगे बढ़त बाड़ी तबले एगो दूसर पंडा महराज छेंकलन। ऊहो उहे बाति कहे सुरू कइलन! एतने में दूनों पंडा अपुसे में गारा–गारी कइके आवह–त आवह करे लगलन। पड़ाइनि नीचे दतुवनि करत रहली। जलदी दतुवनि फारि के फेंकली आ ऊपर अइली। उनकरा अवते झगरा पटाइ गइल आ तय भइल कि सिवराति ले एक दिन पहिले देखि के फरियाइ लिहल जाइ। अबे त मंवनी बाबा किहें जाइल जाई।

३

मँवनी बाबा क गोंफा पहाड़ का ऊपरी चोटी पर मेला ले डेढ़ कोस अउरी दक्खिन रहल। गोंफा में चारो ओर ले चारि गो सुरंग रहली स। एगो पदुमनाभ कुंड पर आइल रहे, दूसरी पहाड़ का नीचे गइलि रहे तीसरी जंगल में आ चउथी गुपुता महादेव किहें। गोफा का आगा फूस कऽ छावल एगो छोट पलानी रहलि। मँवनी बाबा घंटा–दूइ घंटा खातिर कबे–कबे बहरा आइ के एही में बइठसु। फेर गोफा में जाइ के अपना पूजा में लागि जासु। गोफा से डेढ़ रस्सी नीचे पदुमनाभ कुंड में नहाइ के त दरसन करे वाला लोग बाबा का मड़ई में जासु आ दरसन कइके कुंड पर लवटि आवसु ऊपर बाहरी आदिमी ना ठहरे दियाइ कि बाबा का पूजा में बिधिन होई त सराप देइ दिहन।

मँवनी बाबा साधारन पुरुसन में ना रहलन। लोग उनका के शंकर जी क अवतार मानसु। गुपुता बाबा का पहाड़ भा नियरा पास का देहाति में उनकर आखिरी तपलि रहे। बूढ़ लोग बतावे कि 'पांच हजार बरिस क भइलन आ अबे जवाने बाड़न। कवन अचरज बा? जोग आ भजन क महातमे अइसन ठहरल। महातमा लोग का आगा रीधी–सीधी हाथ जोड़ि के खड़ा रहेली। जेकर जनम–जनम क पूनि उदय होई ओही का न मँवनी बाबा कऽ दरसन होई! मँवनी बाबा अइसन साधु ठहरलन कि बरम्हा क लिखल तक मेटाइ देलन। सुने में आवे ला कि आज से सइ बरिस पहिले एगो बाभन क जवान बेटा मिरिगी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेमारी से मेले में मरि गइल। बाभन पदुमनाभ कुंड पर बइठि के रोवत रहे। आधा राति भइल आ जब बाभन रोइ के चुपाइल त मँवनी बाबा आइके ओकरा बेटा के दूइ लात मरलन आ उठि के बइठि गइल।' मँवनी बाबा दूध—दही, अनाज भा मेवा—मिसिरी कुछ ना खासु। भांगि—धतूर आ सिरफल क पतई चबाई के रहेलन।

●●●

पदुमनाभ के सोभा मन के मोहेवाली रहलि। तलाब में हजारों कमल क फूल फुलाइल रहलनि स। मँवनी बाबा क सुरंग पड़े तालाब में नहायेवाला लोग मजे में लउके। एकादसी के दूइ घरी दिन रहे त लोग बाबा का दरसन खातिर आवे लगलन। एही घरी सोरह बरिस क एगो लइकी तलाब में नहाति रहे। गोर देंहि, छरहर बदन, नाकि पर बिंदी रहे। जवानी का मद से मांतल ओकरा देहि क सुघराई देखि के बुझात रहे कि बरम्हा ओकरा के बनावे में आपन कुल्हि अकिलि खरच कइ दिहले बाड़न। कमल का फूलन का बीच में नहात खूनि ओकरा मुँह क सोभा देखहीं लायक रहे। बहुत बेर त देखे वालन का इ ना बुझाय कि कवन कमल क फूल ह आ कवन लइकी क मुँह। एह कमल का फूल क रस लेबे खातिर केतने आंखि भँवरा बनि के एने—ओने मँडराति रहली स। सुघराई क तसबीरि केतने लोग का आँखि में बइठि के मन के बेयाकुल कइले रहलि।

मँवनी बाबा गोफा का सुरंग से अपना मिरिगछाला पर बइठले—बइठल रूप क अमिरित पिये में मस्त रहलन। परदा का आड़ में ले जिनिगी क सवादो लेत रहलन आ केहू जनबो ना करे। कवन अचरज रहे, सिकार त आड़े में न होला? ऊपर ले साधुताई क अइसन बड़ ढोंग ना रचितन त किसिम—किसिम क चिरई कइसे फँसिती स ? फूलन क रस चीखे वाला भँवरा आजु ले एक किसिम का फूल से कबे ना अघाइल। ओकरा त अपना मन के तिरपित करे खातिर एक फूल से दूसरका पर दउरते बीते ला।

एक ओर त मँवनी बाबा क उकठल काठ नियर जिनिगी, हरियरी देखि के लत्तर से लपिटाइल चाहति रहे। मन क लगामि काबू ले बहरा होखे लागलि। बाबा का रहि—रहि के अचरज होखे कि का बाति ह? इनरासन क कवनो अपसरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त ना हऽ कि हमरा तप के भंग कइल चाहति बा? अन्हार रहित त जोगाड़ो लगइतीं। अबे त घरी भर दिन बा। अकुतइला से काम बिगरी।' कामदेव आपन काम सेना लेइके बाबा का मन पर चढ़ाई कइ चुकल रहलन। बाबा का बुझाय कि केहू उनका कान में कहि रहल बा– 'दुनियां से भागि के गोफा में का लुकाइल बाड़ऽ। तप क जगहि निरजन जंगल ना ठहरल। जहंवा दुनिया क बजारि लागलि बा ओइजा रहि के जे अपना मन के जीति सके ऊ न महतमा ह। सिरिहिटी का नियम ले उलटा चलि के जिनिगी के नीरस मति बनावऽ। भइल से भइल अबहियो त सजग होखऽ। ... मँवनी बाबा का मन में ई बाति भासि गइलि। उनहूं का ठीक बुझाइल कि हम मनु महराज, आ शंकर जी ले बढ़ि के थोरे बानी!...।

●●●

पड़ाइनि नहाइ के अपना दल का साथे मँवनी बाबा का मड़ई का ओर चले लगली। तनी–तनी किरिनि रहलि त पदुमनाभ का पँजरा पहुँचली। थाकि गइल रहली एह से तालाब ले थोरे दूर आगा बढ़िके एगो बर का फेड़ तर सुहताये लगली। एइजा उनकरा बाबा किहें ले लवटे वाला जातिरिन से मालुम भइल कि आजु बाबा क दरसन भइल कठिन बा। तीनि–चारि गो बूढ़ असरा लगवले बइठल बाड़न। अउरी सभ लवटि आइल। पड़ाइनि सोचली कि सवँसे जमाति लेइ के लवटल आ फेर आइल असमान क तरई तोरल बा। एह ले नीमन बा कि पदुमनाभ किहें ठहरल जाय। जब शंख बाजी त पारा–पारी मड़ई में जाइ के दरसन कइ आवे के।

४

एइजा त मँवनी बाबा गोफा में बइठि के मन का बेग से कठिन लड़ाई लड़त रहलन। कबे जीतसु; कबे हारसु। आधा राति भइलि त शंख बाजल।

पड़ाइनि अपना दल में सलाह कइली कि दूइ–दूइ आदिमी पारी–पारी से जाइ के दरसन करो। सबकरा ले पहिले पड़ाइनि आ भगजोगनी काकी गइली जा आ दरसन कइ के भभूति लिहले लवटि अइलि जा। कले–कले सभ आपन पारी भुगतावे लागत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आखिर में रामलगन का बेटी फुलझरिया क पारी आइलि। फुलझरिया जवानी का मद में डोलत आ चुलबुलात गोफा का ओर चललि। मँवनी बाबा जंगल का सुरंग क फाटक खोलि के मिलन का पियासि से बियाकुल भइल मिरिगंछाला पर बइठि कि फुलझरिया क राह देखत रहलन। एक हाथ में रुदराछ क माला लेइ के जपत आ दूसरा से कुंड में दसांगि डालत रहलन।

जइसहीं फुलझरिया पहुँचलि माला उनकरा हाथ ले नीचे गिरि परल। दसांगि क डिब्बा फरका धराइ गइल। 'देवी आवऽ बइठि जा'। कहि के बाबा कूस कऽ आसनी फुलझरिया का ओर टारि दिहलन। ऊ बेचारि लइकी बाबा कऽ चालि का समुझति रहे? ओकरा का मालुम कि बाबा पूड़ी—पराठा कऽ भोग लगावे वाला ठहरलनि? कले—कले फुलझरिया का ओर हाथ बढ़वलन आ आपन मिरिगछाला पँजरा खींचि ले अइलन। बाबा जब कहलन कि 'देवी हमरा से कवन बेजाँइ भइल बा कि नँइखू बोलत? हम तोहार सेवा कइल चाहत बानीं। दया क आँखि खोलि के हमरा सुखल जिनिगी के हरियर बनावऽ। तूँ कलपलता ठहरलू...। आवऽ एक चुम्मा दऽ।' फुलझरिया बाबा कऽ रंग; कुरंग देखि के जइसहीं चिचियाये के चहलसि तबले दीया बुताइ गइलि। बाबा उठि खड़ा भइलन आ सोरह बरिस का अपसरा के अंकवारि में दाबि के जंगल का सुरंग में पइठि गइलन। फुलझरिया चिचिआइल बाकी सुरंग कऽ फाटक बंद हो गइल। बाबा का पास चोरबत्ती रहे एह से अपना असली जगहि पर पहुँचि के (जहाँ सूतसु) आपन पियासि मेंटवलन। एह अन्हार खोह में आधा राति का बेरा केहू पहुँचे वाला ना रहल। फुलझरिया रोवति रहे आ बाबा छूट क लकड़ी खेले में मस्त रहलन। एह रस का आगा दुनियां कऽ सभ पदारथ झूठ साबित भइल। बाबा के अपना जिनिगी का तप कऽ फल मीलल।

●●●

फुलझरिया का चिचिअइला का सबद के सुनते पड़ाइनि दूइ—चरि गो मरद—मानुस लेइके दउरली कि जंगली जानवर त ना छेंकलसि? जब पदुमनाभ कुंड ले लालटेनि लेइ के लोग बाबा किहें पहुँचल त गोफा क फाटक खुलल रहे। बाबा ना रहलन। अब बाबा का तप क पोल खुले में देरी ना रहे। चारों ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोजि के सभ हयरान हो गइल फुलझरिया ना मीललि न बाबा कऽ पता लागल।

पहर भर राति रहे। सभ आपुस में इहे बतियावत रहे कि 'मँवनिया दगा कइलसि। बिहान होखे त ससुर के खोजि के बोटी–बोटी काटि दिहल जाय। एह ढोंगी साधु ससुरन का मारे बेटी–बहिनि कऽ इज्जति बाँचल कठिन बा।

मँवनी बाबा फुलझरिया कऽ इज्जति खराब कइके छोड़ल चहलन। फुलझरिया उनकर नीयति जानि के कलपे लागलि। 'साधु महाराज कइलऽ तवन नीमने कइलऽ। अब हमरा के छोड़बऽ त गलि जइबऽ। हम कहँवा जाईं? जूठ फूल के; के पूछी? तपसी रहलऽ हऽ, तोहरा अइसन नीच काम ना करे के चाहत रहल हऽ! हमार घर–दुवार, बाप–महँतारी सभ छोड़वलऽ...।'

फुलझरिया कऽ रोवल अकारथ गइल। साधु का रुप में ऊ राछछ बेचारी लइकी के पदुमनाभ ले एक कोस आगा एगो पीपर का पेड़ तर छोड़ि के जंगल कऽ राह नपलसि।

बिहान भइला घरी–दूघरी खोजला का बाद जब कतहीं पड़ाइनि के लइकी कऽ पता ना मीलल त झंख मारि के रोवत–कलपत ओगा बढ़ली।

फुलझरिया राह में अकेले बइठि के जार–बेजार रोवति रहे। पड़ाइनि कऽ राह पँजरे होइ के गइल रहे। मेहरारू क रोवल सूनि के उनका सुबहा भइल कि 'के हउवे तनी देखि त लीं?' जब आगे बढ़सु त देखत बाड़ी कि फुलझरिया..।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतवारू दादा

संगी—साथी, हीत—गन सभकरा किहें नेंवता घूमि गइल कि बइसाख सुदी तेरस, बुध दिन के चउधुरी कतवारू राय—रसेन क वियाह, जिला गाजीपुर मउजा समहुती राम लगन राय का लइकी से होई।

दादा का उमिरि में ई उनकर तीसरा बियाह रहल। मन का होसिला का मोताबिक बियाह क पूरा तइयारी होति हरे। कतवारू राय घर कऽ पूरा सूचित गिरहस्त रहलन। हाथ पूरा खुसफइल रहल। गहना, नाँचि—बाजा सभ चीज कऽ पूरा तइयारी भइलि। बराति में घोड़ा—हाथी क पूरा जुटाव होखे लागल।

मंगर दिन दुवादसी के भतवानि रहलि। भतवानि के भाई क भोज होला। बरी—मूँछी, फुलवरा आ चटनी क तइयारी कइ के सभ के खियावत—पियावत तिजहरिया होइ चलल। घर में तीनि गो मेहरारू रहली स। एगो गहना—गीठो सरियावे आ सीधा—पिसान देबे में बाझलि रहे। दूसरी जानी अइघाइल रहली। उनकरा पितर नेवते के रहे। बाकी बँचली एकजानी, घर क कुल्हि भार उनहीं पर रहल। दउरि के भंडार घर में जासु त दउरि के बहरा आवसु। काम का फिकिरि से जीव पर गरहन लागल रहे।

साँझि होत देखि के कतवारूदादा पूरा अकुताइल रहलन। उनकर मन त रिकेब पर रहे, 'कब बराति चली? काहें एतना देरी होति बा?' इहे सोचि—सोचि हयरान होत रहलन।

महादेव दुवार पर क खबास आ दादा क मुँहलगुवा—मँसखरा रहलनि। दादा उनकरा के बड़ा मानसु। कवनो बाति परे त उनकरा से जरुर सलाह लेसु। महादेव एह बराति के इनतिजाम करे वालन में मुखपात रहलन। ऊ दादा के भइया कहसु। कतवारू दादा क पुकारल सुनि के दउरल अइलन— 'का कहत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़ऽ भइया?'

चउपट कइके भइया कहे चलल बाड़ऽ। हम त तोहके चलाँक जानत रहलीं हँ जगरनाथ का अकिलि में परि के तोहरो बुद्धि मॉटी हो गइलि। एइजे दूपहर हो जाई त बराति कब पहुँची?'

'भइया अब देरी नँइखे। लावा भूँजाइ गइल। माँटी कोड़ाये गइलि बा। अइले भर क देरी जानऽ। नँहछू—नहावन होई आ चलल जाई'

देखऽ फुरदी करऽ जा। अबेरि होई त घाम आ भुँभुरि में मरे के परी।'

महादेव, दादा किहें ले लवटि के अइलन तबले मेहरारू माँटी कोड़ि के आइ गइलि रहली स। देवसरन बो अहिरिनि बियहुती दही लेइ के पहुँचली नँहछू—नहावन के टोटरम पूरा करे क तइयारी होखे लागलि। कतवारू दादा क बहिनि कुदारी लेइ के माँड़ों का पँजरे अंगना का एगो कोना में तीनि छेव माँटी काटि के पोखरा खनली। पोखरा पर जुवाठि धइलि गइलि। दादा नहाये चललन। मेहरारू गीति गावत रहली सऽ। कतवारूदादा फूलि के अदवरी भइल रहलन। उनकर गोड़ भुँइयाँ ना परे जल्दी—जल्दी नहइला कऽ टोटरम पूरा भइल। एकरा बाद इमिली—घोंटावल गइल। महादेव कऽ बेटा सुमेर बारी नँहछू—नहावन क पानी एगो कोर नादी में मूँदि लिहलन।

●●●

इहेकुल करत—धरत आधा ले अधिक राति बीति गइलि। नेंवतहरी आ बरतिहन में जे पयदल चले वाला रहे ऊ आपन राह नापल। सर—समान कऽ गाड़ी लादि—पाथि के तइयार रहली स। बयलन का खाये में आधाघरी क देरि रहे। महादेव कहाँरन के लियाइ आवे गइल रहलन। परिछावन के देरी होति रहे। बूढ़ आदिमी, कँहार आ असवारी लिहले दउरत—हाँफत पहुँचि गइलन।

'कतवारू भइया असवारी आइलि। चलऽ बइठऽ नाहीं त परिछावन में देरी कइला पर बिहान हो जाई। चुहचुहिया बोलति बा।'

मने—मन गाजत—मुसकियात दादा मउर पहिरि के असवारी में बइठलन।

महादेव, अ्सवारी का संगे के चलत बा?

'भइया, असवारी का संगे त सहदेव कमकर क बेटा बूटन रहत बाड़न। हमरा के जनि बेलमावऽ। गाड़ी हरपुर का पूलि पर पहुँचल होइहँन स। संग छुटला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर दउरत–दउरत मरि जाइब' इहे कहि के महादेव आगे बढ़लन त अबे दस डेग गइल होइहन तबले दादा पुकरलन।

महादेव पुकारल सूनि के खीसिन बुत्त भइल लवटि के अइलन।

'भइया, काहे के बोलवलऽ ह, कहऽ ना?

'महादेव इहे कहे खातिर बोलवलीं हँ कि डाल संगे के बा? देखिहऽ तूँ खास तनदेही रखिहऽ। जगरनाथ का भर पर मति छोड़िहऽ।

'भइया बेफिकिरि रहऽ। डाल क सनूखि बंद कइ के जगरनाथ बबुआ के दे देले बानी। ऊ बाकस जवना गाड़ी पर बा ओकरा पर चारि गो मूँसारोईं जवान लाठी–भाला सहित सजग होइ के बइठल बाड़न। पाछा ले नेवतहरी–बरतिहन क गाड़ी बाड़ी स।'

'जा देरी मति करऽ। महादेव, एक बाति तोहके अउरी सरेखि देत बानी। आर–पार क ममिला बा। सभ समान तनदेही से उतरि जाये के चाही। हम त बारे घाटि उतरबि। समान क गाड़ी चउसा उतारे में ठीक परी।

देखिहऽ जगरनाथ गँवार ठहलन, दस–पांच खातिर घटवार से रकझक न होखे पावे। कहि दीहऽ जे बाबूजी बरिजले बाड़न। कँटरोल क जमाना, बराति क केतना चीज–बतुस आर–पार करे के परिहन स। रोज–रोज क सरोकार बा मोंट कइला से घटी छोड़ि के नफा ना होई।'

२

पहिलही तय हो गइल रहे कि ओह पार' चलि के भाँवरकोल ठकुरवारी पर पड़ाव रही। नेवता घूमल तवनों मे इहे लिखल रहे। कतवारू दादा क असवारी पहर भर दिन चढ़त–चढ़त पड़ाव पर पहुँच गइलि। असवारी में दादा का नगीची दयाद खेदूराय क छोट नाति बइठल रहल? लइका क जीव छने भर पर पियासि लागे के ठहरल। असवारी धरते 'खाइबि' कहि के ठुनुके लागल। कहाँर थाकल रहलनि सऽ एह से पीपर तर हवगरा जाइ के बइठल रहलन स। बूटन कमकर उन्हने संगे बइठि के गाँजा मलत रहलन।

लइका के ठुनुकत देखि के कतवारू दादा बूटन के पुकरलन। 'का ह दादा, काहे के बोलवल हऽ?

बूटन, समान क गाड़ी अबे पहुंचबे ना कइली स आ लइका खइला बिना रोवत बा। कवनो उपाइ करऽ'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ले जा खियाइ दऽ। कहाँर गाँजा माँगत बाड़न स। एकाध चीलमि क उपाइ करऽ। जगरनाथ का काम से त कुफुति का मारे मिजाज लहकि रहल बा अपना जमला–बढ़ला क ई हालि हऽ।'

●●●

जेठ– बइसाख क दिन खड़खड़िया नाचे लागलि। जहर नियर तेज घाम भइल रहे। पछिवाँ हहकारत रहल। घाम का मारे हाँफत आ पसीना से तर–बतर भइल बरतिहा लोग कले–कले पड़ाव पर पहुँचे लागल। तीनि गो असवारी जवना में कतवारू दादा का समधियान क लोग रहे आ दूइ गो गाड़ी पहिले पहुंचली स। रसदि, हंडा–बरतन आ चीनी–मिठाई कऽ गाड़ी अबे पिछुवाइलि रहलि।

लोग थाकल रहे; एह से सभ जहाँ–तहाँ बइठि के सुहताये लागल। थोर ही देर में लोग का ठंडा होत–होत ले समानो क गाड़ी पहुँचि गइलि। जे जइसन रहे ओकरा मोताबिक खाये क तइयारी होखे लागलि। कतहीं हंडा चढ़ल भात बने लागल कतहीं भउरी–मँकुनी पटकाये लागलि। 'केहू सतुवे घोरे लागल। खात–पीयत में बेरि लरकि चललि। अबे भाँवरकोल पड़ाव ले समहुती तीन कोस रहे। बड़ा फुरदी कइला पर बराति दुवरपूजा का बेरा पहुँचित।

कहँरिया –बजनियां सभ लिहले बराति में दूई–अढ़ाई सव आदिमी हो गइल रहलन। दूइगो हाथी आ पांच गो घोड़ा रहलन स। रंडी आ भाड़ दूई गरोह नांचि भइल रहे, एही से ढेर खलक जुटे क जोग रहल। चले क समय होत देखि के सभ ओढ़े पहिरे लागल। बरतिहा लोग अपना–अपना सवख का मोताबिक तइयारी करत रहलन, बाकी कतवारू दादा क सवख सभकर कान कटले रहे। बुझात रहे कि उनकर सवख आ साध पूरे ना होई। पटना ले दांत बनवाइके मँगले रहलन। बार करिया करे खातिर खेजाब आइल रहल। दादा जगरनाथ के बोलवलन।

'जगरनाथ हेने सूनऽ। का करत बाड़ऽ ?'

'बाबूजी, का कहत बानी ? हंडा बरतन लदवाइ के गाड़ी खोलवावे का फेर में रहली हँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एही खातिर बोलवली हँ कि सनूखि खोलि के नयका दांत द लगाइ लेईं। खेजाबो एक बेरि अउरी लगाइ द।

बार उदास लागी आ लोग जानी कि पाकल ह त बड़ा नमूसी होई।

जगरनाथ झटकि के बकसा में ले नया दांत ले गइलन। 'बाबूजी लेईं दांत लगा लेईं'।

'खेजाब ना ले अइल हऽ ?'

'खेजाब त एकबेर क लगवले बा, ढ़ेर हो गइला से फूघर लागी।

जगरनाथ कऽ बाति सुनि के दादा का एड़ी—कपार ले आगि लागि गइलि। भरल सभा में का बोलसु भीतरे मँसमँसाइ के रहि गइलन। टोल—परोस भा देहाति—जवार का लोग कऽ बिरही—बोली सुनि के त कतवारू राय क कान पाकिये गइल रहे। जगरनाथ आपन जामल रहलन उनकर छेड़खानी आगि में घीव कऽ काम कइलसि। दादा के खिझियाइल देखि के जगरनाथ माँफी मँगलन आ दोहराइ के खेजाब लगाइ दिहलन।

कुल्हि तइयारी पूरा कइके बराति समहुती का ओर रवाना भइलि। सभ काम त ठीक रहे, बाकी बियाह करावे वाला सहबाजपुर क उपरोहित अब ले ना पहुँचलन। जगरनाथ उनका ना अइला से बड़ा फेर में परलन। आखिर में अफनाइ के कठार सीवगोबिन पंडित के पुरजी लिखलन। बूटन कमकर पुरजी लेइ के कठार चललन। दस बिगहा गइल होइहँन तव ले दउरत—हाँफत उपरोहित चलि आवत रहलन। बूटन, बाबाजी के आवत देखि के लवटि अइलन।

जइसही उपरोहित जी पहुँचलन तवले जगरनाथ राय उठि खड़ा भइलन आ चलते—चलते पूछे लगलन:

का महाराज रउवा त नीक उपरोहित बानी? एही लूरि से जजमनिका सम्हारबि? जजमान लोग रउरे नियर उपरोहित का भर पर रहसु त उनकर नीक बियाह होई। ' का कहीं जजमान, खिसियाइलि बेजांइ नँइखे। बाकी आज त दइब देरी करवलनि हँ। चउबाइन का फसिली हो गइल रहलि हं। केहू एक लोटा पानी तक देनिहार ना रहल हऽ। कुछ फुरसति भइलि ह त दउरल चलि आवत बानी।'

३

मिरिजाबाद क रमजान मियां, पहर भर दिन रहे तबे क आइ के तम्मू आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावटी गाड़ि के बइठल रहलन। सुरूज क किरिन झुकझुकाये लागलि। पच्छिम ओर क असमान आखिरी लाली से लाल होइ चलल कतहीं लाल, कतही पीयर आ हरियर रंग छन भर खातिर मुसकियाइ के लोप होत–जात रहलन। एह घरी क शोभा दादा का जिनिगी क मोकाबिला करति रहे, जे अपना चउथ पहर में छनभर खातिर लाल–पीयर रंग में उतान भइल फिरत रहलन। पइसा का बल पर एह उमिरि में बारह बरिस का लोच बहुरिया से बियाह कइ के मन क साध पूरा करे चलल रहलन।

बराति गांव का गोंयड़ा पहुंचि गइलि। घोड़दवलि होति रहे इरगा कदम आ सरपट क तमासबीन हजारों–हजार रहलन। एक ओर बेटहा क लोग खड़ा रहे आ दूसरा डाँड़ पर बेटिहा कऽ। कुछ देरि में घोड़दवलि खतम भइल। बराति मिलि–जुलि के दुवारे लागे चललि।

आगा–आगा बर कऽ असवारी चललि गाँव कऽ लइका–लइकी बर का असवारी का संगे दउरलनिस कि बर देखीं जा सयान लोग डाँटत रहे कि बचि के दउरऽ स नाही त घोड़ा–हाथी बाड़न कँड़ाइ जइबऽ स।

चारों ओर हल्लाकूह मँचल बा। लइका–जवान, बूड़ सभ कतवारू राय का ओर अंगुरी देखाइ के कहि रहल बा– 'हउहे बर हऽ का? बूढ़ जनात बा।' रामलगन के अइसने बर मिलल हऽ? मेहरारू घर का दुवारि पर खड़ा होइ के बर के देखे खातिर अकुताइलि रहली सऽ। जे लजारि रहे से खिरकी–झँखिया पड़े झाँकत रहे।

कतवारू दादा मोंछि में खेजाब लगाइ के छँटवले, कपार पर मउर धइ के असवारी में बइठि के मुसकियात चलि जात रहलन। केतने नवहा 'वाह रे बाबा!, धनि हऽ ससुर! हई देखऽ दमाद!' कहि के थपरी बजावत बेटिहा का दुवार का ओर बढ़लन। जहां देखल जाय, मरद–मेहरारू सभ, बरातिये क बाति बतियावत बा। – 'बराति त बड़ा नीक आइलि बा। हाथी–घोड़ा, बाजा–नाँचि, नोकर–चाकर भा बरतिहा, सभ बाति से पूरा लउकति बा।' दसरथ बो काकी क ई बाति सुनि के पशुपति बो का आगि लागि गइलि। ऊ बे जबाब दिहले कइसे रहिती?

'चाची, बराति त जरूर ठीक बा, बाकी कुल्हि रहिये के का करी जब बरवे बूढ़ बा। एहले त नीमन होइत कि नान्ह का हाथे भठियाइ दिहितन। नान्हों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किहें रहला पर ओकरा के दुख त ना होइत।' पशुपति बो कऽ बाति सूनि के चाची बोलली:—

'ए रउताइनि, अइसे काहें कहत बाड़ू । बर बूढ़ नँइखे । अबे त आँखि ठेहुन सभ ठीक बा। एगो—दूगो बार तिलकला से जानत बाड़ू कि बूढ़ हो गइल? एहू ले जलजल कऽ बियाह होत बा।' दशरथ बो चाची कऽ बाति सुनि के रउताइन तड़ातड़ी उनकर' मुहतोड़ जवाब दिहली — ए चउधुराइनि, रउरे नँइखीं समुझत। चिलमि जवना पर अंगारी चढ़े ले ऊहे बताइ सकति बा कि आगि कइसन होले। दांत बनवला, सुरमा कइला आ बार रंगला से जानत बाड़ू जे जवान बा? हमरा नियर सासु रहिति त जरते लुवाठ लेइके अइसना बर क मुँह झँउसि दिहिती। रामलगन ले अमहक के होई जे तीनि बिगहा खेत गुलजार साहु के रेहन लिखलन, पांच सइ नगद गीने के परल तबो अइसने बर मिलल।'

एतने में रउताइनि के ननदि सिलगनी बोललि:— 'जानत नइखू भउजी, मरद त खीसा करेलनि स कि बेटी—बहारन, जेतना जल्दी हो सके छटवले क मोल ह। गंगजली आजु जो, बेटा बनि के जामल रहिति त ओकर ई दुरदसा ना होइत कि बूढ़ संगे भठियावल जाइति। मेहरारू, मरद का मन—मोताबिक चले, खोभसना सहे आ जुलुम बरदास करे खातिर बनावलि बा।'

●●●

एक दिन रामलगन राय क जमाना अइसन चमकल रहे कि दुवार पर देवड़ी लागे। कहीं भाँगि—बदाम छनात बा त कहीं गाँजा क चिलमि दगदगाइलि बा। आज उनहीं कऽ ई दसा हो गइल कि खायक—कपड़ा मोहाल हो गइल। गुलजार साहु के तीनि बिगहा खेत रेहन लिखलन हँ त बेटी क जोगाड़ भइल ह। खाये—पीये में हर सालि एक—दूइ बिगहा घँसाते बा। एह बियाह का बाद अबे दूइ जानी भवानी अउरी बाड़ी।

समय क फेर ह कि जे कबो क तरवा सुहुरवले ह, हाथ जोरि के पाछा—पाछा घूमल ह—ऊहे आजु बातियो पूछे के तइयार नँइखे। हीत—गन, आ भाई—भयवद सभ गारी देत बा कि केतनो हाथ सकेत रहल ह त का, अइसन सुकुवार लइकी के एह किसिम क बर ना चाहत रहल ह। बाप—बेटी का उमिरि कऽ फरक बा। एह ले नीमन होइत जे खायक में माहुर दिहल रहित, केहू जनबो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना करित आ दूनो क जीव बाँचित।

●●●

दुवार–पूजा खतम भइल। बरतिहा तंम्मू में पहुँचि के आपन सिलखिला बइठावे लगलन। जल–पानी पियला का बाद मँहफिल बइठलि। रंडी नाचे लागलि, सभकर इहे राइ भइल कि भाँड़ क नाँचि पाछे होई। केहू अँतर–गुलाब छिरिके लागल त केहू पान आ पँचमेवा बाँटे लागल।

जवार–मंथार में एह बराति क पूरा सोर रहे। बनारस कऽ नामी भांड़ आ रंडी दूइ गरोह नांचि क बात सूनि के पाँच–पाँच कोस ले चलि के हजारों आदिमी तमासा देखे पहुँचल रहलन। तम्मू का चारो ओर एतना भीड़ि जमा हो गइलि कि भीतर का लोगन के हवा तक पहुँचल कठिन रहे। दूइ आदिमी ताड़ क बड़का पंखा लेइ के दूनो ओर ले हाँकत रहलन। 'ओह भीड़ि में एतना से का होखे के रहे? पसीना से सभकर कपड़ा–लत्ता भींजि चलल।

एही घरी बेटिहा का ओर क लोग अगेंया मांगे अइलन बर का आगा एगो लोटा में जल आ बीस गो रुपया धराइल। एगो पनिहा में पांच जोड़ी सोहारी, थोरे मिठाई आ चीनी, दूसरा पनिहा में दूइ सेर खइनी, दूइ सेर पियनी, दस बंडिल बीड़ी आ सिगरेट चउधुरी जगरनाथ राय का सामने धइल गइल। एकरा अलावे घोड़न खातिर भूसा, रहिला भा हाथी खातिर चाउर–गूर जवन समान रहे तम्मू में भेजवावल रहे।

जे आपन लाख रुपया क इज्जति संउपि देत बा, ओकरा से अब दूसर का पावें के चाही? एतनो पर हमन का समाज में अइसन रेवाज हो गइल बा कि जवना बराति में रूसा–फूली ना भइल ऊ पूरा ना समझल जाय।

का जाने एकरा में कवन मरजाद बा? लालच का करते आदिमी पशु ले बेहज हो गइल बा। जे गरीब बा ओकर पानी बांचल कठिन बा। तिलक–दहेज खातिर बयल–गाइ क मोल होत बा। सभ मीलि के रामलगन राय के खोभसत रहे बाकी ओह बेचारू क कवन दोस कहल जाय? बेटी उनका गर क केवांछ भइल रहली स। बियाह ना करितन त सभ गारी देइत कि ससुरा क बेटी सयान भइलि बियाह नँइखे करत।' कुल्हि समान जहां ले सँपरल पहुंचत गइल तबो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दादा क खास–खवास महादेव गांजा का पाछा रूसि गइल रहलन। बराति बिगड़लि चाहति रहे। दूनो ओर क रईस आ सरदार महादेव के समुझाइ के थाकि गइलन बाकी उनकर माने क कवनो ठेकान ना बुझाय।

आखिरकार रामलगन राय ओही घरी सांइकिल से एक आदिमी महमदाबाद भेजि के गांजा मँगवलनि।

जब महादेव के सात भर गांजा मीलल त बराति मानलि आ अगेयां मंजूर भइल।

पहर भर राति का बाद भदरा चढ़त रहे आ दूइ घरी दिन चढ़ला पर उतरित, इहे सोचि के बेटिहा आ बेटहा दूनों ओर क लोग अकुताइल रहे कि बियाह कऽ काम ओरियाइ जाय। अंगना में ढेर भीड़ि न होखे पावे एह से तम्मू में भाड़ कऽ नांचि खड़ा कराइ दियाइल कि लोग देखे में बाझल रहिहँन तवले बियाह आ बीजे दूनू हो जाई। कुछ आदिमी बियाह सम्हारी बाकी लोग दूसरा दलानि में खियावे क उपाइ करिहँन। अइसे ना कइला से खलक एतना जुटल बाड़न कि इज्जति बांचल कठिन बा। केकरा के कहल जाइ जे तू नेवतहरी ना तमसबीन हउवऽ

●●●

मांड़ो में बियाह होखे लागल आ तंमू में भाड़ कऽ नांचि। भाड़न क तमासा देखि के लोग गिरि–गिरि परे। एगो बूढ़ बर बनल, दूसरका अगुवा, तीसरा गनना गनेवाला पंडित।,

अगुवा बनल रहल ऊ पंडित किहे जाइ के रासि क आ पुकार क नांव बताइ के गनना गने के कहे लागल।

पंडित जी दूइगो रुपया धरवाइ के पतरा निकललन तवले इयाद परल– 'जजमान, केकर गनना गनी? बर त चारि किसिम क होलन।'

अगुवा बनल रहे तवन बोलल – 'हम त एक ही किसिम कऽ जानत रहली हँ।

पंडित बनल रहल तबन बोलत बा– 'नांही, नांही, बर चारि किसिम क होलन। बर, बरनाठ, झरनाठ, खोरनाठ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अँगुरी तीनि-चारि बेर पोरे–पोर घुमाइ के –'मेख, बृख, मिथुना, दू लउरि कपार पर दू लउरि भुभुना।' जजमान साइति आ गनना ठीक बुझात बा।

●●●

कतवारू दादा मांथ पर मउर धइ के चउका पर बइठल रहलन। दूसरा ओर नाउनि परदा का आड़ में कनिया के धइले बइठवले रहलि। पंडित लोग बियाह करावे लागल। पहिले गुरहथ भइल ओकरा बाद डाल क पूजा भइल। गहना कऽ का पूछे के रहे। कतवारू राय पनरह थान सोना आ दस थान चानी कऽ एकदम नया गहना ले गइल रहलन। एही पर त उनका हाथ मारे के रहे।

कतवारू दादा आपन होसिला पूरा करे खातिर नांचि–तंमू भा गाजा–बाजा ले आइल रहलन। रामलगन राय त पहिलहीं कहि चुकल रहलन किहमरा मरजाद ना सहे।

घरी भर दिन चढ़ला का बाद भदरा उतरला पर बराति आ कनियां क बिदागिरी होखे के रहल। रामलगन राय अपना सर–गंव का मोताबिक कुंड़ा–झापी आ लूगा–फाटा क तइयारी कइ चुकल रहलन। मेहरारू मोना–झांपी सरियावे में बाझल रहली स।

बेटी क बिदागिरी दुख क घर होइ जाला। घर में रोवा–रोहटि सुरू भइल रहे गंगजली क नइहर छूटे के रहे। ऊ सभका के भेंटति रहे। ओकरा दुःख के इयाद कइ के करेजा कांपि जात बा। गंगजली का बाप महंतारी से फरका होइ के अनजान घर में जाये के रहे। ओकर सुख सपना हो गइल। एक दिन इहे गंगजली अपना सखिन संगे मँवनापुतरी कऽ बियाह करावे आ चुक्की में दालि–भात बने। सीधा–पिसान का जगहि पर खोरि क धूरि रहे। आज ऊ सुख कहां बा? बहरा–भीतर जहंवा ओकरा मन करे जाय। कबे लइकिन संगे साईं का तकिया पर बइरि बीने जाय त कबे महँतारी संगे पोखरा नहाये आ शिव जी के दीया बारे।

कबे बानर–भालु नँचावे वाला आवे त दउरि के ओइजा जाय। अब ई कुल्हि सपना होत रहे। नइहर क छोड़ल ओकरा केतना अखरत रहे– ऊहे बताइ सकति रहे।

घर का एगो कोना में गंगजली क माई दुख से घाही होइ के गिरलि रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंगजली सभकरा के भेंटि के अब अपना बाबूजी के भेंटति रहलि। जेतना दूर में ओकर कुहुंकल आ पुक्का फारि के रोवल सुनाई पड़े सभकरा आंखन ले लोर बहि चले।

●●●

इहे कुल करत– धरत किरिनि फूटि गइलि। बराति क लोग गाड़ी पर सभ गठरी–मोटरी लादि के साइति तिकवत रहलन कि बिदागिरी होखे त चलल जाय।

पहर भर दिन चढ़त–चढ़त बिदागिरी हो गइलि। आगा गंगजली रोवत असवारी में बइठि के चललि पाछा ले कतवारू राय आ हीत लोग क असवारी रहली स।

६

सलाह क मोंताबिक लवटे का बेर बराति क पड़ाव बीरपुर रहे। बराति आ असवारी बीरपुर पहुंचत–पहुंचत तिजहरिया हो गइल। गरमी क दिन, राह चलल कठिन रहल। सभ इहे कहल कि जुड़ासी होई त चलल जाई। अंजोरिया राति बा, कवनो बाति क डर नँइखे।

कुछ लोग कहल 'कतवारू राय क असवारी आ कनियां क असवारी पहिले चलि जाय।' – दादा एह बाति के काटि दिहलन। उनकर राइ भइल कि सभ बराति संगे चली।

घरी भर दिन रहल त बराति गंगा पार भइलि। एह पार चउसा पहुंचत–पहुंचत किरिनि झुकझुकाये लागलि। दादा कहलन कि बराति नहरि धइ के चले, पटरउल भा ओसियर अइहँन त पांच रूपया चटाइ, दियाई बस काम बनले बा।

अंजोरिया उगि गइलि। पयदल चलेवाला लोग त तिरछा पगडंडी पकड़ि के चललन बाकी बयल गाड़ी आ असवारी नहरि पकड़ि के चललि। सरेंजा से राजपुर का पूलि तक त सड़कि रहलि–एह से ऊहे पकड़ि के चलल ठीक बुझाइल ओकरा बाद त नहरि पकड़हीं के रहे।

सरेजा ले एक कोस आगा बढ़ला पर सड़कि पर थोरे दूर ले बन परे ला, ओइजा पक्का इनार आ एगो पलानी बा। बराति बीरपुर से पार उतरलि, तहंवे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले सटीका वाला पाछा परल रहलन। बयलगाड़ी कुछ पछुवाइ गइलि। कहांर गांजा का दम पर आगा बढ़लनि स।

गहना क पेटी दादा का सवारी में धइलि रहे। लोग कहल कि 'कनियां लइकी बा राति क मामिला, का जाने सूति गइलि त जमा गायब हो जाई। जइसहीं असवारी बन का सोझा पहुंचलि तबले बीस गो मूंसा रोई जवान मड़ई में ले निकलि के असवारी रोक दिहलनि स। दादा चिचिइलन, एतने में पाछा क लोग गाड़ी पर ले उतरि के दउरल।

ओह लोग का पहुंचे ले पहिलहीं चोर दादा क कक्कन छोड़ाइ दिहलन स आ गहना क बाकस लेई के नव–दू–एगारह। जगरनाथ राय, महादेव आ संग क तीनों पहलवान पहुंचि के देखत बाड़न कि दादा क कपार फाटि के खून बहि रहल बा। खून से सँवसे कपड़ा रंगाइ गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसान—भगवान

बाबू दलसिंगार राय बड़ा जुलुमी जमींदार रहलन। ओहू में अंगरेजी पढ़ल—लिखल आ वोकीली पास। एगो त करइला अपने तीत दूसरे चढ़ल नीबि पर। बाबू साहेब क अपना जिमिदारी में जेठ—वाली दुपहरिया का सुरूज नियर तपलि रहे। हरी— बेगारी, नजराना—सलामी भा दही—दूध वसूल कइल त मामूली बाति रहलि। पियादा,पटवारी आ तसिलदार लोग क त पांचो हरदम घीव में डूबलि रहे। दही—दूध आ साग—तरकारी खात—खात मन उबियाइ जाय। साच पूछल जाय त ऊहे खीसा रहे कि 'दही दूध तोरा मँथान बाजे मोरा'। जे एह कुल्हि का उलटा तनिको सुगबुगाय आ गरदनि ऊपर कइल चाहे, बाबू साहेब कऽ लठइत सिपाही ओकर अइसन खातिर कइ देसु कि छव महीना हरदी—गूर पीये के परे।

सरकारी कनून का आंखि में धूरि झोंकि के हाकिम लोगन के मिलावल भा कँगरेस का नेता लोग के बस में कइल त उनका बायां हाथ कऽ खेलि रहे।

बाबू साहेब पूरा मालदार रहलन। उनका कवनो बाति कऽ कमी ना रहे कि वोकीली करे जासु। घर ही धन—दउलति क गंगा—जमुना बहलि रहली। कवना दुखे वोकीली करे जइतँन? ऊ त अपना जमींदारी क काम सम्हारे का सवख से एतना पढ़ले रहलन। पचीसों नोकर उनका इसारा से एक गोड़ पर नाचे वाला रहलन। बाबू साहेब क हजारों रुपया त दरबार का सजावट आ सिंगार—पटार में खरच होखे। सयकड़ों रुपया, मोर, तोता, बुलबुल भा बिलाइती कुक्कुरन का पोसला में लागे। उनकरा कुक्कुर तक खातिर नेवार कऽ पलंगरी आ तोसक—तकिया रहल। रोज अनगुतहां ओकरा खरमेंटाव खातिर चानी का कटोरी में दूध—बदाम आ मिसिरीं दिहल जाय। सात दिन पर डाकदर आइ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखसु जे कवनो किसिम क बेमारी त नंइखे भइलि।

बाबू साहेब क दरबार वाजिदअली साह का नबाबी दरबार ले कवनो बाति में कम ना रहे। दरबार में अँतर क पोचारा होखे आ गुलाब जल से पयखाना धोयल जाय। बाबू साहेब का रंडिन क मोजरा आ भांड़ का नाचि क काफी सवख रहल।

आज लखनऊ कऽ रंडी आइलि बा त काल्हि बनारस कऽ भाँड़, रोज इहे रोजिगार लागल रहे। बाबू साहेब का ओर ले हाकिमन के दावति दियाइ रहलि बा, दुवार पर दरोगा, निसपेटर आ मजिस्टर नियर अफसरन कऽ महफिल लागलि बा। बोतल पर बोतल ढरि रहल बा। कहे क मतलब कि रुपया पानी नियर बहावल जाय। कही कँगरेसी नेता लोग क थइली भरि के काम निकालल जात बा त केनियों संघ आ हिन्दू सभा के सयकड़ों रुपया चंदा दियाइ रहल बा। बातियो ठीके रहलि। दूसरा का जांगर क कमायी खरच करे में उनकरा मोह–दरदि कइसन?

●●●

जमींदार कऽ लइका जब पेट में रहेला तबहियें, जाल–फरेब रचे आ लूटे–मारे सीखि ले ला। बाबू साहेब साधारन मायावी जीव ना रहलन। एक ओर तऽ सरकारी हाकिम आ कंगरेसिन कऽ दरबार लगावसु दूसरा ओर धरम कऽ चोंगा पहिरि के हिन्दू–सभा, आ संघ का लोग के खुस राखसु। उनकरा फुलवारी में हरदम एगो न एगो साधु–फकीर आइले रहसु।

साधु लोग भागि–भगवान आ करम–तकदीर का कबीर–कथनी कऽ जालि बीनि के उनका जमींदारी का किसानन कऽ मति फेरत रहसु। धरम आ परलोक का बेकूफी कऽ अइसन निसा होला कि अफीमं भा भाँगि ओतना नसा ना कइ सके। देहाति क सोझिया किसान–मजूर भाई एकरा मोह में अन्हरा घोड़ भइल फिरेलन। उनकरा का पता बा कि गरीबन के भुलवावे खातिर दुनियाँ में किसिम–किसिम कऽ जालि बिछावल बा। एगो से निकलबो करी त दूसरा में बाझी, दूसरो से निकली त तीसरी बनलि बा। बे पढ़ल–लिखल आदिमी पशु ले बेहज होला। ओकरा आपन अकिलि थोरे बा, जे जवने कही ऊहे माने पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तइयार हो जाई।

'करम विपाक में लिखल बा', 'पुरुब जनम क कमाई हऽ'

'सनतोख राखऽ, दान—पूनि करऽ' 'ओह जनम कऽ पाप कटे जे आगा खातिर राह साफ होखे।'

किसान का एतना पूछे कऽ अकिलि कहँवा बा कि भगवान, जे कोढ़ि बनि के बइठल रहे ला ओही क पूछ करेलन? जे आपन खून सुखाइ के जेठ का लूह में जरि के गेहूं—बासमती आ मेवा—मलाई उपराजत बा बासमती उपराजे में ओकर हाथगोड़ सरि जात बा, बाकी अपना खातिर खुद्दी छोड़ि के दूसर नँइखे मीलत। किसान सात पेवँन का चिथरा पहिरि के दिन बिताइ रहल बा। जाड़ा का दिन में जहंवा कुक्कुर रजाई ओढ़त बा ओइजा किसान पुवरा में घुसरि के आपन राति बिताइ रहल बा, एही खातिर भगवान किसानन पर नाराज बाड़न?

जहिये गरीब का, भेद कऽ पता चली जे कि पंडा, पुजारी आ जटाधारी लोग रंगलसियार बनि के जमीन्दार आ पूंजीपतिन का खुफिया कऽ काम करत बाड़न,—तहिये ओकर गरीबी भागि जाई आ देस का असली सुराज देखे के मिली।

●●●

कुछ दिन ले बाबू साहेब का जमींदारी में एह बाति कऽ बड़ा शोर मॅचल रहे कि एह इलाका में एक जाना बड़ा जगता साधु आइल बाड़न। ई साधु बड़ा किरियामान बाड़न। लोग सुनल कि किरियामान दंडी हॅउवनि।

सामी जी का तेजी क शोर सुनि के लोग कले—कले दरसन करे खातिर पहुँचे लगलन। सामीजी, बाबू साहेब का देवढ़ी ले तीन कोस फरका पिपरदाहा नांव का गांव में रहत रहलन। एह गांव में बाबू साहेब क छावनी रहलि बाकी सामी जी गांव का बहरा टार पर फूस का पलानी में रहसु।

बाबू साहेब का इलाका का हर गांव में सांझि का बेरा जब किसान लोग अपना कामधंधा से छुट्टी पाइ जासु त सामिये जी क बतकही छिड़लि रहे। केहू कहि रहल बा— 'सुनऽ ए काका— 'मीठ लागे चाहे मरिचा बाति कहीला फरिछा, — सामीजी हमन कऽ गरदनि काटे खातिर बाबू साहेब क खुफिया बनि के आइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न। भागि–भगवान, करम–तकदीर आ सनतोख करे का नाँव पर हमन का मुड़ाइबि जा। अब समय बदलि रहल बा हमन का साधु, गुरु–उपरोहित सभके जांचि के त ओकरा पर बिसवास करे के चाही। 'अपना भतीजा का मुंह से सामी जी का बारे में अइसन रुक्खर बाति सुनि के बड़ा दुख लागल आ बीगन सिंह बड़ा जोर से फटकारि के बोललन– 'बचवा अबे इसकूल में चारि अच्छरि रंगरेजी न पढ़त बाड़ऽ। जब इसकूल छोड़ि के दुनियां का बेवहार में अइबऽ तब पता चली। जे रंगरेजी पढ़ल ओकरा साधु, उपरोहित आ धरम से कवनो मतलब नँइखे रहत। हमन क पुरखा–पुरनियाँ जेकरा के मानि आइल बाड़न ओकरा पर सक–सुबहा कइल आपन राह बिगारल बा। ऊ लोग मुरुख रहलहऽ जे साधुन के मानत रहल हऽ?'

'बीगन काका पुरुखन के गंवार त हमहूँ नँइखी कहत, बाकी हमार कहे क मतलब बा कि आजु क साधु त पहिले नियर होतो नँइखन न। आज क साधु–फकीर त गिरहतो ले बेहज बाड़न। गेरुवा आ टीका का आड़ में ई लोग रंगलसियार बा। एह लोग के खाये खातिर हलुवा–पूड़ी आ राबड़ी चाही। ओढ़े खातिर दुसाला, अंडी आ पहिरे के सेनगुपुत धोती, ऊन क कोटि आ मिरजई। एतने ले रहित त एगो बातियो रहल ह। सेवा करे खातिर दास आ दासी क जरुरति पड़ति बा।'

हमन क पुरखा–पुरनियां लोग का बेर समाज का भलाई खातिर आपन परान देबे वाला साधु होत रहलन हँ। आजु नियर मुसमांतिन क कान फूँकि के खेत लिखवाइ लेबे वाला ना। दधीचि क नांव सुन ले होइबऽ। जनता का भलाई खातिर अपना देहिं क हड्डी तक दे दिहलन।

महाभारथ नियर धरम का किताबि में धरम कऽ इहे अरथ बतावल बा। तुलाधार वैस से जाजले नांव कऽ रिसी धरम क माने पुछलन त उनकरा कहे के परल कि जे सभकरा के आपन इयार समुझे आ एक नजरि से देखे, आ मन, बचन, करम तीनों से जनता क भलाई करे ऊहे असली धरमातमा भा साधु हऽ।

आदिमी जब बजारि में एक पइसा क नांदी लेबे जात बा त बजाइ के देखत बा कि फूटलि हऽ कि नीमन।

एइजा त आपन आ पलिवार का जिनिगी क सउदा क सवाल बा फेर जब जेकर बाति मानि के जिनगी भर सुख भा दुख भोगे खातिर तइयार बानी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त ओकरा के जाँचल—बूझल आ आँचि में तपाइ के देखल कवन खराब बा? जे त मोमि कऽ बनि के ठगे आइल होई ऊ गलि जाई आ जे इसपात क बनल होई ऊ ओइसहीं रही।'

चचा—भतीजा के सवाल—जबाब कइल सुनि के मुसाफिर अहिर आ सामरथी महतो से ना रहि गइल ऊहो लोग जवन सुनले रहे ओकरा के कहल जरूरी जनाइल—

चउधुरी बीगन राय, राउर भतीजा कहत बाड़न तवन ठीक बा। हम आ मुसाफिर भइया एक दिन सामी जी कऽ दरसन करे गइल रहलीं जा, ऊहो इहे कुल्हि बाति कहत—समुझावत रहलन। इनकरा में आ अउरी साधुन में बड़ा फरक बा। सामी जी गाँजा—भाँगि भा कवनों किसिम क नसा नँइखन खात। खद्दर पहिरले बाड़न आ पता चलत बा कि सुराज का लड़ाई में दूइ—तीनि बेर जेहलो गइल बाड़न। सासतर—पुरान,बेद आ पोथी—पतरा कऽ एतहत बड़ पंडित हम आज ले ना सुनले रहली हँ। ई त कहत बाड़न कि किसान—मँजूर ले बढ़ि के महातमा केहू नँइखे। मनु महराज लिखले बाड़न कि बरम्हचारी, गिरहत, बानपरसथ आ संन्यासी ए चारो में गिरहते सभकरा ले ऊँच ठहरल। किसान—मँजूर पिरिथिमी कऽ सेसनाग ठहरलन। इनहीं का पीठि पर दुनियाँ ठहरलि बा। जहिया ई सेसनाग करवट बदलिहन ओह दिन दुनियाँ में परलय हो जाई। किसान दुनियाँ के बासमती—मलाई खियाई के अपने भूखे—लंगटे रहत बाड़न। तोहनलोग एगो दधीचि का बारे में सुनि के अचरज करत बाड़ऽ जा, एइजा त देस क करोड़ों किसान—मँजूर दधीचि ले बढ़ि के बाढ़न। साच पूछल जाय त इहे दुनियाँ कऽ कामधेनु ठहरलन। आज का दुनियाँ क लोग एह कामधेनु कऽ भूसा—खरी आ घासि का बदला में लाठी—डंटा, लात—मूँका आ गारी से खातिर करत बाड़न। ई अनेति क दिन चली? सुनलीं चउधुरी इहे त सामीजी क उपदेश बा'।

सामरथी महतो का बाति के मुसाफिर भगत पूरा—पूरा सदरथत गइलन। आखिर में ऊ अपनो राइ कहलन कि — हमरा जाने में त सामी जी अबे नया—नया एह इलाका में आइल बाड़न। अबे उनकरा दलसिंगार राय का जुलुम क बाति तनिकों नँइखे मालुम। महीना—दू महीना रहि जइहन त कुल्हि पोल खुलि जाई। उनकरा बाबू साहेब का माया कऽ पता चलि जाई आ हमन का सामी जी क असली चालि मालुम हो जाई। ओही घरी कहल जा सकेला कि सामी जी किसान—मँजूर क एतना बढ़ाई कइ के गरीब जनता क पच्छ करत बाड़न, कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू साहेब आ उनका इयार हाकिम–अमलन क।

एक–दूइ महीना ले इलाका का हरगाँव में सामी मनोगानंद जी का बारे में अइसने सवाल–जबाब सुरू भइल रहे। हरवांही, भइंसि– गाइ चरति बाड़ी स तहँवा भा घरे अइला पर, कउड़ आ दलानि में इहे बहस सुनाय। जमाना बदलला से किसानो मँजूर कऽ आंखि कुछ–कुछ खुले लागलि।

२

बाबू साहेब क पियादा बसगित सिंह पिपरदाहां का पँजरे खखँड़हीं गाँव का एगो गरीब किसान कुबेर अहिर का दुवार पर पहुंचलन। कुबेर घासि गढ़े गइल रहलन। उनकर मेहरारू दलानि में ले एगों मँचिया निकालि के बसगित सिंह के बइठे खातिर देइ के एगो कोना में खड़ा भइलि।

'अरे सिलगनी! कुबेरवा कहाँ गइल बा?'

बाबू साहेब, घासि के गइल बाड़न, आवते होंइहन। तनिकी देर बेलमी बस भेंट हो जाई।'

इहे बतकही होति रहलि तवले कुबेर भगत माँथ पर घासि क बोझ लिहले पहुंचि गइलन। ऊ आपन बोझ दरवाजा में पटकि के जइसहीं बहरा अइलन तवले बाबू बसगति सिंह पर नजरि परलि। देखि के बेचारू मने–मन मँस–मँसाई के रहि गइलन कि– 'ई जमुराज क सिपाही का पहुंचल?'

'बाबू साहेब, पाव लगी ला। केने दया कइल गइल ह? का हुकुम बा?' खीसि का मारे बाबू बसगित सिंह लाल भइल रहलन। बदमासी बतियावत बाड़े? हमरा के तसिलदार साहेब एही बाति के पूछे खातिर भेजलन हँ कि कुक्कुर के जवन दूध रोज उठवना जात रहल ह ऊ तीनि दिन ले बंद काहें बा? तोरा कपार में कीरा नँइखे न परल?'

बसगित सिह क बाति सुनि के कुबेर क टँगरी काँपे लागलि। ऊ दाँतचियारि के बोललन–'सरकार हमरा घरे चारि–चारि गो पाहुन जुटि गइल रहलनि हँ। अब काल्हि ले जाईं'।

तोहरा छोकड़ि का बाँस धासों, तोहरा ई ना मालुम रहल कि कुक्कुर बेमार परल बा। ओकर दवाई होति बा, तूँ बेमारी में दूध बंद कइ दिहले ह? हीत–पाहुन आइलि रहलनि हँ स त अपना लड़कियन के काहे ना दुहले हऽ? ऊहो त बियाइले बाड़ी स।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू साहेब क बाति सूनि के कुबेर का एड़ी कपार ले आगि लागि गइलि। जे गरीब बा ओकरो अपना इज्जति–आबरू क ओतने लाज बा जेतना एगो बाभन, छतिरी भा राजा का। खीसि का मारे आंखि लाल–लाल कइले कुबेर बोललन। उनकर मेहरारू रोकति रहलि बाकी ना मनलन– देखऽ बसगित सिंह, एतना देर ले हम तोहके बाबू साहेब कहली हँ। अब दूसर बेवहार करबि। तोहरा बेटी–बहिन नँइखे का जे अइसन खराब जबानि निकालत बाड़ऽ? आपन जबानि ना सम्हरबऽ त एह लूरि से एक दिन लात खाये के परी।'

कुबेर अहिर क बाति सूनि के बसगित सिंह के आगि ना कि जरसु, खीसि ले आंखि लाल–पियर कइले आ गारी देत ऊ मँचिया परले उठि के छावनी का ओर चलि दिहलन। सांप जइसे केंचुल से मांति के आन्हर होइ जाला ओइसहीं बसगित सिंह खीसि से माँतल चलि जात रहलन। उनकरा टेढ़–सोझ भा काँट–कूस कुछ ना लउकत रहे।

पिपरदाहां छावनी पर पहुंचि के बसगित सिंह आपन पगरी–मुरेठा तसिलदार का आगा धइ दिहलन। तसिलदार साहेब अब हमरा से राउर पियदगिरी कइल ना सँपरी। रउवा आपन इनतिजाम करीं।'

तसिलदार साहेब अखबार पढ़त रहलन। एक ब एक अपना दुलरूआ पियादा बसगित सिंह क अइसन बाति सूनि के दंग हो गइलन।

बसगित सिंह का बाति हऽ कुछ कहबो करबऽ कि गूंगी सधले बाड़? एह तरे हम का जानत बानी कि तोहरा कवना बाति क दुख बा? केहू तोहरा के कुछ कहल ह कि खिसियाइल बाड़ऽ आ कि तलबि–तनखाह बढ़वावल चाहत बाड़ऽ।

बाति ई बा कि सामी जी क बाति सूनि के रउवा इलाका का असामिन क मन बिगरि गइल बा। अब हमन क इज्जति बाँचल कठिन बा। अब असामिन क गारी फजिहति सहि के राउर नोकरी कइल हमरा मंजूर नँइखे। जे रहल चाहे रउवा ओकरा के राखीं। रउरे भेजला से हम आज खखंड़ही का कुबेरवा अहिर किहें पूछे गइल रहली हँ कि दूध क उठवना काहे बंद कइले बा। एकर नतीजा भइल ह कि गारी सुने के परल हऽ। जो चलाँकी कइके सरकल ना रही ला त जवन बाकी बाँचल रहल ह, ऊहो पूरा होइ जाइत।'

तसिलदार साहेब बसगित सिंह के बहुत समुझाइ–बुझाइ के ठंडा कइलन कि घबराईं मति कुबेर क दवाई होई।' एतना कहि के तसिलदार साहेब, लाठी–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाला सहित दस गो नवहा चपरासिन के भेजलन कि जाइ के कुबेरवा के जहँवा होखे मुसुक बान्हि के धइ ले आव स।

●●●

कुबेर अपना दलानि में भँइसि के सानी गोतत रहलन। एतने में एगो चपरासी पाछहीं ले पीठि पर धोंई से एक लउरि मरलसि। कुबेर आहि कइके चरनी पर ले भुंइया गीरि परलन। दूइ गो चपरासी ऊपर ले दू–दू लात अउरी मारि के मुसुक चढ़वले घिसियाइ ले चललन स। आठगो जवान लाठी–भाला भांजत आ चारो ओर ले घेर के गारी–मारि से समाचार पूछत संगे चललन।

सवँसे गाँव क हजारों किसान भेंड़ि बनि के अपना आँखि का सामने एह जुलुम क तमासा देखत रहलन। लोग का ई ना बुझात रहे कि जमींदार, मालदार, रंडी भा ओकील–मुंखतार केहू क हित ना हो सकसु। ई लोग गरीब क खून पीये वाला जीव ठहरलन ओहू में जमींदार त सबका ले बड़ जोंकि ठहरल।

कुबेर क बेइज्जती गाँव का सवँसे किसानन क बेइज्जती रहे। आजु जो किसान सजग आ जमाति बनाइ के एक रहितन त जमींदार भा कवनो जुलुम करे वालन क उनकरा पर चोंच गड़ल कठिन होइत। एकता का आगा सभका आपन माँथ नवावे के परित। एह एकता का बले किसान आपन रइछा, बढ़ंती आ जुलुम क विरोध, कुल्हि करितन। जमींदार आ मालदार त एतना धुरुत बाड़न स कि जाति आ करम–तकदीर क झूठ–मूठ क पँचड़ा खड़ा कइके किसिम–किसिम क जाल बीनत बाड़न कि जाँगर चलावे वाला लोग आपुस में लड़त–कटत रहसु। एह लोग का आपुसे का लड़ला से फुरसति ना होई, जमींदार का ओर तिकवल त दूर रहो।

बतियो ठीके बा। जाँगर चलावे वालन में फूट डालि के ओही दल का आदमिन से ओह लोग के सर करावल जात बा। लोहा क टांगा केतनो तेज आ बरियार होखे जवले ओकरा के लकड़ी का बेंट क साथ न मिले त एगो पातर डाढ़ि तक ना काटल जा सके।

●●●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरीब का जाँगर से कमाइल गेहूं–बासमती आ राबड़ी–मलाई खाइ के ओही का छाती पर जुलुम कऽ जाँत चलावे वाला जमींदारन कऽ पाप देखि के सुरुज भगवान आपन मुंह लुकवाइ के अकास का नीचे चलि गइल रहलन। उनकर जगहि राति कऽ राछछिन लेबे खातिर पूतना नियर आपन मुंह फइलवले चलि आवति रहे। तसिलदार साहेब नेवार का पलँगरी पर मखमल कऽ गद्दी आ मँसनँद लगाइ के गुड़गुड़ी पुड़पुड़ावत रहलन।

एही घरी चपरासी लोग कुबेर के मुसुफ चढ़ाइ के डुभुकी का रस्सा में बन्हले तसिलदार साहेब का आगा ले आइ के हाजिर कइलन जा। हरिनी जइसे बाघ के देखि के काँपति होखे ओइसहीं जालिम तसिलदार देवनाथ सिंह के देखि के कुबेर काँपत रहलन। ऊ जानत रहलन कि जमुराज का दरबार में पहुंचि के आज हमार पूरा हजामति बनि जाई।'

कुबेर के देखते तसिलदार साहेब आँखि लाल–लाल कइले खीसि से, जरल करेजा ठंडा करे खातिर, हाथ में बेंत लिहले, खटिया ले नीचे उतरि परलन आ बाझ जइसे चिरई पर टूटि परे ओइसही पीपर में बान्हल कुबेर पर टूटि परलन।

'का रे साला–माधड़चोद, सोरहों आना सनकि गइल बाड़े? तोरा ई पता बा कि ना, जे जेकरा सनक चढ़े ला ओह असामी के टेकुवा नियर सोझ करेवाला हमहीं हईं? अबे जमींदारी उठलि नँइखे। तोहरी जे काहू का बाँस धासों जमींदारी त देरि से उठी एकरा ले पहिलहीं हम तोहन लोग के एह दुनियां से उठाइ देब।'

बाबू देवनाथ सिंह तसिलदार इहे कहि–कहि, बिना मोह–छोह कऽ कुबेर का देहिं पर आपन बेंत, छोड़त गइलन। पांच बेंत मारि के त एक बेर गीनसु। छनभर में कुबेर क देहि खून से फच–फचाइ गइलि। जेनियें बेंत परे देहिं क चाम छोड़ाइ के खून बहाइ दे।

नियरा पास खड़ा होखेवाला बीसों नोंकर आ असामिन का एतनो हिम्मत ना भइल कि जाइ के धरहरि करसु। जांगर चलावे वाला क इहे कमजोरी आ बउराही त ओकरा के खाति बा। किसान–मँजूर मुरदा बनि के गहिरी नीनि में सूतल बाड़न, फेर ओह लोग कऽ अइसन दुरदसा भइल कवन अचरज बा? केहू आज ले मुरदा कऽ फिकिरि ना कइल हऽ। सभ जानते बा कि हिंदू अपना मुरदा के जरा देलन आ मुसलमान नव मन मांटी लादि के ठेहुनभर गहिर गड़हा में गाड़ि देलन। जमींदारी करिया नागिनि हऽ। जेकरा देहि में एकर दाँत गड़ल ओकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बांचल कठिन बा। जांगर चलावे वाला का छाती पर कोदो दरे खातिर; देस में पहिले पहिल पहुंचला पर आपन दखल जमाइ के देस का दउलति कऽ मलाइ सरहोथे खातिर: रंगरेज जाति कऽ दलाल आ बिलायत कऽ एगो जमींदार लाट करनवालिस १७९३ ई० में एह पूतना पापिनि के पयदा कइलसि। कलमि का नोख से एक सोत में देस क सवँसे जमीनि कमायेवालन का हाथ में ले छीनि के देस का उलटा चलि के रंगरेज जाति कऽ मदति आ दलाली करे वाला टुकड़खोरन का हाथ में दे दियाइल।

जे किसान जंगल काटि के, कुस–राढ़ी आ मोंथा कबारि के, जमीन के पयदवार बनवलनि, जेकर तीनि–चारि पुहुत एकरा के सोझ भा चिक्कन बनावे मे गलि गइल आज ऊहे बिराना समझल जात बाड़न, कहाँ क नेयाव हऽ?

३

एक ओर त ई हालि रहे, दूसरा ओर गरीब क गरदनि काटेवाला दलाल, पंडा–पुजारी आ उपरोहित भा दूसर–दूसर चुगुला बाबू दलसिंगार राय का दरबार में पहुंचि के,सामी मनोगानंद जी का सिकाइति से उनकर कान भरसु। जुलुमी जमींदारन का कान होखे ला आंखि आ अकिलि ना होले। पहिले कुछ दिन ले त बाबू साहब एह बातिन पर धियान ना दिहलन।

उनकर खेयाल रहल कि दउलति का मोहिनी से जेकरा के चाहबि फँसाइ लेबि। सामी जी के बझावे खातिर किसिम–किसिम का माया क जालि विछावल गइल बाकी ई जादू बेकार जनाये लगल।

'कबे–कबे बाबू साहेब का सुबहा होखे कि हमार दसा रेसम का कोवा कऽ जनि होखे। हम त एह गेरुवा वाला के अपना जाति कऽ बिदमान साधु जानि के लियाइ अइलीं जे हमार रइछा करी बाकी ई त उलटे हमार जरि खोदत बा। एकरा के अपना जमींदारी में ले हटवावे कऽ उपाइ लगावे के चाही।'

बाबू साहेब पढ़ल–लिखल त जरूर रहलन बाकी मतलब का छोपनी से उनकर आंखि बंद रहली स। उनकरा जमाना कऽ अँजोर आ हवा कऽ रोख बदलल ना जनाय। लछिमी आ सुरसती में एह बाति के लेइ के हरदम झगरा रहे ला। लोग सुनले होई कि सुरसती कऽ सवारी हंस पर होले आ लछिमी क उरुवा पर। एकर मतलब कि बिदमान हरदम नेयाव चाहे ला। दूध कऽ दूध, आ पानी कऽ पानी कइल ओकर काम हऽ। ऊ दुनियां का मानसरोवर में डुबकी लगाइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के मोती नियर पदारथ बीने ला आ जनता का आगा धइ दे ला। दूसरी बहिन उरुवा चढ़ेली, एकर मतलब कि उरुवा का जइसे अँजोर में ना लउके ओइसहीं जेकरा पास दउलति बा ओकरा मतलब छोड़ि के दूसर कुछ ना सूझे। दुनियाँ में चमचम दिन होइ के का करी जे ओकरा अन्हरिया रातिये से मतलब बा।

सामी जी बिदमान रहलन ओहू में साचों क लँगोटाबाज साधु। आजु ले दुनियां में, केहू साधु कऽ मन आ नदी का वेग के बान्हि के ना राखि सकल। दूइ–तीनि महीना बाबू साहेब का इलाका में घूमि–फिरि के उनकरा सभ बाति कऽ अन्दाज मीलि चुकल रहे। दरबार कऽ कवनो भेद उनका से छीपल कठिन रहल।

कंगरेस पर मालदारन क कबजा–दखल होत देखि के एकरा ले ढेर दिन पहिलहीं सामी जी, गरीब कऽ संगठन करे कऽ बाति मन में सोचि चुकल रहलन। बेद–पुरान, गीता आ सासतर कऽ पोथी चटला का बाद हजारों तिरथन में घूमि के सामी जी का भगवान क पता लागि चुकल रहे। अब त सभ जंजाल छोड़ि के उनकरा जनता कऽ सेवा करे के रहल। जमींदारन कऽ राछछी जुलुम देखि के उनकर ई राइ अउरी पक्का हो गइलि। ऊ अपना मन में पक्का कइ लिहलन कि जमींदारी कऽ जरि खोदि के किसानराज कायम कइ लेबि तहिये दम लेबि।

राति भर कुबेर ओही पीपर का फेंड़ में बान्हल रहलन। तसिलदार कऽ हुकुम रहल कि हम सबेरे दरबार में जाइबि। एकरा के साँझि का बेरा ले अइहऽ सऽ, बाबू साहेब का आगा हाजिर कइ के त छोड़ल जाई।' इहे कहि के अनगुतहाँ दस बजे खाइ–पी के तसिलदार साहेब कऽ घोड़ा कसाइल आ ऊ दरबार क राह लिहलन।

बाबू साहेब खइला का बाद बोतल चढ़ाइ के दिन ही पतुरिया लेइके अपना कोठरी में सूतल रहलन। घरी भर दिन रहल त उनकर उँघाई टूटलि, जलखई कइला का बाद बहरा निकलि के दरबार में बइठलन। इलाका का पांच–सात गाँवन क तसिलदार लोग असूल–तसीलि क बुझारथ करे खातिर जुटल रहलन। सभ पारा–पारी आपन काम ओरियावे लागल। आखिर में देवनाथ सिंह क पारी आइलि। ऊहो आपन हर हिसाब क बुझारथ कइला का बाद इलाका में फइलल बेमारी क बयान पूरा नमक–मरिचि लगाइ के सुनवलन।

ई कहनी होति रहलि ओही घरी पिपरादाहां छावनी क चपरासी कुबेर के मुसुक बान्हि के मारत–पीटत दरबार में हाजिर कइ दिहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गदहबेरि होति रहलि। गरमी क दिन, बाबू साहेब बइठका छोड़ि के अपना फुलवारी में बइठल हवा खात आ इलाका क बयान सुनत रहलन। कतहीं बेइला फूललि रहे त कतहीं जौनपुरी गुलाब। अपना बेदी पर बाबू साहेब बइठल रहलन ओकरा चारो ओर मखमली रंग का दूबि पर फुहेरन क सोभा देखहीं लायक बनति रहे।

एक त गरमी क दिन, दूसरे खीसि क गरमी। कुबेर क सामने लउकल आगि में घीव क काम कइलसि बाबू साहेब क मिजाज लहकि गइल। बाबू साहेब हाथ में कोड़ा लिहले कुरसी छोड़ि के खड़ा हो गइलन।

दूइ साँझि क बे खइले कुबेर, लात–मूँका आ तसिलदार साहेब क बेंत पाइ के पूरा अघाइ गइल रहलन। पान कसइली कऽ खातिरदारी में जवन कमी रहे ऊ बाबू साहेब का दूइ–चार कोड़न से दूर हो गइल। कुबेर लहू–लुहान होइ के अँवरा का गाँछ में बान्हल बेहोस परल रहलन। बाबू साहेब कऽ हुकुम भइल कि एकरा सभ बेकतिन के पकड़ि मंगावल जाय। तसिलदार बाबू साहेब के चालि जानि के इसारा कइ चुकल रहलन कि एकरा दूइ गो बड़ा सुघर लइकी बाड़ी सऽ। उन्हन का रूप का आगा पतुरिया झूठ बाड़ी सऽ।

हुकुम कऽ देरी रहे। गाँव देवढ़ी ले डेढ़ कोस पर परत रहल। मूसरचंद सिपाही लाठी–भाला भाँजत कुबेर अहिर का घर पर पहुंचि गइलन।

कुबेर कऽ मेहरारू बोरसी में गोइठा सुनगाइ के घर का दुवारि पर बइठल रोवत रहलि। ओकरा उमेदि ना रहल कि कुबेर लवटिहँन। काहें से जे इहे बाबू साहेब केतने असामिन के दिन–दुपहरिया बोरा में बंद कराइ के जियते आगि में जरवाइ दिहलन आ कुछ ना भइल। चानी कऽ छड़ी सभके मोहि लिहलसि।

●●●

बाबू साहेब कऽ चपरासी गाँव का गोड़इत के मिलाइ के लियाइ अइलन। गोड़इत कुबेर बो के कुछ बतियाइ के भुलवावे का बहाना से फरका हटाइ ले गइल। एतने में चपरासी निकलि के कुबेर का भीतर घर में पइठि गइलन स। कुबेर बो बतियावे में बाझल रहली आ एने त चपरासी लइकिनि का मुँह में लूगा कोंचि के भाला से जान मारि देबे क धमकी देत गाँव ले बहरा पहुँचलन सऽ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्हरिया राति' आठ बजत रहे, लोग एह बाति के ना जानि सकल। गाँव का बहरी बाबू साहेब क तेज टमटम खड़ा रहे। लइकिन के बइठाइ के मुँह में क लुग्गा निकालि दियाइल आ टमटम नव दू एगारह भइल। हजारिया घोड़ा दूध–चना खियाइ के पालल रहे। रासि पकड़ते पवन से बाति करे लागल। आधाघंटा का बाद दूनो लइकी बाबू साहेब का सेवा में हाजिर कइल गइली स।

तसिलदार आ अमला लोग बेरा दूसर जानि के जहाँ–तहाँ चलि गइल। बाबू साहेब खाइ–पी के बोतल ढारत रहलन। पलंग बिछल रहे। बोतल का बाद जवना मंसाला के जरूरत होला ऊहो पहुंचिये गइल रहे। अब देरी कइल बाबू साहेब का ठीक ना जनाइल। लोग लइकिन के आगा कइ के चलता भइलन जा।

सामी जी पटना ले लवटि के कुबेर का पिटइला आ लइकिन का बेइज्जत भइला कऽ रोवाँ खड़ा करे वाली कहनी सूनि के काँपि गइलन। जुलुम का अइसन पाप भरलि कहनी से उनकरा नियर घीर आ बिदमान महातमा कऽ मुँह लाल हो गइल।

४

पटना में किसान सभा कऽ नेंइ त पड़िये चुकलि रहलि, सामी जी सबसे पहिले एही इलाका से जुलुम बंद करे आ जाँगर चलावे वाला गरीब किसान–मँजूर का काम कऽ सिरीगनेश कइलन। पहिले त उनकरा किसिम–किसिम का कठिनाई आ विघिन से दाँत खट कइ देबे वाली लड़ाई करे के परलि, बाकी सामी जी तनिको ना कचकलन। अउरी नेता लोग नियर उनकर करेजा मोंमि कऽ ना बनल रहे। सामी जी का हिम्मत का आगा इसपात कऽ मजबूती कुछ ना रहलि। ऊ गाँव–गाँव घूमि के किसान–सभा के बरियार करे आ लोगन के समुझावे लगलन।

ई बाति के नँइखे जानत कि रगर अइसन चीज ह जे पत्थल पर जेंवरि का अइला–गइला से दाग बनि जाला, आदिमी के समुझावल जाई त ऊ काहें ना समुझी।

कवनो बाति कऽ हद होला। छाती पर दिन–राति जुलुम क जाँत चलला से बाबू साहेब का इलाका कऽ किसान उबियाइ के एह नरक ले बहरा निकले कऽ जगहि आ मोका खोजत रहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुलुम का लबालब दरियाव में जाँगर चलावे वाली जनता का जिनिगी कऽ नाइ चकोह में परि के डूबे–डूबे भइलि रहे। सामी जी मोंका पर चतुर मलाह कऽ काम कइलनि। उनकर अकिलि पतवार कऽ काम कइलसि।

●●●

बाबू साहेब का आँखि में चरबी छवले रहलि। गरीब कऽ खून उनकरा कपार पर चढ़ि के नाँचत रहल। जाँगर चलावे वाली जनता कऽ जवन हजारों मन लोहू नगीना बनि के उनकरा दरबार के सोभा बढ़वले रहल; समय पाइ के उनकर नास कऽ कारनो ऊहे भइल। कहीं हाथी हथिसार में बान्हले मरि गइल। त कहीं घोड़ा बेमार परल। बेमारी का तीसरा दिने घोड़ो मरि गइल।

बाबू साहेब का एक ही लइका रहल। ऊ पटना कालेज का बी० ए० दरजा में पढ़त रहल। बाबू साहेब उदास होइ के अपना फुलवारी में बइठल जमींदारी बचावे कऽ बाति सोचत रहलन। एतने में डँकपिउन तार कऽ कागज ले जाइ के उनकरा हाथ में दिहलन।

तार पढ़ते बाबू साहेब क कपार ठनके लागल। उनकरा चेहरा क रंग उड़ि गइल। बेमार होइ के उनकर बेटा पटना असपताल में परल रहे। बाबू साहेब फसिलीं का बेमारी क हाल सूनि के जल्दी से जल्दी पटना पहुंचे क तइयारी कइ के इसटेसन पहुँचलन। एक बजे पटना जायेवाली डाँकगाड़ी में दूसरा दरजा क टिकट लेइ के मुसाहेब–चपरासी आ खिजमतिया का संगे बाबू साहेब पटना खातिर रवाना हो गइलन।

इसटेसन से उतरि के बाबू साहेब फिटिन पर सवार भइलन आ बाहरे–बाहर बड़ा असपताल पहुंचलन। एइजा बाचा जी क बेमारी डाकदर लोग का काबू ले बहरा भइलि जाति रहे। बोली बंद हो चुकलि रहलि। दुनियाँ का छोड़े में दस–पाँच मिलिट क देरी रहलि।

बेटा का आँखि में लोर भरल देखि के बाबू साहेब अपना के रोकि ना सकलन। उनहूं क आँखि डबडबा गइली स। नोकर, मुसाहेब, डाकदर सभ घेरलहीं रहे बाकी बाबू साहेब क हीरा–मोती बेटा क रइछा ना कइ सकलि।

५

सामी जी का सिखवला से किसानन में नई जिनिगी आ गइलि। सामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी, किसान–मँजूर के ओकरा भुलाइल बल के इयाद परावे आ बोध देबे वाला जामवन्त क काम कइलन। सामी जी क सिखावल बिजुली क काम कइलसि। जाँगर चलावे वाला आपन हक समुझे लगलन। नतीजा भइल कि बरिस दिन में बेठ–बेगारी, हरी आ सलामी कुल्हि बंद हो गइल।

जवन किसान हजारों बरिस ले गरदनि झुकाइ के जुलुम बरदास करत आवत रहलन अब ऊहे गरदनि सोझ कइके आ छाती तानि के चले क कोसिस करे लगलन। दिमाग में जनम–जनम ले जवन कीट आ काई बइठलि रहे, ऊ अब सामी जी का उपदेस का साबुन से कले–कले साफ होखे लागलि। केहू क मजाल ना रहे कि किसान–मँजूर के आखि देखाइ सके।

जवना गाँव में सामी जी क सभा होखे, ऊ ओइजा का लोग के इहे बाति सिखावसु कि: " दुनिया भर में, साच पूछल जाय त दूइये गो जाति बा। एगो त जाँगर चलावे वाला गरीब किसान–मँजूर आ उनकरा इयारन क, दूसरी जाति, एह कमाये वाला लोगन के किसिम–किसिम का जाल में बझाइ के लुटे वाला मालदारन कऽ ठहरलि। बीच में जवन भेद आ पँचड़ा लउकत बा ऊ मालदारन का दलालन क बनावल हउवे। पंडा, पुजारी, साधु, गुरू आ उपरोहित लोग मालदारन क पइसा खाइ के तरह–तरह क पोथी लिखलन आ मोंका परला पर घरियार का आँसु नियर लोर बहवलन कि गरीब एकरा में बाझल रहसु।" उनकरा ई ना पता चले पावे कि हमन का देंहि में हजारों जोंकि लागल बाड़ी स।

'करम–तकदीर आ पुरुब जनम का कमाई क बाति अइसने जाल ठहरल। अब किसान–मँजूर का सजग होइ के अपना देंहि में क जोंकि छोड़ाइ के ओकरा मुँह पर नीमक धरे के परी। कनून आदिमी खातिर बने ला। आदिमी कनून खातिर ना बने। कनून आदिमी का सुख–चयन खातिर बने के चाही, ओकर खून चूसे आ हयवान बनावे खातिर ना। दुनियाँ में आज ले ज़वन कनून बनल ह, ऊ सयकड़े पनचानबे के लूटेवाला, ओकरा के झगड़ा–झंझटि भा खतरा का नाँव पर दबावे आ सतावे वाला। किसान–मँजूर का जागि के अब दुनियाँ के बताइ देबे कऽ समय आइल बा कि अब जमाना बदलि गइल। आज क कनून सयकड़े पनचानबे का अराम खातिर बनी। अब मुट्‌ठी भर मालदार आ उनकर दलाल पारलियामेंट में बइठि के जवन मन करी ऊहे ना कइ सकसु। अब त बड़ी पारलियामेंट से लेइ के सूबा का कानून –सभा आ गाँव–पंचाइत तक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में हर–फार, कुदारी क काम करेवाला किसान आ क़ारखानन में काम करेवाला मँजूर अपने जइहँन।

''किसान भाई सजग होखे में देरी कइलऽ जा त फेर उहे गुलामी क नरक़ भोगे के परी। तोहरा से चलाँक त तोहार बैल बा। एक सांझि जवना बैल के खरी–भूसा भा खेसारी क दालि नँइखे मीलत त ऊ हर क पल्ला फेंकि के बीच हराई में बइठि जात बा।

''फउदि, कचहरी, थाना सभ जगहन में किसान–मँजूर क लइका काम करत बाड़न बाकी उनकरा ई चेत नँइखे कि हम केकरा पर गोली चलावत बानी, आ काहें?

जुलुम करे वाला का जाँगर चलावे वालन से हरदम हारे के परल बा। दुनियाँ कऽ पोथी–पतरा इहे बताइ रहल बा। बिलाइति का चारलस, फ्रांस का लूई आ रूस का जार कऽ कवन गति भइलि ई तोहन लोग से छीपल नँइखे।

''किसान, दुनिया के गेहूं–बासमती, आ मेवा–मलाई खियावे वाला भगवान ठहरल। दुनिया का समझे के चाही जे एगो किसान मरल त हजारंन के अमिरित नियर पदारथ देबे वाला देवता मरल, दूसरा ओर एगो जमींदार आ मालदार मरल त हजारंन कऽ खून पीये वाला अजगर सांप मरल।

●●●

पिपरदाहाँ, बाबू दलसिंगार राय का जमींदारी क सबसे बड़ मउजा रहल। बाबू साहेब का जमींदारी क मक्खन,सोरह सइ बिगहा बकास्त एही मउजा में रहे। बाबू साहेब अपना जाल–फरेब का बल पर किसानन के किसिम–किसिम का मोंकदमा में फँसाइ के लड़ावत–लड़ावत एतना जमीनि लिलाम कराइ के बकास्त बनाइ चुकल रहलन। बाबू साहेब का त हर–बैल रहेना जे खेती करइतँन। एह से सवँसे खेत बीस मने आ पचीस मने बिगहा मनी पर किसानने के 'बंदोबस्त' करसु।

सामी जी का संगठन से किसानन में बल आइल आ 'बकास्त जोते वाला के मिले के चाही' – कऽ आंदोलन चले लागल। बहुत दिन ले त लिखा–पढ़ी, कचहरी आ सिरिहिता क राह देखल गइल, बाकी इ राह बेकार साबित भइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवना दुनियाँ में कनून आ नेयाव पइसा का बल पर बेंचात–किनात बा ओइजा किसानन क गुजर कहाँ रहे? नतीजा भइल कि लचार होइ के पिपरदाहाँ कऽ किसान सतियागरह कऽ तइयारी करे लगलन।

६

दुनियाँ कऽ बेवहार बतावत बा कि आदिमी का, अपना बेटा भा सवाँग मरला ले धन चलि गइला क ढेर दुख हो ला। बेटा–सवाँग का मरला पर त लोग जियबो करेलन बाकी धन चलि गइला भा नास होखे लगला पर त करेजा में अइसन घाव होला कि ऊ जान लेइ के त दम ले ला।

तिब्बत देस में मुनचिनपो नाँव क एगो राजा रहलन। समय पाइ के ऊ अपना खजाना क दउलति राज का जनता में तीनि बेर बराबर–बराबर बाँटि दिहलन। उनकरा मँहतारी का एह बाति से पूरा दूख लागे। दूइ बेर ले त ऊ बरदास कइली,बाकी तीसरा बेर बँटला का बाद जब ना सहाइल त खायक में माहुर मिलाइ के खिया दिहली आ राजा मरि गइलन...।

बाबू दलसिंगार राय क केतना नास भइल; बेटा मरि गइल हाथी–घोड़ा तक संग छोड़ि के चलि दिहलन बाकी किसान–मँजूर के लूटे वाली उनकर आदति ना छूटलि। सतियागरह क नोटिस पावते बाबू साहेब का बयखरा लिहलसि। ऊ आरे–पटना दउरि के सरकार क दुवारि खट–खटावे लगलन।

बहुत दउर–धूप कइला आ हजारों क थइली चढ़वला का बाद सरकार क मरजी भइल।

बाबू साहेब का सरकारी पुलिस क खायक आ तलबि क रुपया जोरि के पनरह हजार क रकमि खजाना में जमा करे के परल। जमा कइला का बाद उनकरा के पचास गो सिपाही मिललन। नोटिस क तारीख पूजे ले एक दिन पहिले पलटनि पिपरदाहाँ खातिर रवाना भइलि।

●●●

किसान–भाइन का सामी जी क कहल आंखि का आगा नाँचत रहल कि 'जुलुम करे वाला ले जुलुम के बरदास करेवाला बड़ पापी ठहरल।' जमाना क रोख जाँगर चलावे वाला भाइन के लचार कइलसि कि ऊ लोग अपना रोटी क इन्तजाम करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़ाई का थकइनी से देस थसकि गइल रहल। महँगी से बजारि में आगि लागल रहे। कवनो चीज सवतुक दाम पर ना मिले। चोर–बाजार में दूना–चउगुना आ बहुत बेर त अठगुना दाम दिहला पर चीज मिले। अइसना हालति में साधारण अवकाति वाला लोग का आपन जिनिगी क निरवाह कइल कठिन रहे।

सामी जी पिपरदाहाँ जाइ के सतियागरह चलावे क कुल्हि सिलखिला ठीक कइ दिहलन। हर पीछे एक आदमी सतियागरह कइके जेहल जाये आ लाठी–डंडा सहे खातिर, दूसरी बाति कि खरच चलावे खातिर एगो रुपया; इहे देबे के पक्का हो चुकल रहल। पिपरदाहां क किसान अपना हक का पाछा बाल–बच्चा सहित जेल जाये भा मरे के तइयार रहलन।

किसानन का मालूम रहल कि हमन क घर खुद जेहल बा। सरकार क जेहल एकरा ले नीमन बा। जे बंद करी ओकरा खायक आ लूगां–कपड़ा क त उपाय करहीं के परी बेमार परला पर डाकदर अइहँन बहरा रहि के जाँगर ठेठावत–ठेठावत मरि गइला पर भरपेट सतुआ आ लेवा–गुदरा तक मीलल कठिन बा।

जिला क हर थाना क किसान पिपरदाहाँ सतियागरह में मदति देबे खातिर अनाज, आदमी आ नगद पइसा भेजे लगलन। सामी जी जिला का हर मउजा में दउरि के एह बाति क निगरानी करत रहसु।

सरकारी पलटनि आधा राति का बेरा पिपरदाहां छावनी पर पहुँचि के डेरा डालि दिहलसि। किसान मरे–मिटे खातिर तइयार रहलन त उनकरा पलटनि क कवन फिकिर रहे।

बिहान भइला पाँच सइ किसान कान्हि पर हर धइ के ओकरा में लाल झंडा बन्हले बैल हाँकत जुलुस का रुप में बकास्त जमीन पर पहुँचि गइलन। सिपाही लोग जूनि–बेरा देखत रहे तवले हर नधाइ चलल।

घरी भर दिन चढ़ल त सिपाही लोग खेत पर पहुँचि के देखत बाड़न कि गाँव–गाँव से किसानन क झुंड लाल झंडा लिहले खेत पर जुटि रहल बा। कई हजार आदिमी जमा होइ के गाना गावत वाड़न– 'कोटि जतन करऽ, चाहे बिख खाइ मरऽ, अब ना बची जमींदारी जमींदरवा!' केनियो ले मेहरारुन क झुंड आवत बा त केनियो ले मूँसारोई नवजवानन क। लइका फरका खड़ा होइ के गाइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहल बाड़न स।

"केकर –केकर नाँव गिनाई जग में बहुत लुटेरवा रे!
मालिक लूटे, महाजन लूटे, अउरी लूटे सरकरवा रे !!
साधु, गुरु, उपरोहित लूटे कइ के धरम क बहनवाँ रे!
अमला, हाकिम, नेता लूटे, रंडी वोकिल मुखतरवा रे!!"

पुलिस किसानन के धरे–पकड़े लागलि। केतने किसानन क कपार फूटल आ जेहल जाये के परल। पुलिस क पूरा पूजा भइल रहल एह से ऊ मारपीट करे आ डेरवावे–धमकावे खातिर उठाइ ना रखलसि।

जेतने जुलुम होखे, किसानन क जोस बढ़त जाय। बीस आदमी पकड़ि के भेज़ल जासु त चालीस गो तइयार रहसु। कई हजार किसान पकड़इलन बाकी सतियागरह बंद ना भइल।

आखिर में बाबू साहेब, सरकार का दरबार में पहुँचि के सामी जी के पकड़वावे क कोसिस–पयरबी कइलन। सरकार उनकर बाति सूनि के सामी जी के पकड़लसि त जरूर बाकी एकर नतीजा उलटे भइलि। सामी जी का पकड़ाते आगि कऽ लहरि अउरी जोर पकड़लसि।

पचीसो जिलन कऽ किसान–मँजूर सभ काम बंद कइ के भारी हड़ताल मनवलन। सामी जी जब पकड़ि के पटना भेजल गइलन त दस हजार किसान रेलि लाइन छेकि के सूति रहलन।

७

कुल पचास दिन पिपरदाहाँ क सतियागरह चलला का बाद बाबू साहेब करिहाँइ धइ के थसकि गइलन। किसान–देवता कऽ विराट रूप देखि के उनकर रोंवाँ काँपे लागल।

सरकार हलगुलान से फरके घबड़ाइल रहलि। ओकरो मन भइल कि बाबू साहेब के दबाइ के सुलह कराइ देईं।

बीस दिन जेहल में रहला का बाद सामी जी छोड़ल गइलन। किसान अपना ओर ले सामी जी के पंच मानि चुकल रहलन। बाबू साहेब का किसान–सभा का सामने माँथ नवाइ के सुलह करे के परल।

●●●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिपरादाहाँ कऽ पनरह सइ बिगहा जमीनि—ओइजा का किसान भाइन के मीलल आ सइ बिगहा बाबू साहेब का खाये—पीये के छोड़ि दियाइल। सामी जी अपना मड़ई पर मालपूवा आ तरकारी कऽ भोज कइ के किसान—सभा का काम करे वाला सेवक लोग कऽ पूजा कइलन; कपार पर फूल—चंदन चढ़ाइ के सभ के मालपूवा—तरकारी खियवलन।

सामी जी अपना—किसान—भगवान कऽ पूजा कइ के मन कऽ मनोरथ पूरा कइलंन। उनकरा मुँह ले खुसी का मारे निकलि परल कि हमरा 'किसान—भगवान' कऽ जय!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउर कऽ पूजा

आज ले बीस बरिस पहिले हमरा जवार में अइसन केहू गिरहस्त ना रहल जेकरा बीस–पचीस गो ले कम गाइ होखँ स। बड़ किसान लोग का त साठि–सत्तर, सइ गो ले रहत रहली स। हर गाँव में पसुन के चरे खातिर गउ–गरास जमीनि छोड़लि रहे। गरमी आ जाड़ा, आठ महीना गाइ–बछरू गांव ले बहरा एही टारन पर रहँ स।

बरसाति क इयाम अइला पर दूइ–चारि गाँव कऽ हेंड़ा एक में मिलाइ के पहाड़े भेजल जाय।

बहुत लोग त पहाड़िन पर विसवास कइ के उन्हनें के सरेखि देसु आ बहुत लोग आपन खास–चरवाह भेजसु। गाँव का अहीर भाई लोग क खास रोजिगार रहे कि आपन आ गाँव–जवार क गाइ लेइ के पहाड़े जासु।

अकलू, घुरभारी अहीर का खानदान क होनहार लइका रहलन। बीस बरिस क मूंसा रोई जवान, गँहुवा रंग छरहर देंहि देखे में पूरा सुघर रहलि। पाँच–सात कोस का अरियात–करियात में केहू अकलू का पीठी घूरि लगावे वाला ना रहल। देबीडेहरा, महिला आ पड़ियारी क गाइ उनहीं कऽ जिम्मा रहली स। अकलू धूरिहा त रहबे कइलन बाकी बांसुरियो बड़ा नीमन बजावसु। पढ़े क मोका मीलल रहित आ ताल–सुर, राग–रागिनी क भेद जनितन त बड़े–बड़े गवइया लोग उनकर मोकाबिला ना कइ सकितन।

पहाड़ पर झरना का पँजरा बइठि के अकलू जब कबे आपन बँसुरी बजावे लागसु त नियरा–पास क गाइ तक ले बटुराइ के पँजरा पहुँचि जा स। उनकरा बँसुरी में मोंहिनी जादू रहल।

●●●

देवकलिया, भीखमपुर का चमरू साहु क लइकी रहलि। भीखमपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भभुवा पहाड़ का तरियानी में दुरगावती नदी का किनारे एगो छोट पूरा रहल। एह पूरा में तेली, नोनियाँ आ कोइरी लोग कऽ बास रहे। आज त गाँव का निसान का रूप में खँड़हर भर रहि गइल बा।

देवकलिया गुलाब क अधफुलाइल कली रहलि। हरियर सारी पहिरि के जवानी का मस्ती में अपना सखिन संगे हँसत–बोलत आ आँखि मटकावत रोज तीसरा पहर ऊ नदी में नहाये आवे। जवानी का पहिला पहर क निसा पाइ के ओकरा देंहि में खास किसिम क चुलबुलाहट आ नँखरा–चिल्ला रहे। उमिरि का चंचल सुभाव से कहियो त ऊ अपना सखिन संगे काछा काछि के पँवरे आ कहियो बूड़ा–छूई क खेलि खेले।

एक दिन अकलू भगत क दूइ गो गाइ बहकि के पहाड़ ले नीचे उतरि अइली सऽ। अकलू जब दूपहर ले पहाड़ पर खोजि के हयरान हो गइलन त नीचे उतरलन। पहाड़ कऽ तरियानी आ जंगल खोह में खोजत नदी का किनारे पहुँचलन। अनगुतहें ले उनका, मुँह में पानी तक डाले कऽ सवँस ना लागल। पियासन मुँह झुराइ गइल रहे। पानी का छोपा उतरि के अकलू पानी पीये लगलन।

देवकलिया रोज का टइनि पर देहि अंइठत चुलबुलात आ कबे मुसकी छोड़ति नहाये चलि आवति रहलि। पानी पी के अकलू अरार पर चढ़लन तवले हरियर सारी पहिरले झांझ कऽ कड़ा झमझमावत देवकलिया अपना सखिन संगे नीचे उतरलि।

ओकरा गोर देहि पर हरियर रंग क सारी देखि के बुझाय कि नीलम का दरवाजा में सोना कऽ सुधर मूरति धइलि बा। देवकलिया, जब कबे मुसकियाय त मालूम होखे कि लाल मटर क पातर छेमी फाटि गइलि आ मोती क दल झलकि परल।

देवकलिया क ई तसवीरि अकलू का करेजा में गड़ि गइलि। ऊ अपना गाइ क खोज–खोबरि छोड़ि के पँजरे बर का फेड़ तर बइठि गइलन। आज ले उनकरा केतना सुधर लइकिन के देखे क मोका मिलल रहल, बाकी रूप क अमिरित पीयेवाला अइसन मोंका पहिला बेर हाथ लागल रहल। अकलू एह सोनहुली घरी के हाथ से निकले दिहल ठीक ना समझलन उनकर मन प्रेम का ओर मुड़ि गइल।

अकलू बर का फेड़ से आपन लउरि ओठघांइ के कमरी ओही पर डालि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिहलन आ बँसुरी ओठ से लगाइ के आपन मन बहँटियावे लगलन बँसुरी से प्रेम क मीठ गीति सुनि के चिरई–चुरगुल तक मोहि गइलन। दुरगावती क धार मउज का लहरि में गुनगुनाये लागल।

कुछ देर ले त देवकलिया अपना सखिन संगे नहाये में बितवलसि बाकी आज ओकर मन रोज नियर ना रहल मन में का जाने कांहे एगो नया किसिम क गुदगुदी घिचाव मालुम होखे जल्दी–जल्दी आपन कुल्हि काम ओरियाइ के ऊ आपन बैगनी रंग क चोली पहिरलसि आ सखिन संगे घर का ओर बढ़लि। एइजा त अकलू का बँसुरी में प्रेम क गीति पंचम सुर में पहुंचति रहे।

●●●

नदी का किनारा वाला बर का फेड़ से अकलू का गाढ़ प्रेम आ इयारी हो गइलि, भीखमपुर गाँव ले बर क इ फेड़ आधा मइल ओहटा रहल। एही फेड़तर, कबे अनगुतहां, कबे तिजहरिया आ कबे निचलांवां राति का बेरा देवकलिया का प्रेम–पूजा में अकलू कऽ बंसी बाजति सुनाई परे।

दस–पनरह दिन बीतत–बीतत भीखमपुर का गली–गाड़ा में एह बाति क चरचा सुनाये लागल कि देवकलिया क आदति जबून बा। कले–कले ई बाति साहु जी का कान तक पहुंचि गइलि, देवकलिया पर पूरा डाँट–फटकार परल आ तनदेही रहे लागल। एकर नतीजा भइल किं ओकर बहरा निकलल एकदम बंद हो गइल।

जहँवा कम से कम चउबिस घंटा में एक बेर प्रेम क अमिरित पीये आ आँखि में आँखि मिलावे क मोका मिलत रहे, अब कठिन पहरा में रहे के परे। अकलू का निरास होखे के परल। जइसे–जइसे समय बीतत गइल उनकरा के देवकलिया का बियोग क लहरि सतावे लागलि। कबे आधा राति कबे पछिली राति, अकलू पहाड़ ले नीचे उतरि के भीखमपुर पहुंचि जासु आ केनियो आड़ा–अलोता बइठि के बँसुरी बजावे लागसु। जब भिनसहार होखे लागे त टकसि जासु।

देवकलिया का दिल में आगि लागलि रहे। कबे ओकरा के चैन ना मिले। खाइल–पियल कम हो गइल आ ऊ दिनोंदिन दुबराये लागलि। ओकरा आँखि का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगा हरदम अकलू आ उनकरा बँसुरी क तसबीर नाचति रहे। कबे त ऊ सपना में देखे कि अकलू हमरा खटिया का मुड़तारी बइठि के बँसुरि बजावत बाड़न। जइसहीं ऊ चकचिहाइ के अकलू के धइलि चाहे तबले उँघाई टूटि जाय। माई पूछे कि 'बचिया खाति काहें नइखिसि?'– त कबे कपार दुखइला कऽ आ कबे पेट गड़ला क बहाना कइ दे।

साहु जी पहिले क त बड़ा धनी रहलन। बाकी समय का फेर से आज–काल उनकर दिन पातर हो गइल रहल। लइकी सयान हो चललि आ बियाइ क जोगाड़ ना लागल। साहु जी बड़ा फेर में रहलन। घरे जासु त देवकलिया कऽ माई मुँह नोचे दउरे आ बहरी आवसु त टोला–परोसा कऽ लोग खोभसे।

●●●

साहु जी इज्जत–आवरू का पेंचा परि के, पँजरे गंगा पार का चिरकुट साहु से सगाई क बाति करे लगलन। चारि सइ नगद गिनला पर बाति तय भइलि। बरतुई का बेर पान–कसइली, बरतन–कपड़ा भा नोकरन के देबे के रहल तवन फरका। एकरा बाद उनकरा बरातियो क खरच जुटावे के रहल।

बाबा जी बोलावल गइलन। साइत देखि के साहु जी बरइछा का रूप में एगो असरफी आ पाँच गो कसइली धइ दिहलन। दिनमान ठीक कइ के चमरू साहु अपना गाँवे भीखमपुर अइलन।

साहुजी क हाथ त सकेत रहल बाकी कइसहूँ कपार पर क बोझ उतारे के रहल। उनकरा पास सोना क एगो हलका रहे ओही के तोरवाइ के कुल्हि सबाहा ठीक भइल आ फागुन सुदी चउथि के देवकलिया क बियाह चिरकुट साहु का जेठ बेटा राम नगीना से हो गइल।

चमरू साहु का बियाहे बिदागिरी ना सहति रहलि एह से चिरकुट साहु उनकरा एह बाति पर राजी हो गइलन कि बइसाख में बिदागिरी होई। एक–डेढ़ महीना क समय बीतल कवन कठिन रहे?

●●●

अकलू क भीखमपुर घोरियाइल ना छूटल। उनकरा आँखि में देवकलिया क जवन तसवीर बइठि गइलि रहे ओकर निकलल कठिन रहल। देवकलिया क बियहल गइल सूनि के उनकरा करेजा में तीर मरला नियर घाव हो चुकल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमरू साहु, सोखा बाबा के मनवती भाखि चुकल रहलन कि देवकलिया क बियाह निरबिघिन पूरा हो जाई त ओकरा हाथ से परसाद आ पियरी चढ़वाइबि सोखा बाबा क थाम भीखमपुर ले डेढ़ कोस पूरूब रहल। चइत का नवरातर में बाबा किहे बड़ा भारी मेला लागे। मेला में हजारों—हजार लोग मनवती चढ़ावे आ ओझाई करावे खातिर पहुँचसु। मेहरारून क झुन्ड पहुँचि के भूत, प्रेत, बयमत, डाइनि आ चुरइलि छोड़ावे खातिर देवता खेले। हजारों मरद—मेहरारू बाबा का मंदिर के घेरि के हाथ झारत आ 'अहो—अहो' कहि के भूत खेलँ सऽ। मंदिर का चारो ओर बरम्ह लोग क सयकड़ों मूड़ी बनलि रहे।

चमरू साहु मनवती पूरा करे खातिर लइकी के लेइ के सोखाड़ मेला में पहुँचलन उनकर खियाल रहल कि मेला डेढ़ कोस बा, पूजा चढ़ाइ के साँझि ले लवटि आइब।

नउमी क दिन, देवकलिया बाबा का मंदिर में बइठि के पूजा चढ़ावति रहलि एतनें में ओकरा बँसुरी कऽ सबद सुनाइल। अकलू मंदिर का पिछवारा बइठि के आपन अलाप छोड़ले रहलन।

देवकलिया क मन त पहिलहली ले अकलू में बसत रहे। बँसुरी सुनि के ओकर मन अउरी बेछिपित भइल। अकलू क का पूछे के रहे? ऊ त देवकलिया का प्रेम में पागल भइल फिरत रहलन।

साहुजी क भाखल मनवती पूरा भइलि। पूजा खतम कराइ के कुछ देर ले मेला—बजार कइलन। जब घरी—डेढ़ घरी दिन रहल त सोचलन कि सकराहे चली, जे दीया—बत्ती कऽ जूनि होत—होत गाँव पर पहुँचि जाइबि। मेला—बजार क राह ठहरल, ओहू में ई राछछ संगे लागल बा।

चमरू साहु जब देवकलिया के लिआइ के घर का ओर चललन त अकलू मेला का झुन्ड मे एने—ओने लुकात आ बँसुरी बजावत पाछा—पाछा चललन। मेला कऽ राह चलत रहल, केकरा के, के टोके वाला रहे? साहुजी झोली लागे क बेरा होत—होत घरे पहुँचि गइलन।

चमरू साहु देखलन कि अकलुवा एह तरे ना मानी। एकरा रोग क दवाई ना भइल त ई बढ़ते जाई आ एक दिन कलंक क भागी बने के परी। एकरा पाछा हमार लाख रुपया क इज्जति बिगरल चाहति बा। जब इज्जति बिगरि जाई त घर—दुवार आ धन—दउलति रहि के का करी? साहुजी इहे सोचि के अपना बेटा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बोलाइ के सलाह कइलन कि सइ–पचास जवन लागे खरच करऽ आ एह साला के काटि के दरियाव में डालि द। रही बाँस न बाजी बँसुरी।

हुकुम आ सलाह भर क देरी रहलि। दुनियाँ में अइसन नीच काम करेवाला हतियारन कऽ कमी नँइखे। पास में रुपया रहल चाही, फेर त जवन काम चाही, घर बइठल पूरा होई। दूइ सव पर सउदा तय हो गइल। अकलू क सभ घात–पाँज गोंइयाँ लोग का पूरा–पूरा मालुम रहल। सब सिलखिला बइठाइ के ठीक कइ लिहल गइल।

कसाई लोग आपन भाड़ा लेइ के मोका का ताक में रहलन। बइसाख बदी नउमी के आधा रात का बेरा, नदी कऽ किनारा धइले अकलू पहाड़ ले नीचे उतरि के भीखमपुर आवे खातिर चलल रहलन। गोंइयाँ लोग टाही में बइठल रहे। ओह लोग क कउल आ साहु जी कऽ सोचल पूरा भइल।

बिहान भइला ई भनक जब देवकलिया का कान में परल त ओकर करेजा फाटि गइल। अपना बाप क अइसन पाप करम देखि के ओकरा घर से घिनावन हो गइल। उहो अपना मन में ठानि लिहलसि कि हमरे खातिर जब अकलू नियर सुघर जवान मारल गइल त हमार जीयल धिरिक बा। अकलू के बेजाइँ रहल ह कि ऊ हमरा से प्रेम करत रहलन...।

●●●

दूसरा दिन बिहान भइला चमरू साहु चउफाल पर बइठि के दतुवनि करत रहलन तबले, समहुता का चिरकुट साहु क एगो पठवनियाँ चिट्ठी लेइ के पहुंचल। साहु जी चिट्ठी बाँचि के घरे पहुंचलन तबले डाँड़ा बन्द रहल। तीनि–चारि बेर बोलवलन केहू ना बोलल। लवटि के दुवार पर अइलन आ पठवनियाँ से कहलन कि चलऽ हम पिठियाठोंक पहुंचत बानी...

घरी भर का बाद चमरू साहु का घर ले खबरि आइलि कि देवकलिया घरे नँइखे। का जाने कब डाँड़ा खोलि के कहाँ गइलि। सुनते साहु जी क चेहरा करिया हो गइल कि ई का भइल? आखिर में झंख मारि के दोकानि बेटा के सरेखि के ओह पार चललन कि दमाद बेमार बा, बोलाहटि आइलि बा, लवटि के आइब त ...खोज खबर कइल जाई।

गंगा पार कइ के चमरू साहु समहुता का ओर बढ़लन। चिरकुट साहु का बेटा का बोखार चढ़ल रहे। बोखार का गरमी से रहि–रहि के ओकरा दाँत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागि जाय। बयद लोग दवाई करत रहे।

बबुआ बिछावन पर रजाई ओढ़ि के छपिटात रहलन। उनकर मँहतारी हटि के दुवार पर ले बयद के बोलावे गइली तबले मुँड़तारी धइल कोठिला का अंतरा मे ले एगो गहुँवन निकलल आ बबुआ क हाथ लटकत रहे ओही में काटि के खटिया का ऊपर चढ़ि गइल। साँच पूछल जाय त प्रेमी क बिरह काल बनि के बबुआ के डँसि चुकल रहे एकर नीमन भइल बड़ा कठिन रहल।

जइसहीं चमरू साहु गाँव का गोंयड़ा पहुँचत बाड़न तवले चिरकुट साहु रोवत आ छाती पीटत, बेटा क लासि लियवले गाँव ले बहरा निकललन।

●●●

देवकलिया क पूरा खोज भइल बाकी ओकर पता ना लागल। चमरू साहु आ उनकर बेटा झंख मारि के घरे बइठलन। तीसरा दिन दुपहरिया में जब गाँव क चरवाह गाइन के पानी पियावे खातिर नदी का किनारा गइलनि स त बर का फेंड़ ले एक मइल दक्खिन एगो खोह में देवकलिया क लासि उतराइ के लागल रहे। ओकरा हाथ में ओही बँसुरी बजावे वाला क मूँड़ी रहलि।

अकलू भगत दूर देहाति क रहलन। एह पहाड़ का तरियानी में उनकर खोज—पूछ करेवाला के रहल? चमरू साहु खबरि पावते बेटा के भेजि के लासि जरवा दिहलन।

●●●

कुछ दिन का बाद अकलु आ देवकलिया का हतिया क पाप चमरू साहु के सोपह करे लागल। साहुजी जब सूति जासु त सपना में देवकलिया आ अकलू के साथ बइठि के बँसुरी बजावत देखसु। कले—कले साहुजी क बेटा, मेहरारू आ धन—दउलति सब संग छोड़ि दिहल। कुछ समय बाद साहुवो जी चलि बसलन।

चमरू साहु कऽ दयाद लोग देखल कि ई पाप हमन क नास मति करे एह से एकर कवनो उतजोग करे के चाही। ऊ लोग अकलू आ देवकलिया का डर से बहुत ओझा—सोखा भा पंडित—उपरोहित किहें दउर—धूप कइल। आखिर में सबकर राय मानि के पहाड़ का तरियानी में जहँवा दूनों क लासि फुँकाइलि रहलि चउर बन्हवा के पूजा चढ़ावल गइल त ओह लोग क जान बाँचल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब भीखमपुर गाँव त नँइखे, ओकर खड़ँहर डीह भर रहि गइल बा। आजुवो जे पहाड़ पर गाइ लेइ के जाला ऊ कहे ला कि पहाड़ का तरियानी में नदी का किनारा ले पाँच बाँस पच्छिम अकलू बाबा आ देवकालो सती कऽ चउर बनल बा। पहाड़ पर चढ़े का पहिले एह लोग क पूजा कइके त आगे बढ़ल जाला। चइत का नवरातर में एइजा नियरा–पास का गाँवन कऽ एगो छोट मेला लागे ला। देहाति–जवार क मेहरारू जुटि के चउर क पूजा करे ली स। लोग कहेलन कि ई लोग बड़ा जगता हऽ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सनकी

गुलाब का गोड़ में सीकर लगाइ के खंभा में बान्हल बा। सीकर से रगराइ के दूनों गोड़ में घाव हो गइल बा। ऊ अपना हाथ में लकड़ी लेइ के हरदम जमीन पर कुछ न कुछ लिखत आ मेंटावत बाड़न। कबे दोहा–चउपाई, प्रेम क गीत भा सूरदास क बियोग भरल पद त कबे अंकगणित आ बीजगणित क कायदा। उनकरा सामने पद क एगो किताब धइलि बा। किताबि का शुरू में एगो तसवीरि में दूइ आदिमी क फोटो बनल बा। कबे त सनकी गुलाब किताबि क पद पढ़त बाड़न आ कबे ओह तसबीरि के देखत बाड़न। कुछ देरी का बाद फेर लिखे क ऊहे काम...

घर क लोग बंहुत दउर–धूप कइल। हजारों रुपया दावा–बीरो में खरच भइल। एक से बढ़ि के एक डाकदर–बयद अइलन, बाकी केहू क दवाई ना काम कइलसि। आखिर में गुलाब के घर क होनहार नवजवान समझि एक बेर ले अउरी कोसिस भइल। गुलाब क काका चारि सइ रुपया लेई के पटना का बड़ा डाकदर के लियाइ के देखावे खातिर पटना गइलन।

●●●

गुलाब अकेली कोठरी में राखल रहलन। ढेर आदिमी देखला पर हाथ–गोड़ पीटे आ चिकरे लागसु। खाली खायक देबे का बेर उनकर बहिन जाय, काहें से जे ओकरे हाथ से खासु। कवनो किसिम क दवाई खियावल भा डाकदर बयद के लियाइ के उनकरा पँजरा गइल बड़ा बिपति क काम रहल। जब सरयू राय डाकदर के लियाइ के पहुँचलन त इहे उपाइ सोचल गइल 'कि विसारद' जी का अइला क झूठ बहाना कइल जाय।

'गुलाब क बहिन जाइ के उनकरा से कहलसि – ' ए भइया, एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanași Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदिमी 'विसारद' जी क खबरि ले आइल बा कि पूछि आवऽ जे गुलाब कहाँ बाड़न।'

बहिनि क बाति सुनि के गुलाब कुछ ना बोललन। जब डाकदर साहेब सरयू राय का साथे जाइ के उनकरा के देखलन त कुछ देर त ऊ कुछ ना बोललन, कुछ जाँच–पड़ताल होखे लागल त गुलाब क मिजाज बिगरल आ ऊ ताड़ी ठोंकि के कूदि परलन। सी कर तड़तड़ाइल आ डाकदर के लिहले सरयू राय बहरा अइलन।

बहरा आइ के डाकदर साहेब, सरयू राय से गुलाब क बेमारी आ ओकरा होखे क कारन बतावे लगलन–बाबू सरयू राय जी, गुलाब का दिमाग क कुछ पुरजा गड़बड़ाइ गइल बाड़न स ।

नबुज धइला भा जाँच–पड़ताल कइला से इहे पता चलत बा कि इनका दिमाग आ करेजा पर कवनो भारी सदमा पहुँचल बा । दवाई कइला का साथे–साथ ओकरा के दूर करे क उपाइ कइल जरूरी बा ।

●●●

दुनियां में बहुत जीव बाड़न बाकी आदिमी सबका ले चतुर समझल जाला। आदिमी में अकिलि आ कारीगरी क एतना सीफति भरलि बा कि ऊ माटी छूइ दे त ऊहो सोना हो जाई । रेडियो, हवाई जहाज, सिनेमा भा एही तरे अउरी जेतना अचरज भरल चीज लउकत बा ऊ कुल्हि आदिमिये का दिमाग क उपज ह।

संसार का समुन्दर में डुबकी लगवला पर आदिमी के दइब क बनावल दूइ गो अनमोल रतन प्रेम आ सुघराई मीलल। प्रेम, संसार का समुन्दर क मोती आ दुनियाँ का खानि क कोहनूर हीरा ठहरल। प्रेम आ सुघराई का संयोग भइला से कयलान आ आनंद मिले ला। आनंद अमिरित ठहरल जीव एकरा के पाइ के अमर होइ जाला। दुनियां क सभ जीव, का आदिमी, का पशु–पंछी, एही प्रेम का डोरी में नथाई के जिनगी गंवाइ रहल बाड़न, एकरे परताप से कायम आ खुसहाल बाड़न। दुनियाँ में आइ के जे प्रेम नियर अनमोल पदारथ के ना पावल ओकर जिनिगी अकारथ बा। साधु, पंडित, गिरहस्त सभ, कवनो ना कवनो रूप में एही के पावे खातिर बेकल बा।

●●●

आज ले दस बरिस पहिले, गुलाब बसगित का साथे रहि के धरमपूरा हाई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसकूल में पढ़त रहलन। अपना घर क एक ही होनहार लइका रहलन, से इनकर मान—जान रहे। गुलाब गाँव—घर क दुलरुवा त रहबे कइलन बाकी दिमाग का तेजी आ पढ़ाई में कमाल देखवला से हीत—गन, जवार—मँथार सभकरा हाथ क फुलेहरा रहलन। बसगित, उनकर दयाद रहलन। उनकर ओतना मान—मरजाद ना रहल। सवाल ई बा कि गुलाब का फूल क दुनियाँ जेतना आदर करे ले ओतना एकवन भा धतूर का फूल क ना करे। बसगित क पलिवार, तीस बेकतिन क लेहड़ा रहल। उनकर हक—हीसा चउथी रहे। एह चारि आना में ऊ तीनि भाई रहलन। दूइ भाई गिरहस्ती में रहसु आ बसगित पढ़सु।

बसगित आ गुलाब क साथ कउवा आ हंस संघति रहे। गुलाब के देखला से बुझाय कि बरम्हा इनही के बनावे में आपन आधा सुघराई खरच कइ देले बाड़न। गुलाब, सचमुच में गुलाब का फूल के माँत करे वाला रहलन। बसगित साँवर, चकइठ आ कोतहगर—दनियाँ, सकमक मँकरतेनि का खूंथ नियर।

गुलाब क सुभाव चंचल आ सखरज रहे त बसगित क नटखट आ किरिपिन। दूनो जाना एक ही कोठरी में रहसु। सुभाव एक दूसरा का उलटा रहला से ओह लोग का आपुस में हरदम झगरा भइल करे। बसगित बल में गुलाब ले बीस परसु। जब कबे झगरा होखे त उठाइ के दे मारसु। 'परलन राम कुकुर का पाले'— क हालि रहे। तीनि—चारि महीना ले त एह झगरा क हालि केहू ना जानल बाकी खोंखी, खासि आ दिल क दुख—सुख ढ़ेर दिन ले ना छिपल रहि सके। जवन बाति पेट मे जनम लेइ चुकलि ओकर कहियो न कहियो बहरा आइल जरूरी बा।

रामनगीना मिसिर, गुलाब आ बसगित दूनों जाना क हितलगाह रहलन। जब कबे ऊ अपना गाँव ले धरमपूरा आवसु त दूनों जाना कऽ खोज—पूछ करसु। कवनो किसिम से उनकरा गुलाब आ बसगित का आपसी रगरा क पता चलल। रामनगीना ओह लोग क ई हालि देखि के बड़ा दुखी भइलन, उनका मने—मन पूरा अपसोस भइल कि 'इहे ढंग रहल त इन्हन का पढ़िहँन स का? अबे त चारि बरिस रहे के बा। दस—बीस दिन रहित त कइसहूँ मँहटियाइ के निबुकावलो ठीक जनाइत। 'जिनिगी भर जीये के आ सउरी में ओझाई, ई रोजिगार ठीक नँइखे।

रामनगीना धरमपूरा आवसु त अपना विदमान साथी 'विसारद' जी से जरूर भेंट करसु। 'विसारद' जीं समाज का मांनसरोवर क हंस रहलन। देस का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरीब आ जाँगर चलावे वाला किसान–मँजूर जनता क सेवा उनका जिनिगी क निसाना रहे। किसान–मँजूर सभा क काम कइल आ आपन कलम चलाइ के ओकरा के अकिलि सुझावे वाली पोथी लिखल उनकर काम रहल। 'विसारद' जी धरमपूरा महाबीर चउतरा पर रहसु। एक दिन रामनगीना, गुलाब आ बसगित दूनों जाना के लियवले उनकरा किहें पहुंचि के जान–पहचान करवलन। पावलागी–चिरंजी भइला का बाद सर–समाचार होखे लागल। रामनगीना का त 'विसारद' जी से कवनो परदा रहल ना कि एहलोग क हालि ना कहितन। विसारद जी आ रामनगीना, गुलाब–बसगित के बहुत समझवलन कि एक साथ मेल से रहि के पढ़े के चाही बाकी ई समझावल पत्थर पर क तीर मारल रहे।

आदिमी का जिनिगी में चउदह बरिस का उमिरि से लेइ के चउबिस बरिस तक एगो खास किसिम क निसा रहे ला। लरिकाई का एह काँच उमिरि में लइकन पर, बाप–महँतारी, गुरु–पंडित केहू क असर ना परे। ओकरा अपना इयार दोस्त क कहल ढेर रूचेला आ ओही क असरो परेला। एक त गुलाब आ बसगित जिनिगी का एक पहर में रहलन, दूसरी बाति कि के कवना हालति में रहत बा? ओकरा दुख आ झगरा–झंझटि क कारन का बाटे? बिना एकर पता लगवले उपदेस भा उपाइ कइला से कवनो फायदा ना होखे। तीनि आ छव क मुँह एक ओर कबे ना होइ सके। आखिर में रगरा क इहे नतीजा भइल कि दूनों जाना दूइ डेरा पर रहे लगलन।

●●●

महाबीर चउतरा पर बहुत जोर से बेमार परला का बाद 'विसारद' जी सहर छोड़ि दिहलन। अब उनकर डेरा गंगा–घाटि का पँजरा सेवा उपवन में चलि आइल।

गुलाब गंगा–घाटि का बगल में रामएकबाल दास का मँठिया में रहत रहलन। बरतन–चउका आ बनावल–खाइल सभ काम अपनही करे के परे। लोच उमिरि आ सुकुवारि देहि क लइका, तनिके में थाकि जासु। अनगुतहाँ त बनावते–खात इसकूल क टइनि हो जाय। मुसकिल से आधा घंटा समय मिले। जहिया हिसाब बनावे भा कुछ लिखि के इसकूल में देखावे के रहे तहिया त भुजना–चबेनी पर सबुर करे के परे। राति के बनवला–खइला का बाद किताबि लेइके बइठला पर ऊँघाई झोंके आ गुलाब सूति जासु। आधा राति, पिछली राति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब पेसाब करे उठसु त लालटेनि बरति रहे आ किताबि खटिया का नीचे गीरलि रहे।

'विसारद' जी क डेरा पँजरे रहल। बसगित आ गुलाब जान–पहचान हो गइला से कबो–कबो पढ़े आवसु। ओह लोग का अइला पर 'विसारद' जी आपन कलम चलावल बंद कइ के पढ़ाइ देसु। अइला–गइला से जान–पहचान बढ़े लागल।

जवहरी क पारखी आँखि रतन के बहुत दूर ले पहिचानि लेले। गुलाब में केतना–चमक आ कवन–कवन गुन भरल रहे, 'विसारद' जी का ई जानत देरी ना लागल। समय आ दइब का दया से हीरा जवहरी का नियरा आ गइल।

कबि क दिल लयनू ले बेसी मोलायम होला। कबि का दिल में प्रेम, सरधा, सेवा आ दया क गंगा–जमुना आ सुरसती बहति रहे ली। जे ओह तिरबेनी में गोता लगावे ला ओकर जिनिगी सफल हो जाले। 'विसारद' जी पारखी कवि रहलन।

ऊ सिरिहिटी का मोहिनी फुलवारी के घाम–सीति से बचाइ के सीचेवाला माली रहलन। साँच पूछल जाय त दुनियाँ जो मानसरोवर ठहरलि त कलमि चलावे वाला हंस। एह मानसरोवर में डुबकी लगाइ के मोती बीनल ओकर काम ह। अगर दुनियाँ फुलवारी ठहरलि त कलमि चलावे वाला भँवरा, किसिम–किसिम का फूलन क रस लेइ के समाज का भलाइ खातिर मधु तइयार कइल ओकर काम ह। पारखी आँखि वाला मोलायम मिजाज क माली गुलाब क दुरदसा ना देखि सकल। नतीजा भइल कि 'विसारद' जी का आपन राय बदले के परल।

'विसारद' जी 'गुलाब' में अइसन बढ़ियां गंध पयदा कइल चाहत रहलन कि सबकरा दिल में गुलाब खातिर आदर–मान आ सरधा क जगहि रहे। उनकर खेयाल रहल कि जइसे दुनियाँ गुलाब का फूल से बनल अँतर क कदर करति बा ओइसहीं एहू गुलाब का गुन क कदर होखे।

●●●

माली, गुलाब का प्रेम में बन्हाइ के ओकर सेवा करे खातिर लचार रहल। गुलाब क सेवा उनका जिनिगी कऽ खास निसाना रहे। अपना खून के पसीना बनाइ के, फुलवारी का दूसरा लता, फूल आ झाड़िन से गारी सूनि के, बजार में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन इज्जति कउड़ी क तीनिसेर बेंचि के गुलाब क जेतना सेवा कइल जा सकत रहे मालि कइलसि। गुलाब मन लगाइ के पढ़े लगलन। अब उनकरा एह बाति क फिकिर ना करे के परे कि हमार कपड़ा मइल बा त कब आ कइसे साफ होई, रसोई कब बनी, कवन समान घटल बा आ ऊ कहाँ से आई। गुलाब इसकूल से पढ़ि के आवसु त जलखई खातिर कहियो महँनभोग, कहियो फराठा आ कहियो फल भा मिठाई धइल रहे। जलखई कइला का बाद ऊ टहरे भा खेले–कूदे चलि जासु। टहरि के लवटसु त बिछवना लागल रहे। किताबि आ लालटेनि सामने धइल रहे। बइठि के पढ़े लागसु। खायक तइयार होखे त खाइके सूतसु।

माली का उचित सेवा से गुलाब क रंग बदलि चलल। अब पढ़े–लिखे भा बाहरी बातन का जानकारी में केहू उनकर मोकाबिला करेवाला ना रहल। गुलाब का गंध क आदर होत, उनकरा के जस पावत देखि के 'विसारद' जी क छाती खुसी का मारे गज भर क होइ–जाय।

●●●

बाकी जवन गुलाब दुनियाँ का फूलन क राजा समझत जाला ओही में काँटो होला। सजग ना रहला पर अंगुरी छेदाइ जाले आ खून बहे लागेला। गुलाब काँच उमिरि क रहलन। पोथी किताबि त ढेर जरूर पढ़ल रहलन बाकी उनकरा दुनियाँ का बेवहार क गेयान ना रहल। एही से ऊ 'विसारद' जी का सेवा, सरधा आ प्रेम क कीमति ना समझि सकलन। तीनि बरिस क समय तप क समय रहल।

धरमपूरा में गुलाब का पढ़ाई क आखिर बरिस बीतत रहल। 'घर क मुरगी दालि बराबर'– वाली कहाउति कुछ–कुछ साँच होखे लागलि। इनटरेस क इमतिहान देइ के गुलाब घरे गइलन आ 'विसारद' जी मानसरोवर। आदिमी में कमजोरी होखे ले। गुलाब आ 'विसारद' जी दूनों के एक दूसरा का कमजोरी से धक्का पहुँचल।

●●●

अगर कवनो कारीगर बढ़िया चीज तइयार करे आ ओकर कीमत ना होखे त ओकरा दिल के बहुत चोट लागेला। ऊ अपना कारीगरी क अपमान बरदास कइ के जीयत ना रहि सके। फिरदवसी कवि का रचना क अपमान भइला से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुख का मारे ऊ मरि गइलन। 'विसारद' जी का दिमाग में गुलाब क ई सबद मँड़रात रहे–'तू बदमास ठहरलऽ, हम तोहरा के खूब चीन्हत बानी। ढोंग जनि रचऽ...

●●●

एक दूसरा का नासमझी से परिवार भर का ई दुख उठावे के परि रहल बा...बा...

बारह बरिस बीति चुकल 'विसारद' जी क पता ना लागल। हो सकेला दुख का झोंक में जिनिगी क कली टूटि के धूरि में मीलि गइलि होखे।

गुलाब बहुत दउर–धूप कइलन 'विसारद' जी क पता ना लागल। उनहीं क दुख इनकरा के...

डाकदर साहेब गुलाब क कहनी सुनि के दंग रहि गइलन...।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दफा ३०२

डुमराँव इसटेसन ले दस रस्सी उत्तर कुसुरूपा नाँव क एगो छोट पूरा बा! करीब पचास घर क बसगित होई। एह गाँव में अहिर, नोनिया, कोइरी आ दूइ—तीनि घर बाभन बसल बाड़न।

ई गाँव महराजा बहादुर डुमराँव का जमींदारी में परेला। गाँव में दूइ—घर बाबाजी, एक घर अहिर आ दूइ घर कोइरी लोग के छोड़ि के केहू अइसन नँइखे जेकरा एकहू धूरि जमीनि होखे! घूमि—फीरि के मँजूरी कइला से सब केहू का पेट क धंधा चले ला।

रामनाथ एही गाँव क गरीब नोनियाँ रहलन। सहरि में मोटिहाई कइल, इसटेसन पर माल लादल भा जातिरिन क गठरी ढोइ के सहरि में पहुँचावल, इहे उनकर रोजिगार रहे। अनगुतहाँ ले साँझि तक जाँगर ठेठाइ के एड़ी—चोटी क पसीना एक कइला पर एह महँगी में कइसहूँ पेट के काम चलि जाय। कबे खेसारी, चोकर, कन आ खुद्दी क लिट्टी मिले त कबे खेसारी क दालि, रहिला क साग आ सेर्हा—करँगी क भात। इहो खायक रोज ना नसीब होखे।

रामनाथ का घर क देवालि आ छपर दूनो फूसे क रहल। गाँव ले निचाट पुरुब ओर गड़ही का दाँती पर उनकर मड़ई, केतना जमाना से अपना दुरदसा पर झंखति, लोर भरलि आँखि से दुनियाँ का ओर तिकवति रहे। मड़ई, रामनाथ का दुख क साथिनि रहलि। ओकर एक—एक गो कोरो रामनाथ का दुख क कहनी कहत रहलन स। अबे आठे महीना पहिले, रामनाथ का बुड़वती क ठेघुनी, उनकर एकही बेटा बाप का नाइ के मँझधार में छोड़ि के चलता भइल रहे। रामनाथ के छोड़ि के घर में बेवा पतोंहि, अढ़ाई बरिस क नाति, इहे दूइ बेकति अउरी रहलन। रामनाथ घर ले बहरा मँजूरी करे जासु आ उनकर एक आँखि क कानि पतोहि घर क काम सम्हारे। गाँव में जाइ के कुटवनी—पीसवनी करे आ सेर—पसर अनाज कमाइ ले आवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामनाथ क पतोहि बुधिया, तनी–मनी बेमार रहे तबो ओकर काम कइल बंद ना होखे। बातियो त साचे न बा। दुनियाँ में आज ले गरीब के, चाहे ऊ बेमारी से मरत भले ही होखे–केहू मुफुत में खाये के ना दे सके। जाँगर चलावे वाला का मेहनति क कमाई चोराइ के मालदार लाखपती से करोड़पति आ करोड़पति से अरबपती बने का धुनि में मस्त बाड़न। जनता क फिकिर केकरा बा?

●●●

रामनाथ क करम खाली रहे। दुख क घनघोर बदरी एह बुढ़वती में चारो ओर ले उनकरा जिनिगी के घेरले आवत रहली स। घर में बेवा पतोहि बुधिया हाथ–गोड़ चलाइ के सेर–पसर कमाति रहे, ऊहो पनरह दिन ले खटिया धइले रहलि। दवाई आ पथ बिना बेमारी बिगड़ती जाति रहे। धतूर क जरि, कातर क सोरि आ लिसोर क काढ़ा का करी? जब पथ खातिर छटाँक भर अनाज मीलल कठिन रहे त दवाई का कपार फायदा करिति?

मँहगी का करते बजारि में आगि लागलि बा। कँटरोल का आड़ में घूस–रीसवत बिना खँड़ोभर क चीज मीलल दुलम बा। खाझा नियर साफ टोपी पहिरि के कँगरेसी लोग ऊपर ले त घरियार नियर लोर बहावत बाड़न बाकी भीतरे–भीतर एडभाइजरी–कमेंटिन में अपने भा अपना हित के भेजि के गरीब क खून चूसत बाड़न। दूसरा ओर बजार क नतीजा भइल कि छोट–छोट बनियन क रोजिगार मराइ गइल आ गोला–पाटी बंद होखे लगलन स। अब लोहा, लकड़ी, सीमेंट आ ईटा ना मिलला से मकानियो ना बनत रहली स जे गरीबन के मँजूरी करे के मिलित। साधारन आमदनी भा रोज–मँजूरी कइ के जीयेवाला लोग क दुख दिन पर दिन बढ़ते जात रहे। जहाँ पहिले तीनिआना में पेट भर सतुवा मीलत रहल ह अब रुपये सेर बिकाइ रहल बा। कइसहूँ कम खाई त एगो मँजूर के सेरभर चाही। एह हिसाब से दूइ रुपया रोज मिले त एगो पेट क काम चली। घर क बेकति–बाला त अबे फरका बाड़ी।

रामनाथ का पतोहि बुधिया क बेमारी घटित कहाँ ले बढ़ते जाति रहे। जर क गरमी आ बीसों दिन का उपास क कमजोरी दूनों मीलि के ओकरा के एतना झुलाइ दिहलनि स कि देह में ठटरी छोड़ि के दूसर कुछ ना बाँचल रहल। कपार क आधा बार झरि गइल रहे। दूसरकी आँखि जवन नीमनि रहे ओहू में माँड़ा परि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल। कपार पर भेंगरइया क रस, बकरी क दूध आ सिरिका धराते रहि गइल कुछ ना सुनलसि। आँखि मे बर क दूध आ कान मे उजरका फूलवाला एकवन क रस डालन गइल ओहू से कुछ ना भइल।

रामनाथ घर क ई दसा देखि के अपना करम–तकदीर के रोवसु–झंखसु। पहिले त चुचुर–माँचुर कामों चलल बाकी अब त कवनो रोजिगार–धंधा मीलल कठिन रहे। तीनि दिन ले मंजूरी ना मिलला से रामनाथ का आँखि क लोर पी के रहि जाये के परत रहल। घर में कानी कउड़ी ना बाँचलि रहे कि कुछ ले आइ के पतोहि के पथ देसु आ नाति के जियावसु। साँझि का बेरा जइसही रामनाथ घरे आवसु उनकर अढ़ाई बरिस क नाति, बाबा–बाबा कहि के दउरि परे आ उनका गोड़ पर लोटे भा थइली टोवे लागे।

रामनाथ क जिनिगी उनका खातिर बोझ भइलि रहे। पतोहि क तेलहा दरबि वाला कड़ा रहे तवन त ओझा लोग का फेर में परि के पहिलही बेंचि चुकल रहलन। गाँव क परीन ओझइत झींगुर कमकर कहि चुकल रहलन कि बुधिया के पँचपिपरा गड़ही में क चुरइलि धइले बा।

●●●

चउथा दिन, सवँसे दिन मँजूरी का खोज में घूमि के जब कहीं कुछ ना मिलल त रामनाथ उदास चेहरा लिहले घरे लवटलन। फिकिर आ कुफुति से गोड़ त सोझ परत ना रहे कइसहूँ दूइ घरी राति गइला घरे पहुँचलन। नाति 'बाबा,बाबा' कहि के दउरल बाकी रामनाथ का पास का रहल जे देसु? थोरे देरी ले रोवला–छपिटइला का बाद लइका क जीव थाकि के सूति गइल। रोज त लइका भर दाना, भुजुना आ कुछ न कुछ मिलियो जात रहल बाकी आज ओहू का छपिटाइ के सूति जाये के परल।

अन्हार मड़ई में गुर्ही से बीनल टुटही बँसहट पर परल–परल रामनाथ अपना जिनिगी के धूंसत रहलन। नाइ मँझधार में पहुँचि के चकोह से डूबे–डूबे भइलि रहलि। उनकर एक छन एक जुग का बराबर बीते। रहि–रहि के रामनाथ इहे सोचसु...

पनरोह का पिलुवा क जिनिगी बितावल आ घूलि–घूलि के मरला ले एक बेर क मरि गइल...नी...म...न।

अब दुख ...नँइखे ...बरदास होत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसहूँ राति बीतलि। बिहान होते रामनाथ इसटेसन का ओर चललन। मंगर के सहरि भर में हिनदू बनिया—महाजनन क सभ काम बंद रहे ओने गइला में कुछ ना भेटाये के रहे।

डाँकगाड़ी आ दूइ गो पसिंजर आइ के निकलि गइली स। रामनाथ के कवनो मंजूरी ना मीललि। लइनि का बांये बगल पीपर का सोरि पर बइठि के रामनाथ चारि बजे साँझि का इसपरेस क राह देखत रहलन। बहुत देर अगोरला का बाद इसपरेस अपना समय ले दूइ घन्टा लेट, छव बजे पहुँचलि। गाड़ी खड़ा होते रामनाथ झटकि के पलेटफारम पर पहुँचलन, पहिला दरजा का डिब्बा में ले एगो रंगरेज— 'कुली!' पुकारि के नीचे उतरल। रामनाथ खोंढ़ा में पहुँचि के जइसही गठरी उठावत बाड़न तबले इसटेसन क एगो लंबरदार कुली पीछे ले मलपटे पर एक झापड़ मरलसि। साहेब पाँच कदम आगे बढ़ि चुकल रहलन। भूखि, गरीबी आ बिपति क मारल रामनाथ थपरा लागते ढमिलाइ गइलन। एइजा उनकर फरियाद सुनेवाला रहबे के कइल?

●●●

दूइ घरी राति चलि गइलि आ रामनाथ ओही पीपर का सोरि पर बइठल बाड़न। उनका ई नँइखे बुझात कि का करी, कहँवा जाईं? आजुवो सड़कि नापि के खाली हाथ घरे लवटे के रहल। ई रामनाथ का उपास क पाँचवा दिन रहल। डेग उठावसु त आगा अन्हार हो जाय।

लाचार होइ के पहर भर राति गइला घरे पहुँचलन। नाति त उँघाइ गइल रहे। बुधियो क आँखि भरमत रहली स। रामनाथ अपना टुटही बँसहट पर थसकि के गीरि परलन।

●●●

आधा राति क बेरा आ कुवार क अन्हरिया रहलि। रामनाथ सभ रोग क आखिरी दवाई करे का फेर में रहलन। ओने दुवार का पँजरे महुवा का फेंड़ पर उरुवा बोलत रहे। रामनाथ खटिया पर ले उठि के चललन तबले सियारिन फेंकरलि। नाति का खटोला का पँजरा पहुँचि के ऊ ओकर नँटई दबाइ दिहलन आ पतोहि बुधिया क खबरि लेबे चललन।

एइजा त भगजोगनी दुख से छुट्टी पाइ के आखिरी नींदि में सूति चुकलि रहलि। आँखि उलटि गइल रहली स। सांसि बंद आ हाथ—गोड़ पाला हो चुकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहे। रामनाथ तीनि घंटा पहिले जवन काढ़ा पियवले रहलन ऊ एही रोग क दवाई रहे।

अब त रामनाथ एह उपाइ में रहलन कि जल्दी से दूनो लासि नापता कइ के बिहान होखे ले पहिलहीं गायब हो जाईं। उनका मड़ई ले दस रस्सी पुरुब गड़ही रहलि। आपन कुदारी लेइ के रामनाथ जल्दी–जल्दी दूइ गो गड़हा तइयार कइ लिहलन। पारा–पारी दूनो लासि दूनों गड़हन में डालि के ऊपर ले पूरा माँटी डालि दिहलन आ पीटि–पाटि के जमीनि का बराबर कइ दिहलन कि ई न जनाये पावे जे कुछ गाड़ल बा।

बसगितिया चउकिदार के रामनाथ का एह करदानी क खबरि मीलि गइलि। आ ऊ थाना पर पहुँचल। दरोगा दूइ गो सिपाही लेइ के बसगितिया का संगे कुसुरूपा पहुँचलन। एइजा त रामनाथ पहिलहीं नव दू एगारह होइ चुकल रहलन। कुसुरूपा पहुँचला पर पुलिस के रामनाथ कऽ पता ना लागल।

तवना समय में ६ बजे अनगुतहाँ एगो इसपरेस–पुरुब जाति रहे। पुलिस का सक–सुबहा भइल आ ऊ इसटेसन पहुंचि के गाड़ी रोकि दिहलसि। खोढ़े–खोढ़ा तलासी होखे लागल।

आखिर में ग्रड वाला डिब्बा का पँजरा एगो खोढ़ा में बेंच का नीचे सपटल रामनाथ धराइ गइलन।

पुलिस उनके ३०२ दफा का मोताबिक पकड़ि के मारत–पीटत हाजति पहुँचवलसि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेहल कऽ सनदि

कँगरेस, अपना जिनिगी का गोल–मँटोल निसान पर पहुँचि के आपन पँयतरा बदले लागलि। देस क कँगरेसी नेता, गाँधी जी नियर महातमा क कहल चूतर तर धइके, बिलाइत का मालदारन क भलाइ सोचेवाली रँगरेजी सरकार से सुलह कइ लिहलन। धुरुत रँगरेजी सरकार, जवना बकसा में सुराज क गठरी बंद कइ के बिलाइत का बजारि ले हिनुसतान में ले आइलि, ऊपर ले त ओकर रंग बड़ा चहकदार रहल। बकसा किसिम–किसिम का रंग से रँगल रहे। चारो ओर मन के मोहेवाली तसबीरि रहली स। साधारण लोग एह माया के ना समुझि सकलन। सुराज क बाति सूनि के ओह लोग का आखिरी खुसी भइलि। १५ पनरह अगस्त के, जहिया बकसा क चाभी जवाहिर लाल आ पटेल का हाथ में मीललि त देस में मिठाई बँटाइलि आ देवारी मनावलि गइलि।

एक ओर त ई रंग रहल, दूसरा ओर किसान–मँजूर सभा के नेता चिचियाइ के जनता से कहत रहलन कि हमन का एह माया में ना फँसे के चाहीं। किसान–मँजूर खातिर बड़ा संकट क घरी आइ रहलि बा। बकसा क रंग भर–चहकदार बाटे। एकरा में नकली सुराज भरल बा। एकरा में कवनो सक–सुबहा क बाति नँइखे कि जाँगर चलावे वाला लोग अपना खून से पटाइ के कँगरेस के बरियार बनावल बाकी आजु त ओकर लगामि देस का मालदारन का हाथ में बा। मालदार लोग जवन कहत बा ऊहे होइ रहल बा। दूसर कारन भइल ह कि हिनुसतान क मालदार बनियाँ बिलाइत का मालदार बनियन संगे सुलह कइ के देस के दूइ टुकड़ा में बाँटि दिहलन हँ।

कँगरेस साठि बरिस क बूढ़ होइ के अपना जिनिगी के मनसा पूरा कइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुकलि। किसान—मँजूर आ बिदारथी सभा का रूप में ओकर केतने बेटा—नाति काम सम्हारे लायक हो गइलन। बाकी जइसे घर क बूढ़ मलिकार, भले ओकरा से कुछ सँपरो भा ना, अपना लरिकन के चाभी ना दिहल चाहे आ बहाना करेला कि 'अबे सहूर सीखऽ, चाभी दिहला पर कुल्हि गूर—माँटी कइ' देबः, ओइसहीं अब कँगरेस कइ रहलि बा।

देस क लगामि अपना हाथ में राखे क बाति सोचि के कँगरेस क नेता लोग जिला—बोड में आपन आदमी भेजे क उपाइ सोचि चुकल रहलन। एह हुकुम का मोताबिक, पारा—पारी हर जिला में जिला—बोड का मेंबरन क चुनाव होखे लागल । छकउड़ी मिसिर अपना जिला क सरहँग सरदार रहलन। पलामू जिला क कँगरेस कमेटी उनका हाथ क कठपुतरी रहे जब जइसे चाहसु नँचावल करसु। जिला का ढेर थानन में उनही क हीत—गन आ भाई—भयवदन के कँगरेस के टिकट मिलल।

सोभा तिवारी बसवली थाना क चलता-पुरजा मोकदमाबाज आ रोबदाब राखेवाला कँगरेसी रहलन। छकउड़ी मिसिर का भतीजा से उनकरा लइकी क बियाह भइल रहे। तिवारी जी का पास एक—दूइ बेर जेहल गइला क सनदि रहबे कइलि। दरखास दिहला भर क देरी रहे। जिला कमेटी उनकरा के बसवली थाना क जगहि दिहलसि।

●●●

मिसिर जी क परताप आ अपना धुरूताई का बल पर तिवारी जी दस बरिस ले थाना कँगरेस कमेटी क सभापति होत आवत रहलन। अपना छल—कपट से कमेटी क जगहि उनकर बपवती हो गइलि रहे। तिवारी जी कँगरेस क चवन्नियाँ मेंबरी क बही अपना हीत—गन, भाई—भयवद छोड़ि के दूसरा के ना देसु। एकर नतीजा होखे कि उनकरा मन मोताबिक जे उनकर पोंछि सुहरावे से त थाना कमेटी कऽ मेंबर आ एडवाइजरी क सिगरेटरी भा मेंबर हो जाय दूसर केहू बने आ बनावे खातिर तरसते रहि जाय।

तिवारी जी का एह नजायज जाल—फरेब का बिरोध में हजारों—हजार दरखास परल। केतने लोग पटना—पलामू एक कइलन, बाकी कवनो सुनवाई ना भइल। तिवारी जी त थाना क दागल साँढ़ रहलन। एडवाइजरी कमेटी क सभापति हो गइला का बाद त उनकर पाँचो घीवमें रहे। जेनिये चलसु दस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदिमी घेरले चले। कोटा, काड आ परमिट क बजारि गरम रहे। तिवारी जी पूरा चानी काटत रहलन। गरीब लूटल जासु आ रहि-रहि के जनता का मन में सवाल होखे कि इहे सुराज हऽ? एही खातिर एतना सासति आ दुरदसा सहे के परल ह?

थोरे दिन पहिले इहे शोभा तिवारी बबुर का छालि में क रँगल चद्दरि ओढ़सु। आज डेढ़सइ क असामी अंडी आ अलवान बिना काम नँइखे चलत। दुवार पर टेबुल—कुरसी लागल बा। डेढ़ हजार क अवलख घोड़ा बान्हल बा।

तिवारी जी दूर क बाति सोचेवाला रहलन। जिला बोड क अगाही बड़ा उजियार रहे। कल—कारखाना खुले आ रेलि निकले क तइयारी होति रहे। बोड करोड़ों रुपया का ठीका—पट्टा क मालिक होखेवाला रहल। तिवारी जी का जीभि से लार टपकत रहे। दउलति का एह दरियाव में हाथ धोवे खातिर, सतुवा—पिसान बान्हि के तइयारी करे लगलन।

२

बसवली थाना, किसान—सभा क गढ़ रहे। एह थाना क किसान—मँजूर जिला भर का किसानन ले सजग रहलन। एइजा दूसरा क दालि गलल मुसकिल रहे। किसान—सभा का चलनि का मोताबिक पलामू जिला किसान सभा हर थाना कमेटी के चिट्ठी भेजि दिहलसि कि जिला बोड का मेंबरी खातिर अपना—अपना थाना ले खड़ा होखेवाला आदिमिन क नाँव चूनि के जिला कमेटी का आफिस मे भेजि दिहल जाय।

किसान सभा के हुकुम के मोताबिक बनवारी सिंह थाना किसान—सभा का ओर ले शोभा तिवारी का खिलाफ जिला बोड का मेंबर खातिर खड़ा भइलन। कंगरेस का नाँव पर चोर, डाँकू आ मोकदमाबाज आदिमी के वोट देइ के जाँगर चलावे वालन क गर कटवावल, किसान—सभा का ना मंजूर रहे।

जइसहीं सुराज क सनूखि खुलल, जनता नकली सुराज क कलई खुलत देखि के अचरज में परि गइलि। जवन कँगरेस, एतना दिन ले किसान—मँजूर राज क बाति बोलति आवति रहलि ऊ भेड़ि का खालतर हुँड़ार साबित भइलि। ओकर पँयतरा बदले लागल। किसान—मँजूर नेता पकड़ि के जेहल मे ठुँसाये लगलन। जमींदारन क मन बढ़ल आ जगह—जगह किसान जुलुम का जाँत में पीसल गइलन। सोरहो जिला में सयकड़ों किसान बिना बेजाइं क जमींदारन का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाठी–गोली क सिकार भइलन, मजदूर कारखानन से निकालल गइलन। उनकर मँजूरी आ मँहगाई क भाता कम भइल।

●●●

पलामू जिला का हर थानन में एक ओर ले कंगरेस क खाल ओढ़ि के मालदार आ जमींदारन क आदिमी, दूसरा ओर जाँगर चलावेवाली किसान–मँजूर जनता क आदिमी खड़ा रहलन। लड़ाई बड़ा कस रहे। बसवली किसान सभा कऽ गढ़ रहल। एइजा क लड़ाई त अउरी जोरदार रहे। एक ओर सोभा तिवारी आ दूसरा ओर बनवारी सिंह। वोट क तइयारी होखे लागलि।

तिवारी जी एडवाइजरी क सभापति रहि के पूरा हाथ मरले रहलन। दूसरे उनका ओर हाकिम, पुलिस भा मालदारन क जोर रहे। मोटर में भोंपा लगाइ के पचीसों आदिमी तिवारी जी का ओर ले वोट का परचार खातिर हर गाँव में घूमे लगलन। जइसे–जइसे दिन निगिचाये लागल दूनो ओर क दउर–धूप कड़ेर होत जात रहे। मेहनति आ फिकिर से तिवारी जी का ओठ पर फेंफरी परि जाय। जवने गाँव में जासु फजिहत होखे के परे। बूढ़–जवान त बिरही बानी बोलबे करसु लइका पाछा ले धूरि फेंकि के थपरी बजावँऽ स– ''इहे जाला चोरवा ... किरासन चोरवले बा...कपड़ा आ खरी बेचत रहल हऽ ...खूब चीनी खइले बा. ..बा...''

तिवारी जी बड़ा अपसोस में रहलन। कँगरेस का आड़ में केतना दिन ले सिकार होइत? देस क किसान–मँजूर एह किसिम का रँगल सियारन के चीन्हि चुकल रहलन। कँगरेसी लोग क हाल, हूबहू कंठी–माला लगाइ के तपसी बने वाला साधुन नियर हो गइल रहल। तिवारी जी तेल–चीनी का राज में छूटि के हाथ साफ कइले रहलन। एक बेर किसान–सभा का कुछ आदिमिन का तनदेही से उनकर कुछ चोरी पकड़ाइलि रहे। सइ बोरा खरी क परमिट काटि के दोबरी दाम पर एगो बयियाँ किहें बेंचले रहलन। जब जाँच होखे लागल आ इजहार–बयान सभ ठीक हो चलल त तिवारी जी, छकउड़ी मिसिर के लेइ के पटना पहुँचलन, बस मामिला क कफन–दफन हो गइल। देहाति–जवार का लोग से ई कुल्हि बाति छिपलि ना रहे।

दूसरा ओर किसान–सभा क सभ काम सचाई क रहे। बनवारी सिंह तेरहो सरकिल का राइ से खड़ा रहलन। कँगरेस नियर उनके ऊपर कऽ कमेटी जनता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का राइ का खिलाफ ओकरा कपार पर लदले ना रहलि। वोट का पनरह दिन पहिले थाना किसान–कमेटी क बिगुल बाजल। तेरहो सरकिल कमेटी क किसान–सेवक आ एक हजार लाल फउदि क जवान हाथ में हँसुवा–हथउरा वाला झंडा लिहले थाना का गाँव–गाँव में घूमे लगलन। 'किसान–सभा क कहनाम रहे कि वोट क कीमति जानले अधिका बा। हीत–गन, भाई–भयवद जे आवे किसान लोग रुपया–पइसा, धोती आ खायक से सवागत कइ के ओके बिदा करसु। वोट देबे के सवाल आगा अइला पर पूरा समुझि के डेग उठावे के चाहीं। जवन आदिमी जुलुम आ बिपति का आँचि में तपि के इसपात बनि गइल बा जाँच कइला पर पक्का साबित भइल बा, वोट ओही के मिले के चाही। वोट आ गरदनि दूनो के मोल बराबर बा। लालच भा बेकूफी में परि के जमींदार–मालदार आ उनका दलालन के वोट दियाइल त गरदनि कटि जाई। धान छव छँटइया का बाद बासमती का रूप में आगा आवे ला आ लोग गमकउवा भात खालन, छँटल आ आगि में तावल तोहन लोग का हाथ में बा। नाथ–पगहा अपना हाथ में राखऽ जा कि तनिको एने–ओने गइला पर खींचि के ठीक राह पर ले अइहऽ जा। खद्दर पहिरि के केतने बकुला भगत जेहल कऽ सनदि लिहले तोहन लोग के ठगे खातिर अइहन बाकी तोहन लोग का सजग होइ के कवनो काम करे के परी...

३

मंगर दिन आठ बजे अनगुतहाँ ले बसवली थाना क वोट परे लागल। तिवारी जी क बाकस तिरंगा रहे आ किसान सभा क लाल। बनवारी सिंह ठेंठ किसान रहलन, दिन भर जाँगर चलाइ के साँझि का बेरा घरे आवसु त साग–भात खाये के मिले। पढ़ल लिखत त जरूर रहलन बाकी मन में गुमान ना रहे। दूसरा ओर अइसन खाँटी जीव का उलटा तिवारी का तोन में गवरइया बियाइलि रहे। उनका रोब आ ताव से मजिहटर लोग थर–थर काँपे।

रोज सबेरे हजारों --हजार किसान हाथ में लाल झंडा लिहले 'किसान–राज कायम होखे', 'कमाये वाला खाई, एकरा खातिर जवन होखे', 'जमींदारी–परथा कऽ नास', 'पूंजीवाद क नास'...इहे नारा लगावत आ गीत गावत थाना पर पहुंचि के वोट देबे लगलन। एकइस बरिस ले ऊपर जेतना परल। केनियो ले मेहरारुन क झुंड आवत बा त केनियो के बूढ़न कऽ। किसान–सभा का पास त तिवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी नियर मोटर आ एक्का–बग्गी रहल ना, कि चढ़ाइ के लोग अइतन। एइजा त जाँगर चलावे वाला का आगा रोटी–कपड़ा क सवाल रहे, चूकि गइला पर धइपूत भीखि ना मिलित।

तिवारी जी गाँवन में जाइ के जेहल गइला कऽ सनदि देखावसु बाकी लोग उनका के समुझि चुकल रहलन। बहुत कम आदिमी सुने खातिर तइयार रहलन। आठवाँ दिने वोट परल खतम भइल आ दूनो फरीक का आगा बाकस बंद कइ के सील–मोहर दियाइल। वोट खतम भइला का बाद तिवारी जी अपना समधी छकउड़ी मिसिर किहें पहुँचलन। उनकरा सरकिल नंबर सात ७ कऽ डर रहे। ओइजा क मामिला ठीक हो गइला पर कुछ उमेदि हो सकति रहलि। आखिरकार नीचे–ऊपर कइला पर पाँच हजार गिनाइल आ काम बनावल गइल। मजिहटर, मिसिर जी का हाथ क कठपुतरी रहलन। सरकिल सात क बाकस तोरि के...

४

सोमार के वोट क बकसा सोभा तिवारी आ बनवारी सिंह दूनो फरीक का सामने खोलल गइल। पहिले तिवारी जी क गिनात रहे। एकरा बाद जब बनवारी सिंह क गिनाये लागल त सरकिल न० ७ क सनूखि टूटलि जनाइल बाकी जेकर लाठी ओकर भँइसि...

तिवारी जी क गुनल–मँथल मने में रहि गहल। जब बनवारी सिंह क कुल्हि वोट जोराइल त बयालिस हजार पांच सऽ पचपन भइल। बहुत दिन का बाद सोभा तिवारी क मुँह करिया हो गइल।

ठीके कहल बा कि सइ हतिया का बाद बाघ जूझे ला। तूम्मो फूटल आ धरमो नँसाइल। धन का घावे तिवारी जी घाही होइ के मंदिर का ओसारी में परल–परल आँखि क लोर पोंछत रहलन। जेहल कऽ सनदि बेकार हो गइलि। अब जनता सजग हो चुकलि रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबि कयलास

कयलास जी कलमि चलावे वाला विदमान रहलन। देहि त दुबर–पातर रहलि बाकी दिमाग तेज रहल। लिलार तेज से चमचमात रहे। ऊ अपना जिनिगी क एक चउथाई समय देस क सेवा आ कलमि चलावे में बिताइ चुकल रहलन। देस उनका खातिर मंदिर रहल आ जनता, भगवान। मन बचन आ करतब तीनो से एह भगवान क सेवा कइल उनका जिनिगी क निसाना रहे।

कयलास जी कविता आ कहानी लिखे में कमाल देखावसु। हिनुवी, रंगरेजी, बंगला, मराठी, गुजराती, उरदू भाखा क कवनो नीमन किताबि उनका बिना पढ़ले बाकी ना रहली स। उनकर सुभाव चंचल आ तेज का साथे–साथ कुछ खिसियाहो रहल। दुनियावी बेवहार का छल–कपट वाली बाति से उनकरा कवनो मतलब ना रहे।

कंचनपुर कबि जी का जिनिगी क आखाड़ा रहे। एइजा सरतह बरिस रहि के उनकरा गली का ठोकर तक से जान–पहचान हो गइलि रहल। सहरि का अंदर केहू अइसन ना रहल जेकरा कयलास जी का तेज दिमाग क गुनफति न मालूम होखे।

अलगू राय कंचनपुर में एगो छपखाना खोलले रहलन। छपखाना त बहुत छोट रहे, बाकी नियरा पास में दूसर ना रहला से काम पूरा मिलि जाय। अलगू राय बड़ा चलता–पुरजा जीव रहलन। ऊ बहुत दिन पहिलहीं ले अपना छपखाना से 'किसान' नाँव क हफ्तवारी अखबार निकालसु। अखबार में कवनो दम ना रहे, खाली लिलामी नोटिस आ इसतहार छपे। अलगू राय का कयलास जी से बहुत पहिलही क जान–पहचान रहे। जमाना क रोख बदलत देखि के राय जी आपन पँयतरा बदले क तइयारी करे लगलन। कयलास जी से सलाह–बाति तय कइ के 'किसान' अखबार के बढ़िया किसिम से निकाले क

RajGuru Math, Shivala, Varaṇasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तइयारी करे लगलन।

नया अच्छरि, तसबीरि, कागज, काम करेवाला आदिमी, छापेवाली नयी मसीन सभ कुछ जुटि गइल। कयलास जी अखबार क गलती—सही देखे आ राइ लिखेवाला सँवारक बनलन। 'किसान' क कलेवर बदलल आ बसंत—पंचिमी का दिने ओकर पहिला अंक निकलन। 'किसान' हर किसिम से सजल आ देखे में सुघर होखे। जइसे—जइसे समय बीतत गइल 'किसान' का सजावट आ सुघराई में काफी सुधार होखे लागल। किसान, मँजूर, विदारथी, वोकील, महँटर जेकरा हाथ में ओकर अंक पड़े ऊ आदर से पढ़े आ बिदमान सँवारक क बड़ाई करे।

अखबार बढ़िया त जरूर निकले लागल बाकी कयलास जी का बहुत मेहनति करे के परे। अलगू राय बेवपार रोजिगार वाली दुनियां क खेलाड़ गोइयां रहलन आ कयलास जी बिदमान। अखबार खातिर कुल्हि तूल भइल बाकी अलगू राय, कयलास जी के का दीहन, ई बाति ममहमे रहि गइलि। राय साहेब चोर बाजारी आ एह पार क मालि ओहपार हेलावे मे पचासों हजार नगद कमाइ के पूरा मालदार बनि गइल रहलन। उनका नजरि में कयलास जी क कीमति अइसने रहे। घर क मुरगी दालि बराबर। मीठ बाति से काम निकालल जाय।

एक ओर त अलगू राय क ई हालि रहे, दूसरा ओर कयलास जी छव महीना तक एकहू पइसा ना लिहलन। उनकरा कारन से बड़े—बड़े बिदमान आपन लेख, कविता आ कहानी 'किंसान' में छपे खातिर भेजसु। अलगू राय का छव महीना तक केहू बिदमान के मेहनताना ना देबे के परल। एह बीच में कई सइ गहँकी अखबार खातिर रुपया भेजलन। एहू में कयलास जी क लेहाज काम करत रहे।

कयलास जी का अखबार क समूचा काम अकेले करे के परे। एतना मेहनति पर बढ़िया खायक ना मिलला से उनकर देहि दुबराये लागलि। कयलास जी लेहाज का मारे अपने त अलगू राय से कुछ कहसु ना, बाकी उनकर संगी—साथी लोग मोंका पाइ के इसारा करसु। अलगू राय बाति—बाति के टाल—मटोल कइ देसु। बहुत बेर त कहसु कि अच्छा आमदनी त होखे देईं, देखल जाई।

मानसरोवर में कउवा आ हंस क इयारी रहलि। कयलास जी लेहाज करसु त अलगू राय सउदा। लछिमी आ सुरसती में लड़ाई भइलि। कयलास जी पेट पर पट्टी बान्हि के राय साहेब क पोंछि सुहुरावे वाला जीव ना रहलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिदमान पइसा खातिर मान–मरजाद क सउदा ना कइ सके। कलमि चलावे वाला भूखो मरी बाकी मालदार के दाँत चियारल ओकरा से ना सँपरी।

दुनियां मानसरोवर ठहरलि त कलमि चलावेवाला हंस। जल में डुबकी लगाइ के मोती चूनल ओकर काम ह। दुनियां फुलवारी ठहरलि त कलमि चलावेवाला भँवरा। किसिम–किसिम का फूलन क रस लेइ के समाज–सेवा खातिर मधु तइयार कइल ओकर काम ह। आज का कलमि चलवनिहार का आगा माहुर क कटोरा धइल बा। समाज क भलाई सोचि के ओकरा माहुर घोंटही के परी। एह से कलमि चलावे वाला बिदमान, दुनियां क कलयान करेवाला महादेव बा।

●●●

कयलास जी क झोंपड़ी अलगू राय का छापाखाना ले दक्खिन एक मील ओहटा, गंगा का किनारे देवबन में रहे। उनकर रोज क नियम रहे कि चारि बजे भिनसहरा उठि के एक घंटा में नहाइल–धोवल सभ काम ओरियावसु आ कलमि लेइके लेख, कविता, कहनी भा टीपनी लिखे बइठि जासु। पचीसों अखबार पढ़ि के देस–बिदेस का समाचारन के काटि–छांटि के 'किसान' खातिर ठीक करसु। साढ़े पाँच बजे टहरे निकलि जासु। साढ़े छव बजे लवटि के आवसु त दस बजे ले बनावल-खाइल, चउका–बरतन आ पढ़े–पढ़ावे क काम करे के परे। दस बजे छापाखाना में चलि जासु आ ओइजा पाँच बजे तक खटे के परे..... अलगू राय से नाता तोड़ि के कयलास जी अपना कुछ साथिन का समझ में नीमन कइलन कुछ साथिन का समझ में खराब। 'किसान' निकले का बहुत पहिलहीं ले कयलास जी आ मोहन का जान–पहचान हो गइल रहे। मोहन उनका जिनिगी क अधार रहलन। कयलास जी इनकरा के परान ले बेसी मानसु। मोहन अकिलि क तेज अपना काम में चउकस रहेवाला बिदारथी रहलन। कमल का भँवरा से आ पपीहा का सेवाती से जवन नाता बा ऊहे एह दूनों जीव में रहल।

मोहन समाज का फुलवारी क गुलाब रहलन। उनकर सोभा, सुघराई आ दिमाग क तेजी हजारों के मात करेवाला रहे। कयलास जी उनकरा पर खास तनदेही राखे लगलन। अब पूछहीं के का रहे, सोना में सुगंध हो गइल।

कयलास जी क बाप–महंतारी उनकरा होस होखे ले पहिलहीं सरग क राह नापि चुकल रहलन। घर से कवनो नाता ना रहल। 'हाथ में कलमि बगल में झोरा, चारो दिसि जागीरी मे'– वाला मउज रहे। लड़िकपन त बेल तर क मारल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बबूर तर–ठोकरे खात बीतल। जवानी शुरू भइलि त किसान–मँजूर का सेवा में गली–गली क धूरि फाँकत आ जेहल में बीते लागलि। दस बरिस तक ओह दुनियाँ में रमति कइला का बाद दूइ बरिस ले सभ काम छोड़ि के देवबन में बइठल रहलन। फूस का पलानी में बइठि के बारह घंटा कलमि चलावल उनकर रोजिगार रहे।

अलगू राय से नाता–तोड़ि के पलानी में बइठला का बाद, कयलास जी का खायक आ कपड़ा क बोझ मोहन का कपार पर रहे। कयलास जी से हर जिला क देस–सेवक भा अउरी–आदमिन का एतना जान–पहचान रहे कि रोज एक दू आदिमी आइले रहसु। इहो बोझ मोहने का ढोवे के परे।

●●●

मोहन, चइत में इनटरेस क सलाना इमतिहान देइ के अपना घरे चलि गइलन। उनकरा गइला का बाद कयलास जी का आगा रोटी–कपड़ा क कठिन सवाल भूत बनि के नांचे लागल। कबे सतुवा मिले त कबे भुजुना। कहियो ऊहो ना मवस्सर होखे। एहू हालति में कयलास जी केहू से मुँह ना खोललन। उनकर खेयाल रहल कि मोहन का इमतिहान क नतीजा निकले त पढ़े क सिलसिला बइठाइ के कवनो बड़ सहरि का छापाखाना में जाईं...

एक दिन के हाल हउवे कि तीनि साँझि उपास कइला का बाद कयलास जी साँझि का बेरा चिराग बारि के पलानि में बइठल कुछ लिखत रहलन। एही घरी दूइ गो पाहुन आ गइलन। पावलागी–चिरंजी त जरूर भइल बाकी कयलास जी क चेहरा उदास हो गइल। पास में एक पिड़ियाँ गूर छोड़ि के दूसर कुछ ना रहल। कबि जी झटपट उठि के दूनो पाहुन के पानी पियवलन।

पानी पियवला का बाद कयलास जी अपना कोठरी में जाइके सोचे लगलन कि 'अब कवन उपाइ करीं? बनियां क बीसों रुपया उधार परल बा। उन्हन का अब एकहू पइसा क उधार सउदा ना दीहन स।...

आखिर में, कयलासजी का पँजरे हाई इसकूल क एक जाना मँहटर रहत रहलन, उनकरा से दूइ रुपया उधार लेई के ऊ अतिथिन का खाये–पीये क उपाइ करे लगलन। दोकानि पर ले सतुवा–पिसान आ गोंइठा–मसाला आइल। मँकुनी बने लागलि। कयलास जी क खियाल रहे कि दूइ रुपया क समान बा, तीनों आदिमिन क खाइल हो जाई। बाकी उनका आसा पर पानी फीरि गइल आ आजुवो उपासे रहे के परल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

●●●

'मोहन', इनटरेस आ 'विसारद' दूनो इमतिहान साथ–हीं पास कइलन। इनटरेस पहिला दरजा में आ विसारद दूसरा दरजा में नतीजा निकलला का बाद ऊ आपन नाँव पटना कालेज में लिखवाइ के पढ़े लगलन। कयलास जी मोहन के चिट्ठी लीखि चुकल रहलन कि किताबिन क कुछ जरूरी बाति लिखि रहल बानी। आठ दिन में पूरा कइ के पटना आइबि।

कयलास जी अपना पलानी में बइठि के बारह घंटा कलमि चलावत रहलन। उनकर कविता, कहनी आ इतिहास क किताबि उनकरा के टहरे तक क मोंका ना देत रहली स। भूखों रहि के बारह घंटा कलमि चलावल सहज काम ना रहल। कहियो त सोलह घंटा लिखत रहि जासु। जब भूखि आ मेंहनति से कपार घूमे लागे आ आँखि बंद हो जाय, कलमि गीरि परे त लिखल बंद कइ के आराम करसु।

कयलास जी जब जनता क राह देखावेवाली किताबि लिखत रहलन त मालदार लोग उनके कइसे पूछित? आज का दुनियां में अमिरित नियर चीज उपजवलो पर जाँगर चलावे वाला लोग का भूखि आ बेमारी से लड़ही के परत बा। आजु त समाज क भलाई करे आ पुराना जमाना क सड़ल रीति–रेवाज बदलेवाला जीवन का माहुर घोंटि के तरुवारि का धार पर चले के बा। कयलास जी इहे समुझि के हँसी–खुसी से अपना जिनिगी क समय काटत रहलन।

●●●

जाड़ा क दिन, पढ़े-लिखे क पूरा मेहनति आ खाये क कमी कयलास जी के पटकि दिहलसि। गरीब कलमि चलवनिहार ओढ़ना का कमी से सरदी क सिकार होइ के बेमार परलन। दूइ–चारि दिन ले त उनकरा बेमारी क खबरि केहू ना जानि सकल। जब बेमारी बिगरे लागलि आ केहू सम्हारे वाला ना रहल त बाति सभ जानि गइल।

कयलास जी क संगी–साथी महँटर लोग, डाकदर, बयद लेइ के पहुँचलन आ दवाई होखे लागलि। दूइ जाना डाकदर त बेमारी क रोख बेकाबू होत देखि के जबाब दे दिहलन। कंचनपुर इसटेसन का बयद मुरली मनोहर दास क दवाई होति रहे।

कयलास जी अपना साथी अविनास ठाकुर के इसारा कइ के बतवलन कि 'मोहन से भेंट होइत...।' साँझि होत–होत बेमारी बिगड़ी गइलि आ कयलास जी बाई का झोंक में अक–बक करे लगलन। पाँच–पाँच मिलिट का बाद मुँह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से लोटा क लोटा कफ गिरे। बुझाय कि सबँसे देंहि कफे हो गइलि बा...।

●●●

कालेज में तार पावते मोहन का गस आ गइल। लइका दउरि के उठवलनि स। कुछ देर का बाद होस आइल, मिजाज कुछ ठंडा भइल त मोहन डेरा पर पहुँचि के कंचनपुर चले क तइयारी करे लगलन।

छव बजे साँझि के पटना जंक्सन से कंचनपुर आवेवाली इसपरेस गाड़ी मीलति रहे। मोहन—अनार—अंगूर आ कुछ नारंगी लेइके गाड़ी पकड़लन। गाड़ी साढ़े आठ बजे राति के कंचनपुर पहुँचलि। एक्का कइ के मोहन देवबन खातिर रवाना भइलन।

एइजा कयलास जी चउकी पर परल जिनिगी क आखिरी छन गिनत रहलन। बतास हो गइल रहे; ऊ अब केहू के चीन्हत ना रहलन। कबे मोहन, कबे कविता आ मरकस—लेनिन क नाँव क ढक धराइल रहे। ओने मोहन पलानी का पँजरा पहुँचि के टमटम से उतरत बाड़न आ एइजा कयलास जी क लासि खटिया ले नीचे उतरलि।

●●●

रेंड़ी—तेल क चिराग झुक—झुक बरत रहे। महँटर, बिदारथी आ टोल—परोस क लोग चारो ओर ले लासि के घेरि के बइठल रहलन। मोहन क एगो गोड़ मड़ई का सीढ़ी पर आ दूसर नीचे...। आगे बढ़ल बने न पाछे। उनकर मिजाज होस में ना रहे कि कुछ बोलसु भा करसु। उनकरा मन में रहि—रहि के इहे सोच सतावत रहे—'कयलास जी हमरा के सब कुछ कइलन। हम उनका के ना आँटि .. आखिर में सभ दुख बिसारि के जवन आगा आइल ओकरा के सम्हारल जरूरी रहे। खटिया—बिछावन मड़ई में ले बहरा निकालल गइल। बाँस कटाइल आ रंथी बने लागलि। बिछावन हटावल गइल त कयलास जी का तकिया का नीचे एगो पुरजी मीललि। पुरजी पढ़ल गइल त लिखल रहे— 'हमार दाह-किरिया क काम मोहन छोड़ि के दूसर केहू मति करी। मोहन तोहरा से आखिरी मोका पर भेंट ना हो सकल...। बकसा में कबिता, कहनी आ इतिहास कऽ तीनगो लिखल किताबि बाड़ी स। परयाग राज जाइ के 'किसान—छपखाना' वाला लोग का हाथे बेंचि दीहऽ। किताबि क आमदनी अपना रूस जाये का खरच आ अपना गाँव में किताब घर कायम करे खातिर रखिहऽ।''

द० कयलास

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छान-बीन आ बूझ-विचार

(क)

डॉ० उदयनारायण तिवारी जी अपने विद्वत्तापूर्ण अधिनिबन्ध 'भोजपुरी भाषा और साहित्य' में भोजपुरी गद्य की चर्चा करते हुए 'सुमन' जी—(दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती जी) की भोजपुरी गद्य-रचना और भाषा-शैली के सम्बन्ध में लिखते हैं—

श्री अवधविहारी 'सुमन'

आप शाहाबाद जिले के अन्तर्गत बक्सर के पास के निवासी हैं। आप हिन्दी के अच्छे कवि और लेखक हैं। श्री सुमन जी का सम्बन्ध बिहार की 'किसान-पार्टी' से है। इधर हाल में ही भोजपुरी में 'जेहल कऽ सनदि' नामक आपकी कहानियों का एक संग्रह प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में निम्नलिखित दस कहानियाँ हैं—(१) मलिकार, (२) आतमघात, (३) मौनीबाबा, (४) कतवारू-दादा, (५) किसान-भगवान, (६) चउर कऽ पूजा, (७) सनकी, (८) दफा ३०२, (९) जेहल कऽ सनदि और, (१०) कवि कयलास।

इन कहानियों की भाषा प्राञ्जल तथा भोजपुरी है। इनके द्वारा भोजपुरी जनता की ठसक, रोबदाब तथा राग-द्वेष आदि को, यह पहली बार अपनी वाणी का उचित परिधान मिला है।

सुमन की भाषा सरल तथा टकसाली भोजपुरी है। इसमें मुहावरों के उचित प्रयोग के अतिरिक्त पर्याप्त गति एवं शक्ति है। इधर अपने मित्र श्री फागूराय विशारद् के साथ सुमनजी बक्सर से 'कृषक' नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकालते हैं। यंह पत्र बिहार के प्रसिद्ध किसान नेता स्वर्गीय स्वामी सहजानन्द सरस्वती की यादगारी में प्रकाशित होता है। इसके सम्पादकीय लेख श्री 'सुमन' जी ही लिखते हैं। इसके वर्ष १, अंक १, ता० १३ जनवरी, सन् १९५१ के सम्पादकीय का एक अंश नीचे उद्धृत किंया जाता है। इससे भोजपुरी गद्य की शक्ति का सहज ही में अनुमान किया जा सकता है—

सरकारी दिमाग के देवाला

आज करीब दूइ-अढ़ाई महीना पहिले शाहाबाद जिला संयुक्त किसान सभा का ओर ले चेतावनी के एगो लमहर अपीलि निकालि के शाहाबाद का कलक्टर का २५ अक्टूबर का बयान के परदाफास कइल गइल रहे कि 'आरा में अकाल के हालति नँइखे।' एकरा उलटा किसान-सभा के कहनाम रहे कि जिला का नहरि-इलाका के सत्तरि फीसदी खेत मोवार हो गइलनि स। आरा जिला अकाल का मुँह में जा रहल बा। पहिले त केहू कान ना कइल लेकिन पीछे सभ लोग दबी जबान से एह किसिम क गोल-मटोल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात कहे शुरू कइल। असल कारन रहे कि साँच बाति कबले तोपाइति। अकाल डाँक-डाँक गोहरावे लागल। भूखमरी के राछछिनि सभ के लीले खातिर मुँह बवले दउरि पड़लि। किसान-सभा एकरा खातिर जगहि-जगहि सभा कइ के जनता के भूखमरी से बचावे के कोसिस कइल चाहति बा, त सरकार के इनरासन डोले लागत बा। सभा-जलूस के हुकूम नँइखे। कहे खातिर त नयका विधान में जेकरा के रामराज के बिधान कहल जात बा, १९वीं धारा का मोताबिक सभा-जलूस करे आ यूनियन सभा संगठन बनावे के जायज हक बा, लेकिन ई बाति सोरहो आना बनावटी बाटे। हाथी का दूइगो दाँत होखेला, एगो खायेवाला आ दूसर देखावेवाला।

(ख)

हिन्दी के संर्वमान्य साहित्यकार **डॉ० विवेकी राय** अपनी समीक्षा पुस्तक 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' में लिखते हैं—

ई त सर्वमान्य तथ्य बा कि भोजपुरी के पहिला कहानी संग्रह 'जेहल के सनदि' (१९४८) बा। एह आधार पर मोटा-मोटी रूप से कहि दीहल जाला कि भोजपुरी के पहिली कहानी 'जेहल कऽ सनदि' ह। बाकी ई कवनो जरूरी नँइखे कि शीर्षक वाली कहानिये संग्रह में पहिली कहानी होखो। हम बहुत उत्सुकता से एकरा बारे में खोज करे चललीं त हाथे लागलि देंवका खाइलि पोथी 'जेहल कऽ सनदि' आ ओहमें देखला से मालूम भइल कि ई शीर्षक वाली कहानी एह संग्रह का दस गो कहानिन में नौवाँ लम्मर पर बा। स्वामीजी से भेंट कइला पर ऊँहा का बतवलीं कि हमार पहिली कहानी उहे ह जवन पहिला लम्मर पर बाटे आ जवना के शीर्षक बा 'मलिकार'। एह से ई सिद्ध हो जात बा कि भोजपुरी के पहिली कहानी एही कहानी के कहल जा सकेला। अब आईं असली बाति पर आ देखल जाव का बाटे एह 'मलिकार' शीर्षक कहानी में?

देवकी आ सेवक दू भाई बाड़न, बड़का हथियानशीन जमींदार परिवार में। सेवक जी रईस, सरदार, सभ्य, सीधा आ सज्जन बाड़न। ओने देवकी जी अइसन धूर्त, घाघ, तिकड़मबाज आ दुष्ट बानीं कि भाई के रईसी-सरदारी में बझा के कुल्हि जमीनि, गहना, सोना, चानी, तरहथी के धन मलिकार बनि के अपना कब्जा में कइ के मरे की बेर उनके गुदरी देके टुटही पलानी में बगेद दीहलीं। कहानी पढ़ेवाला सोचत बा, कवनो ईश्वरीय न्याय होई आ सेवक दादा के दिन लौटी। बाकी दिन का लौटी, एक दिन ऊ जब सुखले मरि जात बाड़न त काम किरिया के बाद उनकर लइका रामअधार आ बंसरोपन मलिकार का पास जमीन के हिस्सा फरिआवे पहुँचत बाड़न। पाठक लोग का उम्मेदि होति बा, अब कवनो चमत्कार होई आ सत्य के विजय होई। बाकी कुल्हि टाँय-टाँय फिस। टका नियर जबाब दे देत बा, कइसन हिस्सा?

पंचायत बइठति बा। तमाम जवार के सरदार बटुरात बाड़न। कवनो हल ना। पंचपरमेश्वर फेल! मामला अदालत में जात बा तबो पाठक के आशा रहति बा कि दुष्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के दण्ड मिली। बाकी, बेकार! दूनों भाई मुकदिमा से अइसन टूटत बाड़न कि डीह छूटि जात बा। दूर कवनो गाँव में चाकरी कइके दिन गुजारे लागत बाड़न। अब लागत बा, दुष्ट का भीतर कवनो देवता के आदर्श जागी, बाकी ऊ कहां जागत बा? हालत ई भइल कि बड़का भाई खइला बिना मरि गइल। मरत-मरत का समय तक कुछ आशा रहति बा कि कतहीं से कवनो संयोग बइठी। बाकी सब खतम भइला का बाद अन्त में लेखक लिखत बा, रामअधार का आँखि का आगा अन्हार हो गइल कि अब का...। कहानी खतम। एह अन्हार में पाठक के लउके लागत बा दूनो भाई के बेसहारा परिवार, बिना बिआहल लइकी, बेवा या ऊपर से रावण राज! तमाम-तमाम तरह के सत्य के विजय, ईश्वरीय न्याय, पंचपरमेश्वर के ताकत, चमत्कार, संयोग, मानवता, आदर्श आ भाग्य के पल्टा वगैरह के भवन भरभरा के गिरि जात बा। कहानी पढ़ेवाला के हृदय हिल जात बा आ ऊ खुद अपना के ओह रामअधार का रूप में पावे लागत बा जेकरा आँख का आगा दुर्भेद्य अँधेरा बा। आशा आ विश्वास के कतहूँ तनिको प्रकाश रेखा नँइखे। हर तरह के भविष्य खत्म हो गइल बा। आगे लमहर कतार बा यातना के, पीड़ा के, अपमान के, टूटन के, मौत के। 'कतहीं कवनो मानवीय मूल्य ना रहि गइल, गाँव के सामाजिक आ पँचायत के न्याय खत्म हो गइल। सत्य नष्ट हो गइल, सज्जनता उखड़ि गइलि, इज्जति बेपानी हो गइलि, आदमी हिंसक जानवर हो गइल, समाज जंगल हो गइल, बेहयायी, नंगई आ क्रूर स्वार्थपरता नियर नया-नया जीवन मूल्य उभरि अइलन स, त अब ई कुल्हि स्थिति मिलि के यथार्थ के पूर्ण प्रतिष्ठा ना हो गइलि?' बहुत कठोर आ ओट करे वाला शुद्ध यथार्थ इहाँ बा। भोजपुरी का एह पहिली कहानी में ऊ प्रेमचन्द का 'कफन' शीर्षक कहानी का परम्परा वाला यथार्थ बा, एकदम तिलमिला देवे वाला। रामअधार का शब्द में केतना गहिरा व्यंग्य बा? पढ़े वाला सोचि सकेला, खूब मिलल राम जी के आधार? सचाई-ईमानदारी के फल? सन् १९४८ में लिखाइलि ई यथार्थवादी पहिली कहानी, अइसन जनात बा कि भावी भारत के जन्म कुंडली बनि गइलि बा। एही कहानी का अधार पर हम कहलीं हँ कि भोजपुरी में सबसे पहिले यथार्थ उतरि आइल बा।

अइसे त फुटकर रूप में प्रसंगवश सगरी के कुछ ना कुछ चर्चा पीछे हो चुकल बा बाकी विकास के श्रृंखला साफ-साफ झलकावे खातिर ओकरा बीच का कड़िन के जाँच-परताल, जरूरी जनात बा। एह रूप में सबसे पहिले हमरा 'जेहल कऽ सनदि' (१९४८) के उठावे के बा काहे कि इहे भोजपुरी कहानी के श्रीगणेश हवे। एही भोजपुरी कहानिन का नींव पर ओकर विशाल महल ठाढ़ होखे जात बा। हमके ई देखि के आश्चर्य होत बा कि एह नींव नियर पहिला संग्रह में तीनि गो नीचे वाली मुख्य लाइन बा आ तीनि में से एकहू बाद वाला भोजपुरी कहानी साहित्य में पूरा-पूरा रूप में प्रतिष्ठित ना हो पावलि—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) एको कहानी में आदर्शवाद नँइखे आ पूरा संग्रह यथार्थवाद का तीखा तेवर में पनपनात उतरल बा।

(२) सगरी कहानिन में भोजपुर अंचल के कृषि आ कृषक संस्कृति-खान-पान, विवाह-बरात, देवी-देवता, रोजी-रोजगार, गाँव, घंर नदी, टोला, ढोर, तीर्थ, पहाड़, भोजभात आदि बहुत धीरता का साथ उतरलि बा आ आंचलिकता के आरंभिक रस गंध भरल बा। ओकर विश्वासो बा आ अन्धविश्वासो बा।

(३) सगरी कहानिन में प्रचार-रहित साम्यवादी (आज का भाषा में जनवादी) रंग बा, शोषण का खिलाफ शोषित वर्ग के पक्षधरता बा। पूँजीवाद आ एकरा पायक साधू-संत, मंहन्थ, जमींदार कांग्रेसी नेता आ व्यापारिन-लोगन पर जमि के प्रहार भइल बा आ 'कमाये वाला खायेगा' का रंग के नीति के प्रतिष्ठित कइल गइलि बा। बिहार का ऐतिहासिक किसान आन्दोलन के भरपूर छाप कहानिन पर बा।

अब अपना निष्कर्ष के अउर साफ करे खातिर संक्षेप में कहानिन पर नजर दउरावल जाव। ओह पहिली 'मलिकार' शीर्षक कहानी का सामाजिक यथार्थ के चर्चा पहिले हो चुकल बा। जवना में आदर्श, सत्य, न्याय, पंचायत, मानवता आ ग्रामात्मा के खात्मा हो चुकल बा। कहानी घोर निराशा का अन्धकार में बूड़ि गइलि बा। अइसने घोर भग्नाशा दूसरकी 'आतमघात' में बा। गरीब बलिराम सब तरह से थाकि के, गरीबी से लड़त-लड़त उबिया के गाँव से शहर में भागत बा आ उहँवा शहर ओके लीलि घालत बा। सवाल पूरा व्यवस्था के उभरत बा जवना में गरीब पिस रहल बा। चाहे गाँव होखो चाहे शहर। बलिराम के अन्त गरीब के अन्त हो गइल बा, बहुत करुण अन्त। एह अन्त से विद्रोह के आगि धीमे-धीमे निकलति बा। साच पूछल जाव त 'ज़ेहल कऽ सनदि' के कथाकार सुमनजी अर्थात् दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती में मूल स्वर विद्रोहे बा। तीसरी कहानी 'मवनी बाबा' में साधुता का आड़ में भ्रष्टाचार फइलावे वाला बाबा लोगन के पर्दाफास भइल बा आ अइसना भ्रष्टाचार का शिकंजा में कसि के नष्ट होत गाँव का शील-सदाचार के पीड़ा के उभारल गइल बा। अइसही चउथी कहानी 'कतवारू दादा' में सामाजिक भ्रष्टाचार का खिलाफ त पाँचवीं कहानी 'किसान भगवान' में राजनीतिक भ्रष्टाचार का खिलाफ आवाज बुलन्द कइल गइल बा।

विमलानन्द सरस्वती के कतवारू दादा अपना लमहर जमींदारी आ धन-दौलत का बल पर बुढ़ौती में एगो किशोरी कन्या से शादी रचावत बाड़न। कहानी सपाट ढंग से चलति बा। पढ़वैया बुढ़वा का सनक पर तिलमिलात बा। समाज का सड़न पर क्षोभ होत बा आ अत्याचार का खिलाफ मन में क्रोध होत बा, कि अत्याचारी के सजाइ देईं? ओकरा पीठि पर पूँजीवादी व्यवस्था बा। तब सजाइ देवे खातिर एगो तेजस्वी कहानी लेखक आगे बढ़त बा आ सपाट कहानी अन्त में जाके झटकि जाति बा। अइसने झटका 'किसान भगवान' का अन्त में बा। बाकि ई कहानी त एगो खुलल विद्रोह बा। शब्द से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना कहानी आगि से लिखाइलि बा। सामन्त नियर अगड़धत्त जमींदार के जुल्म कथा के विस्तार दिहला का बाद ओही का भीतर से विद्रोह के आगि निकलति चित्रांकित भइलि बा। बिहार का किसान आन्दोलन के मार्मिक पृष्ठभूमि उभरि जाति बा, आ स्वामी सहजानन्द के भूमिका का साथे जनक्रांति के आह्वान सामने आ जात बा। परम्परित धर्म के खूब खिंचाई भइलि बा। धरम आ परलोक के अफीम कहल बा। पंडा-पुजारिन के पूंजीपतियन के एजेन्ट बनावल बा। अंग्रेजी राज आ जमींदारन के सम्बन्ध साफ-साफ सामने देखल गइल बा आ कुल्हि मिला के बहुत कलात्मक ढंग से एह कहानी में सफाई का साथ राजनीतिक यथार्थ के प्रतिष्ठित कइल गइल बा। सभसे चिहुँकावे वाला कहानी 'चउर के पूजा' बा जवना में एक समय'भ्रष्ट पापी समझल जाये वाला प्रेमी-प्रेमिका बाद में अकलू बाबा आ देवकाली सती के नाँव से पुजाये लागल बाड़न। कहानी पढ़ि के यशपाल के कहानी 'शिव पार्वती' याद परि जाई जवना में साम्यवादी दृष्टि से निष्कर्ष निकलत बा कि मंदिर में मूर्तिन का बहाने आदमी अपना वासना के पूजा करेला। सातवीं कहानी 'सनकी' में वैयक्तिक यथार्थ बा त आठवीं कहानी 'दफा ३०२' पूँजीवादी सभ्यता पर करारा तमाचा हो गइलि बा। कीड़ा नियर जिन्दगी बितावे वाला रामनाथ नोनिया गरीबी से ऊबि के अपना पतोहि आ नाती के अपने हाथे हत्या कइ देत बा! 'कफन' से अधिका कड़ुवाहट भरल एह कहानी का बीच से गुजरत प्रति क्षण पाठक के हृदय धड़कत रहत बा आ भीतर से हिला देवे वाली ई विद्रोह धर्मी कहानी एगो कठिन चुनौती हो जाति बा। नवीं कहानी, जवना का नाँव पर एह संग्रह के नाँव उजागर भइल बा, 'जेहल कऽ सनदि' में लेखक फेरू एगो नया कोण से राजनीतिक यथार्थ के उठवले बा। पहली बार ऊ कथा साहित्य में घोषित कइ रहल बा कि कांग्रेस सठिया गइलि। पूरी कहानी में किसान-सभा आ कांग्रेस के टकराहट रोमांचक ढंग से उभरल बा। आ साथे-साथे कांग्रेसी भ्रष्टाचार के जमि के भंडाफोड़ भइल बा। जिला बोर्ड का मेम्बरी का चुनाव में जब कांग्रेस के उम्मीदवार हारि गइल त ओकरा पर कथाकार अन्त में कहानी का चरम बिन्दु का रूप में व्यंग्य उछालत बा, 'ओकर जेहल के सनदि बेकार हो गइलि। अब जनता सजग हो गइलि बा।' अंतिम कहानी वैयक्तिक शोषण-पीड़न के मशाल नियर जरत दस्तावेज हो गइल बा। 'कवि-कयलास' शीर्षक कहानी एगो सतेज पत्रकार आ कर्मठ कार्यकर्त्ता का मौत के कहानी हो गइलि बा। ऊ कविता आ मार्क्स-लेनिन का साथे अपना समाचार-पत्र 'किसान' खातिर समर्पित बुद्धिजीवी जवान भूख से तड़प-तड़प के मरत चित्रांकित भइल बा। ओकर मौत आधुनिक बुद्धिजीवी का तेजस्विता के मौत हो गइलि बा। एह तरह से १० गो रोमांचक आ साफ-सुथरा रोचक शिल्प में लिखल ई भोजपुरी कहानी के संग्रह कइसन आग आ आँच ले ले आजुओ बेजोड़ बा। आश्चर्य बा कि अबहीं ले एह संग्रह का बारे में भोजपुरी संसार के सिर्फ एतने पता बा कि ई पहिला संग्रह ह आ एही से शायद ऊ अनुमान लगा लेत बा कि बहुत मामूली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घटनात्मक आ आदर्शवादी जइसन कुछ होई। गंभीरता से एह संग्रह का ओर अब तक ध्यान नँइखे गइल। जवना भाषा का कथा-साहित्य का नींव में अइसन युगीन गहराई बा. आ ऊ पूर्ण कलात्मक निखार का संगे जीवन से जुड़लि बा ऊ निश्चित रूप से बहुत महान बा। एह संग्रह में 'दूइ शबद' लिखत में डॉ० उदय नारायण तिवारी ठीके लिखलन कि आजु के कहानी पढ़े वाला लोग धरती का वस्तु के देखल चाहत बा आ अइसने चीज सुमनजी पेश कइले बाड़न। लेखको 'तनिक अरज' जइसन भूमिका में जनता का युग के दोहाई देत उतरत बा। किसान सभा आ बिहार का किसान आन्दोलन से सीधे जुड़ल रहला का वजह से ओकरा क्रांतिकारी शब्दन में सचाई बा, सैनिक मानसिकता के तेंजी-तुर्शी बा। एह-संग्रह के नया संस्करण होके भोजपुरी साहित्य का स्रष्टा आ प्रेमिन दूनो का हाथ में फेरु आवे के चाहीं। ई संकलन मजबूत, मानक आ सार्थक प्रकाश-स्तंभ नियर दूर-दूर तक ले भोजपुरी कहानी संसार के आजुओ राह देखावे में समर्थ बा। पता चलल ह कि लेखक के उपन्यास 'जिनिगी के टेढ़ राह' जवन सन् १९७३ में 'भोजपुरी कहानियाँ' में धारावाहिक रूप से छपल ऊ अब किताब रूप में प्रकाशित होखे जा रहल बा। एह उपन्यास में, इतिहास, राजनीति, यात्रा, किसान आन्दोलन, गाँधीवाद, पुरातत्व, अंग्रेजी राज, जेल-यात्रा, फरारी, जमींदार-युग, संधिकाल के मानसिकता, स्वतंत्रता संग्राम, आजाद हिन्द सेना आ सुभाषचन्द्र बोस के संघर्ष आदि सब कुछ ओही धीर-ललित आकर्षक जनवादी शिल्प में चित्रांकित बा जवना के परिचय 'जेहल कऽ सनदि' में मिलल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेहल कऽ सनदि

ई पोथी आदि सँ ल क अन्त घरि बाँचि गेल छी बड्डरुचिगर लागल। अपना जिला-जवार क हाल-चाल एना क लिखनाइ दुर्घट थीक। मुदा—श्री अवध विहारी सुमन क कलम बेश जोरगर छैन्हि। ओ बढ़िम्राँ जकाँ अपना ओतुक गप लिखलन्हि अछि। गामक गोलैसी, चौसज्झा झंझट, मुखिया क बइमानी, हीत-मीत क हेम-छेम, मालिक-गिरहस्थ, जन-बड़िजना, पंडा-पुरोहित एहि में सब छैके कि।

एहि गल्पसंग्रह के पढ़ि हम सरिपहुँ भोजपुरी आत्मा सँ परिचित भेल छी आशा अछि, सुमनजी प्रान्त क अधिक सँ अधिक शब्दचित्र अंकित करताह। इति

बैसाख सुदि एकादशी, १३५७ साल

नागार्जुन (यात्री)
४५९, दारागंज (प्रयाग)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती (जीवन-वृत्त)

(पूर्वाश्रम : अवधविहारी 'सुमन')

सन् १९२१ मकर संक्रांति के मंगराँव (बक्सर) में अवध बिहारी के जनम।

सन् १९३८ में शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर, बक्सर, रोहतास एवं कैमूर-भभुआं) जिला छात्र-संगठन के मंत्री मनोनीत

सन् १९३९ से राजनीतिक जीवन के आरंभ।

सन् १९३९ से कांग्रेस पार्टी के साथ किसान-आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी।

सन् १९३९ में बक्सर में हिन्दी साहित्य-परिषद की स्थापना।

सन् १९४०-४१ में गिरफ्तारी आ आरा, गया, भागलपुर, चाईबासा में जेल-जीवन।

सन् १९४२ से भूमिगत जीवन।

सन् १९४४ से लेखकीय जीवन की शुरूआत।

सन् १९४६ से साप्ताहिक हिन्दी 'कृषक' बक्सर के सम्पादन-प्रकाशन।

सन् १९४८ में 'जेहल कऽ सनदि' नामक भोजपुरी साहित्य कऽ प्रथम कहानी-संग्रह प्रकाशित।

सन् १९४८ में 'मकरंद' नामक हिन्दी काव्य संग्रह प्रकाशित।

सन् १९४८-४९ में राहुल जी आ नागार्जुन जी के साथ विविध पुस्तकन के सम्पादन-कार्य।

सन् १९५० भोजपुरी के प्रथम पत्र के रूप में 'कृषक' के भोजपुरी में प्रकाशन।

सन् १९५२ में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में राजपुर-रामगढ़ विधान-सभाई क्षेत्र से चुनाव-युद्ध।

सन् १९५३ में व्यापक भ्रमण।

सन् १९५४ में स्वामी सहजानन्द सरस्वती आश्रम आ विद्यालय की बक्सर में स्थापना एवं संचालन।

सन् १९५४ में संन्यास ग्रहण आ अवध बिहारी 'सुमन' के दंडी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के रूप में रूपान्तरण।

सन् १९५६ में स्वामी सहजानन्द सरस्वती स्मारक न्यास की स्थापना।

सन् १९६० में 'बउधायन' महाकाव्य का लेखनारंभ।

सन् १९६४ से राजगुरु मठ शिवाला घाट - वाराणसी में स्थायी रूप से निवास।

सन् १९६७ में 'शासक, सैनिक एवं धर्माचार्य ब्राह्मण' के प्रकाशन।

सन् १९७२ में भोजपुरी महाकाव्य 'बउधायन' का लेखनपूर्ण।

सन् १९८० 'बउधायन-बोध दीपक' के प्रकाशन।

सन् १९८०-८१ में उत्तरप्रदेश आ बिहार के विविध स्थान पर मानस यज्ञ के आयोजन आ सम्पादन।

सन् १९८२ में 'ब्राह्मण कौन' के प्रकाशन।

सन् १९८३ में भोजपुरी महाकाव्य 'बउधायन' का प्रकाशन।

अप्रकाशित ग्रन्थ : 'जिनिगी कऽ टेढ़ राह' (भोजपुरी उपन्यास), आत्मकथा, कहानी-संग्रह, 'देवा की दिव्य विभूति' (पूज्य दण्डिस्वामी सहजानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में गाथा-काव्य) एंवम विविध लोगन के पत्रन के संकलन।

सम्पर्क सूत्रः बी.३/१७५ राजगुरु मठ, शिवालाघाट, वाराणसी-२२१ ००१.
दूरभाष : (०५४२) ३१५०१९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.